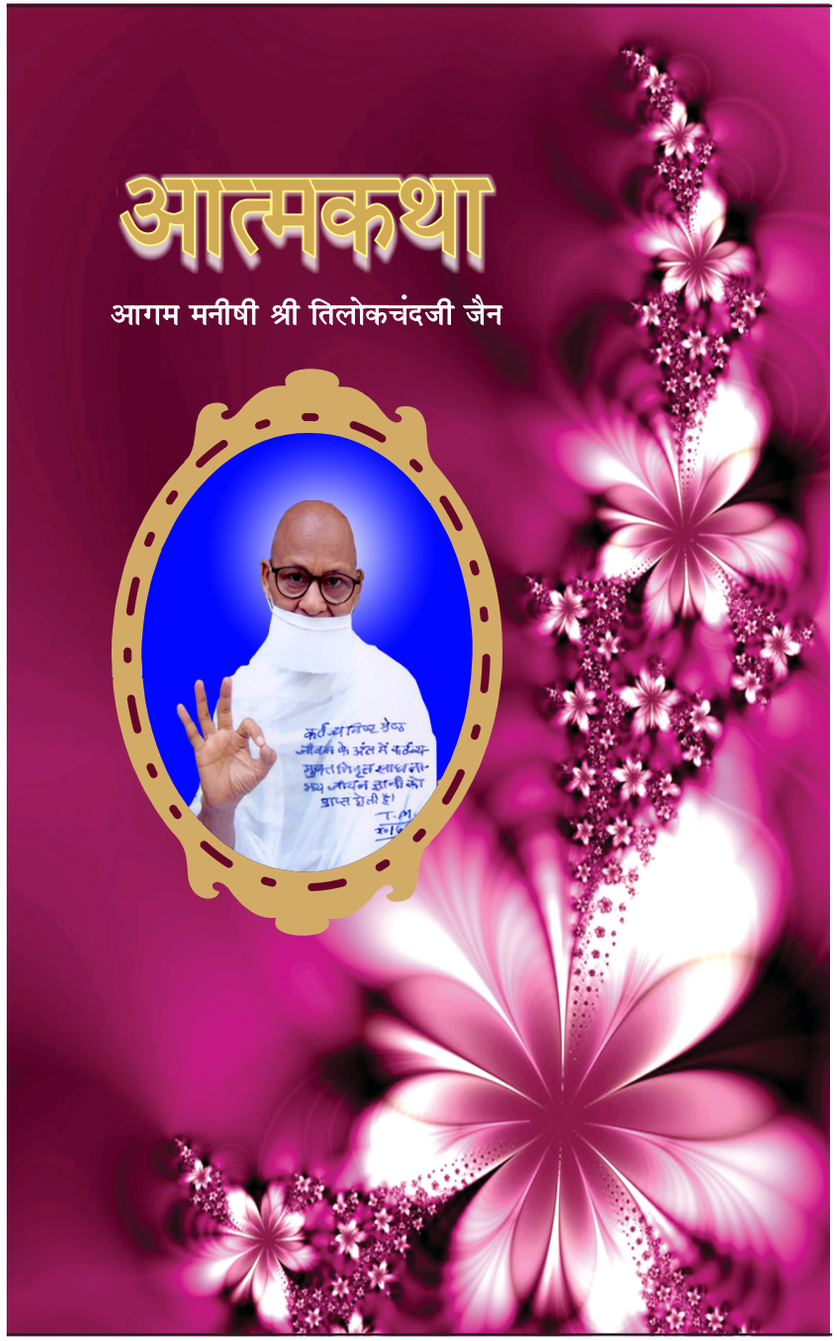

साहित्य सूचि

[इन्टरनेट पर उपलब्ध-जैन ई लाइब्रेरी तथा आगम मनीषी]]

हिन्दी साहित्य :-

१ से ३२	आगम सारांश हिंदी
३३ से ४०	(१) गुणस्थान स्वरूप (२) ध्यान स्वरूप (३) संवत्सरी विचारणा (४) जैनागम विरूद्ध मूर्तिपूजा (५) चौद नियम (६) १२ व्रत (७) सामायिक सूत्र सामान्य प्रश्नोत्तर युक्त (८) सामायिक प्रतिक्रमण के विशिष्ट प्रश्नोत्तर (९) हिन्दी में श्रमण प्रतिक्रमण (१०) श्रावक सविधि प्रतिक्रमण
५१ से ६०	जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर भाग-१ से १०
६१-६२	जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर विविध दो भागों में
६३-६४	आचारांग प्रश्नोत्तर दो भागों में
६५	ज्ञानगच्छ में प्रकाशगुढ का शासन.....
६६	स्था. मान्य जैनागम परिचय एवं साहित्य समीक्षा
६७ -७१	जैनागम नवनीत निबंधमाला भाग-१ से ५
७२	एकलविहार से मुक्ति एवं संवत्सरी विचारणा संवाद
७३	जैसी दे वैसी मिले, कुए की गुंजार
७४	आत्मकथा : पाठकों के पत्र : स्वरचित भजन
७५	हमारे समस्त साहित्य की विषयानुक्रमणिका

गुजराती साहित्य :-

१ से ९	जैनागम सुत्तागमे गुजराती लिपि में- ९ भागों में
१०	जैन श्रमणों की गोचरी, श्रावक के घर का विवेक
११	जैनागम ज्योतिष गणित एवं विज्ञान
१२ से १९	जैनागम नवनीत-मीठी मीठी लागे छे महावीरनी देशना(८)
२०-२९	जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर भाग-१ से १०
३०-३१	(१) १४ नियम, (२) १२ व्रत
३२	जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर विविध भाग-१
३३-३४	आचारांग प्रश्नोत्तर दो भागों में
३५-३९	जैनागम नवनीत निबंधमाला भाग-१ से ५
४०	स्था. मान्य जैनागम परिचय एवं साहित्य समीक्षा
४१	अनंत संसारनो मार्ग के मोक्षनो मार्ग

(योग-७५ + ४१ = ११६)

जय महावीर

जय गुढ समरथ

जय गुढ चम्पक

आगम मनीषी श्री त्रिलोकमुनिजी की

स्व लिखित

आत्म कथा

[पाठको के पत्र :: स्वरचित भजन]

आगम मनीषी

श्री त्रिलोकचन्द जी जैन

नया संपर्क सूत्र :

श्री त्रिलोकचन्द जी जैन

सी-२१, ईशिताटावर कोमर्स छ रास्ता, नवरंगपुरा,
शामवेद होस्पीटल के पीछे, स्टेडियम रोड,
अहमदाबाद - ३८० ००९ (गुजरात)

प्रकाशक : श्री जैनागम नवनीत प्रकाशन समिति, राजकोट

[पुष्पांक-११५]

सम्पादक : आगम मनीषी श्री त्रिलोकचन्दजी जैन

प्रकाशन समय : १५।७।२०१५

प्रथम आवृत्ति : प्रत : १०००

मूल्य : **20-00**

A/c No. : 18800100011422 Tilokchand Golchha
Bank Of Baroda, Rajkot (Raiya Road)

प्राप्तिस्थान : **श्री त्रिलोकचन्द जैन**
ओम सिद्धि मकान
६, वैशालीनगर, रैया रोड,
राजकोट-360 007 (गुजरात)
Mo. 98982 39961 / 98980 37996

EMAIL : **agammanishi@org**
www.agammnishi.org / jainelibrary.org

पत्र संपर्क : **श्री त्रिलोकचन्द जैन**
c/o नवरंगपुरा स्थानकवासी जैन उपाश्रय
स्वप्निल III मोल के पास, हनुमान मंदिर के सामने,
कोमर्स छ रस्ता, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद-380 009 (गुजरात)

कोम्प्युटराईज- हितेन गांधी
फोरकलर डिजाइन- हरीशभाई टीलवा,
सहयोग सहकार- डी.एल.रामानुज,हितेष चांदराणी,अमीन आजाद
प्रिन्टिंग प्रेस- किताबघर प्रिन्टरी
बाईन्डर- हबीबभाई, राजकोट

प्राक्कथन

मानव जीवन एक अमूल्य अवसर है इसका जो सदुपयोग से स्वागत करना जान लेता है, सीख लेता है उसके लिये वह भव वरदान सिद्ध हो जाता है । अनन्त भव में इस जीव ने जो नहीं पाया होता है, वह इस एक भव से उपार्जित कर कृतकृत्य हो जाता है । ऐसे मानव भव में जिनशासन का एवं तीर्थकरों की वाणी का मिलना और उसकी अटूट श्रद्धा मिलना जीव का परम सौभाग्य होता है । ऐसे सौभाग्यशाली और मानव भव का आत्मगुण विकास में सदुपयोग करने वाले अपने जीवन को भी सुशोभित सुवासित कर जाते हैं और जाते जाते पीछे भी आदर्श की सुवास छोडकर मुमुक्षु प्राणियों के लिये एक प्रेरणाश्रोत बन जाते हैं । इसी अच्छे हेतु से कुछ संपर्क में आने वाले स्वाध्याय अध्ययन अध्यापन में संबंधित होने वाले पुण्य-शाली आत्माओं की प्रेरणा से मुझे यह आत्मकथा लिखने का संकल्प उत्पन्न हुआ और धीरे-धीरे सुदृढ हुआ । उसके परिणाम स्वरूप ११४ प्रकाशनों के बाद जीवन के अंतिम चरण में, जहाँ संलेखना संथारा का समय निकट आ रहा है, यह उपक्रम चालु किया गया, जो यथावसर आज अहमदाबाद के स्टेशन के वातानुकूलित अतिथिगृह में ३ घंटे गाडी लेट होने से १-७-२०१५को पूर्ण किया गया ।

स्मृतिपट पर जो-जो घटित उत्थित हो सके, उन्हें तटस्थता पूर्वक उट्टंकित किये हैं । छद्मस्थ और कर्मों की विडंबना में पडे प्राणी के जीवन में कई उतार-चढाव होते हैं उनका कुछ अफसोस नहीं, यदि अंत सुधर जाता है तो सारा मामला सुधर जाता है । तो पाठकों से निवेदन है कि किसी के जीवन के उतार-चढावों में नहीं उलझते हुए उसकी अंतिम सारभूत सच्ची आराधकता को मद्देनजर रखकर अपना जीवन सुंदर एवं आराधनापूर्ण बने यही शिक्षा किसी के जीवन से ग्रहण करने की होती है और किसी की जीवनी पढने का सार भी यही है कि कर्मबंध से बचें और पुराने कर्मो को शुभ आदर्शों के अनुप्रेक्षण से तोडें । बस इतना ही - सुज्ञेषु किं बहुना ।

अनुक्रमणिका

निबंध	विषय	पृष्टांक
१	सांसारिक अध्ययन परिसमाप्ति	९
२	ग्रीष्मकाल अवकास	१०
३	नौकरी प्रारंभ	११
४	धार्मिक ढचि विकास	११
५	ट्रेनिंग- दिल्ली, कानपुर	१२
६	दीक्षा के भाव और प्रतिकार	१३
७	बीकानेर में धार्मिक विशिष्ठ अध्ययन	१४
८	शारीरिक कार्यक्रम, संतदर्शन	१९
९	दीक्षाकी आज्ञा एवं संयम प्रारंभ	२०
१०	विशेष स्मरणीय प्रसंग	२१
११	प्राथमिक चौमासे से छट्ठे चोमासे तक	२२
१२	छट्ठे चौमासे बाद समर्थ गुढ के अंतिम दर्शन	२८
१३	समर्थ गुढ के हस्तपत्र	२९
१४	समर्थगुढ स्वप्न में	३०
१५	खीचन स्पर्शना पहली बार	३१
१६	सातवाँ चातुर्मास जोधपुर से खीचन	३२
१७	एकलविहार का बीजारोपण	३३
१८	एकलविहार विचार पुष्टि	३४,३७
१९	आठवाँ चातुर्मास - पायरिया	३५
२०	पाली में पायरिया निवारण	३६
२१	बारहवाँ चोमासा रायपुर छत्तीसगढ	३८
२२	छत्तीसगढ से वापसी	४२
२३	बेतुल का प्रसंग	४२
२४	प्रकाशमुनिजी एवं तपस्वीराज का संघर्ष	४३
२५	प्रकाशमुनि का गच्छ (संभोग) त्याग	४४

२६	धीरजमुनि की दीक्षा	४४
२७	पारसमुनि की दीक्षा	४४
२८	बसंतीमुनि-लक्ष्मीमुनि	४५
२९	मेरा विहार प्रकाशमुनिजी के पास	४६
३०	अनैतिक निर्णय विचारणा	४८
३१	प्रकाशमुनिजी का वापिस गच्छ प्रवेश	४९
३२	मेरा गच्छ से इस्तीफा	४९
३३	१९वाँ चार्तुमास जयंतिमुनि हेतु जोधपुर	५१
३४	एकलविहार प्रारंभ	५२
३५	२०वाँ चार्तुमास अहमदाबाद : ढपमुनिजी का मिलन	५७,६०
३६	कन्हैयालालजी म.सा. के साथ आठ वर्ष	६०
३७	चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग सहयोग, छेदसूत्र लेखन	६०
३८	सारांश लेखन, प्रकाशन पाँच वर्ष में	६१
३९	पाँच वर्ष गौतममुनि का साथ	६१
४०	विशिष्ट घटनाएँ	६२
४१	अध्यापन योजना के दो वर्ष कच्छ में	६२,६७
४२	१९९७ से राजकोट में	६८
४३	गुढप्राण आगम विवेचन प्रकाशन	६८
४४	प्रश्नोत्तर भाग - १० प्रकाशन	६९
४५	सुतागमे गुजराती लिपि में ९ भाग	६९
४६	ज्ञानगच्छ से पत्राचार	७०
४७	ज्ञानगच्छ संबंधी पुस्तक प्रकाशन एवं अस्वस्थता	७१,७२
४८	श्रावक जीवन तथा अध्यापन	७३,७५
४९	जैन आगम परिचय हिन्दी, गुजराती प्रकाशन	७६
५०	निबंधमाला भाग-५ हिन्दी, गुजराती प्रकाशन	७६
५१	आत्मकथा सार	७९
५२	पाठकों के पत्र	८३
५३	स्वरचित स्तवन	११७

दीक्षा के ४४ चार्तुमास

इश्वी सन् १९६७ से चार्तुमास प्रारंभ- (१) पाली (२) इन्दौर (३) पाली (४) गढसिवाना (५) जयपुर (६) पाली (७) खीचन (८) मंदसौर (९) नाथद्वारा (१०) जोधपुर (११) बालोतरा (१२) रायपुर (छ.ग.) (१३) आगर (१४) जोधपुर (१५) महामंदिर (१६) जोधपुर (१७) ब्यावर (१८) बालोतरा (१९) जोधपुर । **ये १९ चार्तुमास गच्छवास के सन् १९८५ तक ।**

एकल विहार २५ वर्ष : (२०) अहमदाबाद(शाहीबाग) (२१) माउन्ट आबु (२२) सिरोही (२३) माउन्ट आबु । इश्वी सन् १९८७ से १९९३ तक(माउन्ट आबु से मदनगंज चार्तुमास तक सात वर्ष) **कन्हैयालालजी म.सा. के आगम अनुयोग कार्य में सहयोग ।**(२४) मसूदा (२५) खेडब्रह्मा (२६) माउन्ट आबु (२७) मदनगंज (२८) माणसा । **ये पाँच साल गौतममुनिजी का साथ रहा ।**

अध्यापन प्रावधान : (२९) प्रागपर(कच्छ) (३०) सुरेन्द्रनगर **इश्वी सन् १९९७ से-** (३१-३५) राजकोट(रोयल पार्क) (३६-४४) राजकोट(वैशालीनगर) **इश्वी सन् २०११ तक**

१२ जुलाई २०११ से श्रावक जीवन : दो महिने सूरत, दस महिने राजनांदगाँव । २९ जुलाई २०१२ से जुलाई २०१५ तक राजकोट(वैशालीनगर) । अगस्त २०१५ से जनवरी २०१७ तक अहमदाबाद(नवरंगपुरा)। फरवरी २०१७ में दीक्षा-संथारा ।

आत्म-कथा : जीवन दर्शन

बारह वर्ष पूर्ण कर तेरहवें वर्ष में प्रवेश के समय तक खीचन गांव में आठवीं कक्षा पास की । तब आगे की कक्षा खीचन में नहीं होने से पिताजी ने पढने के लिये रायपुर मेरे वडील मामा सेंसमलजी के पास भेजा । एक साल वहीं रहकर गवर्मेंट स्कूल में नवमी कक्षा का अध्ययन किया । वहाँ चचेरे वडील बंधु गुमानमलजी के साथ स्कूल में एवं रात्रि में कर्मठ व्यवसायी वडील पैत्रिक भ्राता श्री पुखराजजी गोलेछा की श्रीचंद-गौतमचन्द की दुकान में रहता था । पूरे वर्ष वहाँ निवास करने वाले अन्य मामा पुखराजजी बाफना, मासाजी समीरमलजी गोलेछा आदि अनेक महानुभावों का सहयोग रहा । कर्म संयोग से साल में दो बडे टाइफाइड हो जाने से स्कूल में दो महिना नहीं जा सकने से अनुपस्थिति के कारण वह वर्ष असफल गया। फिर स्थान परिवर्तन कर दुर्ग में बडे पिताजी श्री कंवरलालजी चंपालालजी गुलेछा के घर रह कर दो साल नवमी-दसमी कक्षा का अध्ययन किया । वहाँ भी रायपुर के भाई गुमानमलजी के समान कंवरलालजी के लघुपुत्र श्री अमृतलालजी का मुझे स्कूल घर में पूरा साथ रहा । श्री गुमानमलजी एवं अमृतलालजी दोनों मेरे से १-२ वर्ष और एक क्लास आगे थे ।

पंद्रह वर्ष पूर्ण होकर सोलहवें वर्ष के अप्रेल मास तक परीक्षा पूर्ण होकर में खीचन गाँव ग्रीष्मकाल अवकाश बिताने आया। रायपुर में मुझे कोमर्स विषय मिला था प्रयत्न करने पर गणित नहीं मिला था । दुर्ग में सहज मेथामेटिक फिजिक्स केमेस्ट्री विषय मिल गया था । मैं होशियार अध्ययनशील नीतिनिष्ठ सैद्धांतिक पिता का प्रथम पुत्र था । मेरे पिताजी स्कूल के गणित वाणिज्य एवं संस्कृत के अध्यापक थे । मेरे भी इस विषयों में प्रायः ९० या १०० प्रतिसत नंबर आते थे । मुझे भजन गायन दोहे सवैये कंठस्थ करने का भी शोख था । अध्यापक कोई भी पर्व या विषय पर भाषण देकर

निबंध लिखने का कहते थे तब भी में सुनते सुनते उनका भाषण प्रायः लिख(रफ में)सकता था और दूसरे दिन फेयर लिखकर ले आता था । एक बार कक्षा ६ से ११ तक के विद्यार्थियों का वार्षिक समारोह था । उसमें अंत्याक्षरी संगीत प्रतियोगिता रखी गई, जिसमें ४० विद्यार्थी लिये गये । वहाँ वह प्रतियोगिता करीब ५० मिनट चली जिसमें मेरा नंबर प्रथम रहा था ।

खीचन जाने के बाद मैं पूर्णचन्द्रजी के चाचा मदनराजजी का घर हमारी गली में पडोस में था और उनके घर के सामने स्थानक था। मदनजी का घर फेसिलिटि वाला था वे भी संपन्न और शोखीन थे । पतंग उडाना, तास खेलता आदि १०-२० लडके उनके घर पर आते जाते थे । मैं भी वहां रात को ११-१२ बजे तक जमा रहने लगा। अधिकतम घरों में लोग ७-८ बजे सो जाते थे । गाँव में लाइट, नल की सुविधा भी नहीं थी । मेरी प्रवृति से माता पिता घर वालो को परेशानी महशूश होने लगी । डांट डपट बहसें और दंडनीति भी चालु हो गई । मार-पीट की आदत तो माता पिता दोनों मे बहुत थी गालीगलोच भी ग्रामीणता में आम था । आखिर ज्यादा आग्रह करने पर मैं स्थानक में प्रतिक्रमण करने जाने लगा । मदनजी के घर पर मर्यादित जाना चालू रखा था ।

संसार ढचि में परिवर्तन :- जब में आठवीं कक्षा पास करके गया था। उसके पूर्व भी मदनजी के घरमें जाना-आना मोज सोख खाना-पीना सब अच्छा मिलता था । मदनजी की माँ आदि सभी उदार थे । सभी बच्चों को पूरे घर वाले प्यार से देखते थे । घर में भी सभी का परस्पर प्रेम अच्छा था किंतु अब में क्या देखता था कि मदनजी की शादी हो चुकी थी । घर का वातावरण बदल चुका था । प्रेम, वेमनस्य मे बदल चुका था । माँ चक्षुदर्शन के अभाव वाली थी और सासु बहू के जमता नहीं था जिससे घर का वास्तविक आनंद फीका पड चुका था । वह देख-देखकर मन ही मन मेरा चिंतन पलटने लगा- अरे शादी और बर्बादी स्पष्ट है अपने को जीवन में कभी शादी नहीं करना ऐसे ही गृहस्थ जीवन में माता पिता की सेवा करना । मदनजी के पिताजी मोजुद थे नहीं,

माताजी दु:खी दिखती थी । मेरा स्थानक में जाना चालु था । इधर पिताजी ने फिजूल घूमना छुडा कर खादी भंडार में ५०/- प्रतिमास की **नौकरी आठ घंटा की लगा दी** (मेरा सोलहवाँ वर्ष चल रहा था मेरे से छोटे ५-६ भाई बहन थे । मेरे से एक बडी बहन थी उसकी शादी में मैं तीसरी-चौथी कक्षा में पढता था ।

खादी भंडार रामलालजी गोलेच्छा के घर के पास था । उसका छोटा भाई धर्मात्मा-ज्ञानी खादी भंडार में नोकरी करता था हम दोनों एक ही विभाग मे हो गये । अब मेरी उनसे दोस्ती संगत और स्थानक में प्रतिक्रमण में २-३ सामायिक होने लगी । वहां श्री उत्तममुनिजी के पिताजी रोज आते थे और अच्छे-अच्छे भजन धन्ना-शालीभद्र, एवंता, गजसुकुमाल, लावणीयें वैराग्य से ओतप्रोत एवं जोशीले रागरागिणी से युक्त कंठ से चलते थे । हमारी सामायिकें बढने लगी । नौकरी चालु रही । दुर्ग आगे पढाई करने जाना केन्शल रहा । उसी सोलहवें वर्ष के अक्टूम्बर मास तक तो **मेरी दीक्षा लेने की भावना प्रबल बनने लगी ।** ज्ञान ध्यान एवं नौकरी का समय बढते गया । खादीभंडार वालों ने योग्यता देखकर मुझे दिल्ली और कानपुर में ट्रेनिंग के लिये ५ महिने के लिये भेजा । वहाँ भी मेरी सामायिक, कंदमूल त्याग आदि नियमित चालु रहे । दिसंबर जनवरी तक कानपुर के मल्हावा गाँव में प्रोडक्शन की ट्रेनिंग में अम्बर चरखा कातने से लेकर कपडा बुनना रंगना घडी करना तक के कार्य शिखाये गये । मेरे साथ उस ट्रेनिंग में ५१ ब्राह्मण विद्यार्थी थे में एक जैन था। लडके मेरे से खुश भी रहते, मजाक भी करते और कोई कभी चिढाते व्यंग करते । सबको मालुम पड गया कि यह जैन साधु बनेगा ।

वहाँ भोजन के लिये मेस की व्यवस्था रखी थी । खाने में सदा सुबह आलु और मूंग की दाल और रोटी होती थी । शाम का खाना रात में होता था । मैं कंदमूल नहीं खाता था अत: दाल से रोटी पर घी अपना लगाकर खाता था । शाम का खाना मेरा बंद ही रहा था ।

वहाँ से हम ५२ विद्यार्थी दिल्ली सेल्समेन की ट्रेनिंग के लिये पहुँचे । गोल बाजार के खादी ग्रामोद्योग भवन में हमारा तीन महीने का अभ्यास था । वहाँ सेल्समेन के अलग-अलग लगभग ४०-५० काउन्टर

थे। तीन महीने में सभी काउन्टरों पर हमारी ट्रेनिंग शिक्षण था । ठहरने रहने का स्थान हमे वहाँ से ढाई-तीन कि.मी. दूर मिला था। रोजाना पैदल चलकर १० बजे या साडे दस बजे पहुँचने का था। ३-४ बडे बडे चौराहे रस्ते में पार करने पडते थे । यों वह कार्यकाल हम सभी ५२ही विद्यार्थियों ने हिलमिल कर हंसीखुशी पूर्ण किया । रविवार को छुट्टी रहती थी क्यों कि खादी भवन बंद रहता था ।

दिल्लीका जीवन :- सर्व प्रथम तो हम सभी विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता से एक किलोमीटर की होटल- लोज आदि में व्यवस्था जमाली । मकान में एक-एक कमरे में चार-चार विद्यार्थियों के बिस्तर १ फुट के अंतर से लगे थे । अपने सिरहाने ही अपनी पेटी में सामान रखना था । कमरों के बाहर घूमने फिरने आने जाने शौचगृह आदि की कौमन व्यवस्था थी । कमरे १३-१३ फुट की साइज के थे ।

मैंने अपने कमरे के विद्यार्थीओं को समझा दिया था कि मेरी सीट में, मैं सुबह एक सामायिक करूँ तब तक पानी के छींटे नहीं उछालना और मेरी सीमा में प्रवेश संघटा नहीं करना, वह बराबर चलता रहा । कुल ५ महीनों की ट्रेनिंग में किसी की किसी पर मास्टरी बदमासी लडाई बोलचाल कभी हुआ हो एसा याद नहीं । खाने के लिये जहाँ हम लोगों ने अलग अलग व्यवस्था करी थी वहाँ आगे होटल में अंडे और पीछे हमारी लोज । २-३ दिन में ही इस मामले का पता पड गया । जिसको जो मन भाया वही निर्णय किया किंतु मेरा अकेले का वर्तन सबसे भिन्न था । सिघडी, कोयले, तवा, कडायला, चकलोटा, बेलन, चींपिया, आटा, नमक, शक्कर, थाली, घी लाया । सामयिक के बाद दूध-चाय सीरा फिर शारीरिक कार्य से निवृत्ति फिर १०-१२ उत्कृष्ट १४ रोटी बेल कर सेक कर तैयार करके ९-९.३० बजे प्राय: सभी साथ में निकलते । लंच के समय आधा घंटा मैं एक दूध दही की बडी दुकान से मिट्टी के चौडी परात में जमाया दही पाव आधा सेर लेकर उत्कृष्ट १४ रोटी दही से खा लेता । शाम को भोजन की आवश्यकता नहीं थी । जरूरी लगे तो दूध फ्रुट से चलाता था । हमें वहाँ हाथ खर्च का शिबिरकाल में ९०/- मासिक मिलता था अपने घर गाँव की तनखा वहाँ चालु थी जो पिताजी को मिल जाती थी । वहाँ रविवार को एक

रूपये का बस का टिकट लेकर कोई भी सीटी बसमें बैठ कर कहीं भी घूम सकते थे । सुबह ८ बजे से रात्रि आठ बजे तक । शीट रिजर्वेशन नहीं जहाँ जिसमें जगह मिले वही अपनी । यों मैंने दिल्ली के प्राय:सभी स्थान घूम घूम कर देखे । चीजे वहाँ बाजार मे बहुत सस्ती मिलती । मेरे पिताजी स्टेशनरी घर में रखकर बिक्री करते थे दिल्ली में मैंने पेन के निब अच्छे अच्छे या सामान्य पेन्सिले आदि १-२ रूपये में किलो आधाकिलो आदि रूप मे मिलते थे । मैं अपनी बुद्धि अनुसार कई स्टेशनरी सामान खरीद कर लाया । भाव सुनकर पिताजी खुश हो गये । मेरे गाँव से जाने वाले हम दो विद्यार्थी ही थे, बाकी अन्यान्य प्रांतों शहरों के थे ।

दिल्ली से आने के बाद अप्रेल, मई, जून,जुलाई धर्मध्यान ज्ञानध्यान और नौकरी चलती रही । गाँव मे बातें फैलती गई त्रिलोक दीक्षा लेगा, घर वाले भी जानने लगे । चौमासा खीचन में महासतीजी का था । मैं नियमित व्याख्यान में सामायिक करके व्याख्यानोपरांत खाना खाकर नौकरी जाता । घर वाले बातें सुनी अनसुनी करते या मजाक में डाल देते ।

चातुर्मास में पर्युषण निकट आये मैंने पूज्य श्रमणश्रेष्ठ के गंगाशहर चौमासे में जाकर पर्युषण करने के भाव बनाये । विशेष जिद्दाजिद्द और परीषह आदि के उपरांत सशर्त जाने को मिला । १० दिन में वापिस आना सशर्त जरूरी था । बचपना एवं वैराग्य वश मैंने नहीं आने का संकल्प कर लिया तो श्रमण श्रेष्ठ पूज्य समरथमलजी म.सा.ने विवेक दिया कि घरवालों के साथ ऐसा धोखा परेशानी नहीं करना, उनका चित प्रसन्न रखकर आज्ञा लेने पर ही हम दीक्षा दे सकते, उन्हें हैरान नहीं करना । उन्होंने हमारी ३४ वर्ष अच्छी तरह सेवा की है, आपके माता पिता अच्छे है, उन्हें दु:ख नहीं देना । बस गुढ आज्ञा मेरे लिये लक्ष्मण रेखा बन गई । घर जाते ही वैराग्य बदलने पटकने हेतु मुंम्बई रतनलाल समरथमल की आढत की पेढी पर रखा गया । पेढी में जो समरथमल नाम था वह मेरे मासाजी के पिताजी का था और मासाजी ही मुझे वहाँ लाये।उस पेढी में रतनलाल मतलब उत्तममुनिजी के पूर्वज पिता भाई दादा वगेरे । वहाँ मुझे उत्तम मुनिजी के पिताजी चंपालालजी का संयोग मिल गया । धर्मध्यान सामायिक प्रतिक्रमण दुकान में एक तरफ हमारा हो जाता । दुकान में ही सोना रहना और रसोईयों के हाथ का खाना । कुछ लोग वहाँ

भी दीक्षा के विरोधी थे इसलिये कुछ तकलीफे खाने आदि त्याग आदि में चली । वहाँ मेरा कामकाज- कोई भी बारह गाँव के कपडा मेवा खरीदने आवे उनके साथ दुकानें बताने जाना, माल ओर्डर हो जाने पर माल हमारे गोदाम में पेकिंग होने चला जाता था । मैं व्यापारी को वापिस दुकान पर लेकर आता था । बेंक में चेक भरना, आदि काम या किसी का पैसा लेनदेन सूचना आदि जो काम मिलता वह करता । संयोगवश जयंतिभाई मस्करिया (महात्मामुनि) की दुकान भी हमारे से आधा कि.मी. करीब में थी । मैं वहाँ भी जाता आता परिचय आदि करता रहता । चार महीने बाद उस संयोग की पूर्णता हुई और मैं खीचन आ गया । थोडे दिन जोधपुर सिटी पुलिस सुधर्म प्रचार मंडलमें नौकरी का अभ्यास किया । धींगडमलजी तो चाहते ही थे परंतु वहाँ नहीं जमा (कारण याद नहीं हैं) फिर मेरा नंबर बीकानेर अगरचन्द भेरोदान सेठिया जैन ग्रंथालय में लगा । तब शेठ जेठमलजी सेठिया और उनका परिवार वहाँ स्थानक और ग्रंथालय के सामने रहता था । यह सारी मिल्कत भी उनकी सेठियाजी के पिताजी की थी । वहाँ स्थानक में जवाहिराचार्य के संत ठाणापति उनकी सेवा में महात्माजी श्री घेवरचन्दजी म.सा. थे जो मेरे पिताजी के पांच भाईयों में तीसरे भाई थे सपरिवार तीन ही जनों ने दीक्षा ले ली थी । अतः अब मेरी नौंकरी वहां स्थाई और अंतिम हो गई। मेरा सत्रहवाँ वर्ष पूर्ण हो गया था । अठारवें वर्ष के जनवरी फरवरी मास में मेरी वहाँ नौकरी प्रारंभ हुई जो बीसवें वर्ष के नवंम्बर तक करीब दो वर्ष १० महिने चली ।

बीकानेर का जीवन :- ग्रंथालय के मुख्य संचालक श्री जेठमलजी सेठिया थे । मेनेजर श्री रोशनलालजी चपलोत उदयपुर के थे जो अपने परिवार सहित ग्रंथालय के पास की बिल्डिंग जो छात्रावास के रूप में थी उसमें रहते थे । पं. श्यामलालजी ओझा व्याकरण संस्कृत के काशी के पंडित थे । जो ग्रंथालय से १००-२०० कदम दूर किसी मकान में सपरिवार रहते थे। रांगडी मोहल्ला जो करीब फर्लांग दो फर्लांग दूर था वहाँ समता संघ के प्रमुख सुंदरलालजी तांतेड थे उनके पिताजी भी जीवित थे । वहीं श्रमणोपासक मासिकपत्र का कार्यालय था जहाँ सवेतनिक पंडित देवकुमारजी भाषा एवं आगमों के अनुभवी एवं प्रूफ

देखने के कार्य के अभ्यासी थे । जिन्होंने कुछ वर्ष बाद ब्यावर की आगम प्रकाशन समिति में सवेतनिक सेवा दी थी । जहाँ मधुकरमुनिजी के नेतृत्व की आगम विवेचन की आगम बतीसी का कामचल रहा था । जो पंडित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल की मुख्य देखरेख में चल रहा था। भारिल्लजी स्थानकवासी परंपरा के बहुत प्राचीन विद्वान अनुभवी गंभीर श्रावक भी थे। पाथर्डी (महाराष्ट्र) यह भारतभर का श्रेष्ठ परीक्षा बोर्ड था । वहाँ भी उन्होंने बहुत वर्ष तक परीक्षा का सर्वांगीय कार्य संभाला था । उस संस्था का नाम **त्रिलोक रत्न पाथर्डी परीक्षा बोर्ड** था । बीकानेर में मेरे बडे पिताजी महात्माजी घेवरमुनिजी के कारण मेरा सर्वत्र आव आदर सन्मान अहोभाव था । स्थानक मे भी लोग मेरे से सभी प्रसन्न थे । मैं वहाँ पर्युषण संवत्सरी के प्रतिक्रमण कराना, धार्मिक पाठशाला के बच्चों को पढाना आदि भी करता था । वहाँ छात्रावास की बिल्डिंग में प्रथम मंजिल में ४-५ कोलेज के जैन बच्चे संस्था की तरफ से रहते थे जो कानोड, बडी सादडी आदि के धार्मिक परिवारों के स्थानकवासी थे । मुझे स्वतंत्र कमरा ग्राउन्ड फ्लोर में मिला था । पास में ही बडा होमियोपेथिक अस्पताल था । जो उसी ग्रंथालय के नीचे विशाल जगह में था। डॉक्टर से मेरा अच्छा परिचय हो गया था अतः कम्पाउन्डर की अनुपस्थिति में पुडिया बांधना, दवा देना आदि सेवा मैं समय समय पर देने लगा । मुझे भी अनेक पेटेन्ट रोगो की दवा के नाम गुणों का अनुमान होता गया । सेठिया परिवार के घर के सारे परिवार के लोगो के पास भी मेरा आना जाना कोई न कोई काम से होता ही रहता था । सभी लोग मुझे दीक्षार्थी वैरागी के रूप में देखते थे । संघ के सदस्यों के पास समता संघ रांगडी मोहल्ला आदि में कुछ न कुछ काम से जाना मिलना होता रहता । मैं मेरे स्वभाव और विवेक प्रकृति के कारण तथा महात्माजी म.सा. की सुफारिश के कारण कहीं भी विरोधाभास नहीं था । यों समाज में रहन सहन की अपेक्षा मेरा करीब तीन वर्ष आनंद प्रमोद से पूर्ण हुआ।

मेरे छात्रालय के विद्यार्थी कुछ बालक उम्र के कारण कुतुहली मजाकी हैरान करने के मूड आदि वाले भी बन जाते थे । उसे मैं अपनी तरकीब से निपटाता या सहन करता था परंतु कभी किसी से गुस्सा शिकायत आदि करने का मेरा ढंग नहीं था । हम पाँच ही विद्यार्थी

घुलमिल कर रहते थे । एक दूसरे के कमरे में आते जाते बैठते और अपनी अपनी पढाई भी करते थे ।

ग्रंथालय में उस समय ईस्वीसन १९६५में १६००० पुस्तकें थी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती हस्तलिखित अनेक विध थी । १००-१२५ करीब कबाट थे एक होल बहुत लंबा चौडा तथा तीन कमरे बडे २०×२० के थे । चौतरफ फिरते कबाट थे और बीच में खाली जगह थी । वर्ष में १-२ बार करीब सभी पुस्तकें निकालते रखते थे । कभी सफाई के लिये तो कभी व्यवस्थित करने के लिये, कभी कलर करने के लिये आदि आदि । ५० के करीब मासिक पाक्षिक दैनिकपत्र पत्रिकाएँ आती थी । उनको आते ही रजिस्टर में जमाकर छापलगाकर वांचनालय में रखना, शेठजी के घर देना, स्थानक में पहुँचाना और वापिस प्राप्त कर संभालकर फाइल करना इतना मेरा मुख्य कार्य था। एक वृद्ध श्रावक पंडित रोशनलालजी के ऐसिस्टन्ट थे धीरे धीरे यह कार्य मेरे जिम्मे आता गया । पूरी लाइब्रेरी में से पुस्तकों का ख्याल हो गया था । पूरे होल या कमरे के कबाटों की एक मास्टर की होती थी । बाहर गाँव से नयी आई पुस्तको को रोशनलालजी के सूचन अनुसार रखना जमा करना पढने वालों को बताना, देना आदि कार्य भी मैं करने लगा । मैं भी उस लाइब्रेरी की मनचाही पुस्तकों के अध्ययन के लाभ और मेरा अध्ययन मिला कर १४ घंटे मेरे प्रायः रातदिन नियमित अध्ययन में लगते थे ।

मेरा अध्ययन :- पूज्य महात्माजी म.सा.(बडे पिताजी) के संसूचन से मुझे कुल मिलाकर ६ घंटो में अधिकतम तीन घंटे ही लाइब्रेरी का काम करना होता था । एक घंटा रोशनलालजी धार्मिक पढाते जिससे मैं प्रतिवर्ष पाथर्डीकी परीक्षा देता । एक घंटा पंडित श्यामलालजी ओझा मुझे संस्कृत लघु सिद्धांत कामुदी पढाते, संस्कृत बोलना सिखाते और बडे बडे व्याकरण वारिधि लोगों की चर्चा गोष्ठी में भी मुझे छुट्टी के दिन ले जाते और व्याकरण के सूत्रों संबंधी गहन विचारणा मेरे से संस्कृत में बुलवाते। इधर पं. रोशनलालजी ने मुझे स्यादवाद मंजरी, रत्नाकरावतारिका आदि महत्वशील ग्रंथ भी अच्छी तरह पढाये समझाये थे । पंडित

श्यामलालजी ने भी मुझे हितोपदेश लघु शब्देंदुशेखर आदि कई संस्कृत ग्रंथो का अभ्यास कराया । मेरे दोनों विद्यागुढओं के घर भी मैं जाता बैठता और घरेलु कार्यों को कर देने की विनय भक्ति रखता था । तीसरे में मैं वहां ठाणापति विराजित विद्वान एवं आगमों के थोकडों के निष्णात वृद्ध संत (करीब ८० वर्ष)श्री की सेवा में तीसरा घंटा पढने जाता था दुपहर को लाइब्रेरी के मुख्य कार्य निपटाकर । पं. श्यामलालजी ओझा भी संस्था के सवेतनीक कर्मचारी थे अतः वे अनेक जगह जाकर महासतियाँ जी को संस्कृत व्याकरण आदि पढाते थे । फुरसत में कभी कभी वे मुझे भी साथ में ले जाते, मेरा साध्वी वर्ग से भी परिचय और धर्म प्रेम बढता गया। यों मैं दीक्षार्थी अवस्था में था महात्माजी म.सा. का भतीजा था अतः महासतियाँ मेरे साथ बहुत सम्मान रखती थी । मुझे पंडितजी ने व्याकरण रूप में एक लघुसिद्धांत कौमुदी भी पूरी नहीं पढाई थी । परंतु इतना दिल से मर्म समझाकर पढाते थे कि काम पडने पर मुझे अपनी जगह बिमारी आदि के कारण महासतियाँजी के पास मध्य सिद्धांत कौमुदी या महासिद्धांत कौमुदी का पाठ लगाने सुनने पुनरावर्तन करवाने भेज देते और मैं जाता भी एवं महासतियाँ मुझे स्वीकारती भी थी । इस तरह मेरा प्रारंभिक गहन नीव का अध्ययन बीकानेर में सभी के सहयोग से बढा । अंतिम दिनों में मेरे बडे पिताजी म.सा. की मूल भावना प्रेरणा से समस्त संघ के मुखिया लोगों की भावना से वाया वाया मेरे पंडितजी श्यामलालजी के मेरे पास प्रेरणा प्रस्ताव सुझाव मार्गदर्शन होने लगे कि तुम इस संप्रदाय(हुकमगच्छ)में दीक्षा लो, तुम्हारे घर का अच्छा होगा और तुम्हें भी यहाँ आचार्य पद तक का चांस रहेगा । कुल मिला कर प्रत्यक्ष में मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा, मन में चाहते थे । प्रत्यक्ष मे शिर्फ पंडितजी श्यामलालजी ने मुझे बहुत कहा, समझाया परंतु मुझे पद की चाहना नहीं थी अतः ज्ञानगच्छ के विचार नहीं बदले । जो भाव शरू से है उसमें परिवर्तन की प्रवृति बनाना मुझे नहीं जँचा । सभी की अपेक्षा का अंत आ गया ।

बीकानेर के सर्विस काल में मैं वर्ष में एक दो बार घर जाता था। वहां लोग विचित्र बातें करते । सगाई की, शादी की, मजाक करते । मैं

दो-तीन दिन में वापिस आ जाता । नीचे मुँह करके सीधा स्थानक घर जाता आता किसी को कुछ भी जवाब नहीं देता, नहीं किसी का बुरा मानता । न कभी दीक्षा की बात करता, न आज्ञा मांगता । सभी भिन्न-भिन्न तरह से सोचते । उस समय तक हम कुल नव भाई बहन थे ५ भाई ४ बहने । तीन बहने छोटी उमर में काल कर चुकी थी, भाई बहन-माता-पिता किसी से में कोई भी विरोध जन्य या खींचतान आदि नहीं करता था । कारण कि मेरे गुढ श्रमण श्रेष्ठ की लक्ष्मण रेखा मेरे सामने थी कि माता पिता को प्रसन्न करके आज्ञा लेकर आओगे तो दीक्षा मिलेगी । मेरे पिताजी का हार्दिक उद्घोष प्रारंभ से था कि मैं ५० वर्ष का बाप दौड के कमाउँ और तुम २० वर्ष के जवान मांग के खावो, ऐसा कोई धर्म नहीं होता है । पहले कर्तव्य करो, बडे पुत्र हो कमाकर कर्तव्य पालो फिर दीक्षा लो हम क्यों मना करे। मेरे पिताजी अपनी २० वर्ष की उम्र से सदा सामायिक पक्खी प्रतिक्रमण, संवत्सरी का २४ घंटे का प्रतिपूर्ण पौषध नियमित जीवनभर से करते आये थे । धार्मिक प्रसिद्ध गुढकुल ब्यावर में अध्ययन किया था- मेट्रिक और संस्कृत विशारद। २५ वें वर्ष की उम्र में घाणेराव सादडी धार्मिक छात्रालय में प्रधानाध्यापक रहे। इत्यादि कारणों से मैं दीक्षा की आज्ञा नहीं मांगने में भी अपने मन में प्रतिज्ञाबद्ध था । अब मेरे पिताजी को मेरे व्यवहार से पूर्ण संतोष हो चुका था । परंतु वे देखते कि अब ये आज्ञा मांगे तो दूं और मैं सोचता कि ये खुद कहे कि तुम्हें आज्ञा है । इस तरह समय योग नहीं आ रहा था । मेरी ७० रूपयों की तनखाह थी जो मैं प्रतिमास ज्यों की त्यों मनिओर्डर से पिताजी को भेज देता । मुझे संस्था की तरफ से अलग से पूर्ण सुविधा थी अर्थात् कुल मिलाकर १०० रूपये मासिक खर्च के रूप में मुझे मिल जाता था ।

बीकानेर में भोजन व्यवस्था :- भोजन खर्च के लिये हम पांचों विद्यार्थियों को प्रत्येक को संस्था शेठजी की तरफ से मासिक रू. ३५/- मिलते थे । वहीं एक रसोई घर था । बाकी व्यवस्था हम पांचों विद्यार्थियों को करनी थी । एक रसोई करने वाली बहिन २०/-मासिक से दोनों समय आती थी। बाकी मेस चलाने की संपूर्ण देखरेख सामान लाना आदि हिसाब रखना आवक जावक

खर्च आदि का हम एक एक विद्यार्थी एक-एक महीना बारी से करते थे । हिसाब में कभी घटते तो हम पाँचों भरते और बढते तो पाँचों बाँट लेते । इस तरह हमारी खाने की व्यवस्था स्वनिर्भर रही ।

शारीरिक कार्यक्रम दैनिक जीवन चर्या :- सभी विद्यार्थी स्वावलंबिता से रोजाना पढते रहते थे । मैं भी घडी में एलार्म रखकर नियमित ४ बजे उठकर अपने कमरे में एक सामयिक करता । फिर शारीरिक बाधानिवृत्ति, स्नान, तेल मालिस, छत पर जाकर आसन दंड बैठक व्यायाम कर पुनः साबुन से स्नान, फिर अध्ययन, दूध का समय होने पर २-३-४ किलोमीटर दूर जाकर भेंस का दूध सामने दुहाकर तौलकर लाना, गर्म करना, पीना सभी का व्यक्तिगत था। धीरे-धीरे अभ्यास करते मैं तो कच्चा दूध लेकर वहीं पर पीकर पैदल आ जाता । बढते-बढते मैं तराजु से तोलाकर दो किलो कच्चा दूध वहीं पीकर आने लगा । शीर्षासन बिना सहारे करीब १० मिनट में मैं पूरी भक्तामर कर लेता था । १० बजे खाना, लाइब्रेरी में जाना, शाम का सूर्यास्त पहने खाना एवं खुद अध्ययन कर १० बजे सोना । यह मेरा क्रम प्रायः नियमित चलता रहा। चारों विद्यार्थियों का भी जीवन प्रायः ऐसा ही हीनाधिक चलता रहा ।

संतदर्शन एवं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत :- इन तीन वर्ष के पिरीयड में बीकानेर से प्रति वर्ष चौमासे में ६ बसे आचार्यश्री नानालालजी म.सा. के चार्तुमास स्थल पर दर्शनार्थ ५-६ दिन के कार्यक्रम से निकलती थी। मुझे भी ले जाते थे । इस अवधि मे मैं रतलाम, इन्दौर, रायपुर गया था। रायपुर गया जब मुझे २०वाँ वर्ष चाल रहा था । मैंने घर वालों को ध्यान रहे इसलिये आचार्यश्री के पास चतुर्थ व्रत का आजीवन प्रत्याख्यान लिया और दुर्ग, रायपुर, राजनांदगाँव मेंरे परिवार वालों में और गाँव वालों में प्रचार पहुँचा दिया । इस पीरियड में प्रेममुनिजी, पारसमुनिजी आदि भी वैराग्यकाल में आचार्यश्रीजी के पास रहते थे । उनका हमारा परिचय बढा और प्रगाढ मित्रता मनों में घर कर गई । जो दीक्षा के बाद भी रही ।जिससे हम आत्मीयता से ही मिलते, साथ रहते थे । उस समय शांतिमुनि, अमरमुनि, कँवरमुनि(आगमिक)आदि संतो की भी मुझ पर बहुत कृपादृष्टि और स्नेहिल दृष्टि थी । यात्रा पूर्ण होने पर हम बीकानेर पहुँच गये ।

दीक्षा की आज्ञा का संयोग :- दिसंबर महिने में मेरे २० वर्ष पूरे होने वाले थे । मेरे पिताजी के पाँच भाईयों में एक बहन थी, वह बीकानेर महात्माजी म.सा. के दर्शन करने आई थी । मेरी योग्यता को भी अच्छी तरह से देखा, खीचन जाकर मेरे पिताजी को आदेश कर दिया(क्यों कि वह बडी बहिन थी)कि अब तुम उसे अपने स्वार्थ के लिये मत रोको । नौकरी छुडाकर घर बुलाकर दीक्षाकी आज्ञा दे दो । इसी के परिणाम स्वरूप मैं १९ दिसंबर के आसपास और २१वें वर्ष के प्रवेश समय खीचन घर आ गया । आज्ञा हो गई । श्रमणश्रेष्ठ श्री समर्थमलजी म.सा. आदि सभी संत गुजरात में थे । मैं राजकोट के आसपास गया, समाचार दिये और विहार में साथ हो गया । अहमदाबाद में पूज्य घासीलालजी म.सा. और पूज्य श्रमणश्रेष्ठ का मिलन हुआ, दो-तीन दिन रहे । फिर मैं साँचोर तक विहार में रहकर घर आ गया । दीक्षा की तैयारियाँ होने लगी । स्वागत आदि के लिये मेरा जोधपुर आदि जाना हुआ, गाँव में भी कई घरों में भी गया । वैशाख सुदी १० ता. १९-५-६७ का दीक्षा दिन आया । मेरी उम्र २० वर्ष ५ महिना की हो गई क्यों कि १९-१२-४६ का जन्म था ।

स्थानक में संतों का और गाँव में महासतियों का पधारना हो चुका था । स्थानक के सामने ही मेरे पूर्व मित्र श्री मदनजी गोलेछा के घर के वाडे में(महाप्रांगण में) १ बजे करीब मेरी दीक्षाविधि पूर्ण हुई । उसी दिन फलोदी तरफ विहार हो गया । बडी दीक्षा वहीं पर जेठ वदी ४ को अर्थात् दसवें दिन हुई । आगम अनुसार सात दिन के बाद कभी भी बडी दीक्षा ग्यारहवें दिन तक या अंतिम बारहवें दिन तक हो सकती है इससे ज्यादा बिना कारण रोकने पर दीक्षा दाता को प्रायश्चित्त आता है । **-छेदसूत्र-व्यवहारसूत्र ।**

विशेष स्मरणीय प्रसंग :- (१) पूज्य श्रमण श्रेष्ठ की लक्ष्मण रेखा के पूर्व मैं दो बार घर में चिट्ठी डालकर रात्रि को भाग निकला था । घर वालों को परेशानी हुई थी ।(२) पूज्य तपस्वीराजजी म.सा. को जेल में चौमासा करने की धमकी हुई ।(३) मुझे एक बार कमरे में डालकर ताला बंद कर दिया गया । डेढ-दो दिन मैं समभाव से रहा ।(४) एक बार ठवणीसे मार-मार के ठवणी के टुकडे कर दिये गये । एक बार कान

पकडकर गांव में घुमाते मारते अन्यत्र लेजाकर बंध किया गया । यह सब मेरी बालजिद के परिणाम आये थे (५) एक बार प्रत्यक्ष में पिताजी का फाँसी का दिखावा भी चुपचाप दूसरों की मार खाकर सहना पडा था ।(६) कई बार पोरषी करके व्याख्यान में बैंठ जाने पर बडी बहिन के द्वारा सब लोगों के बीच संघटा कर कपडे खींच लिये जाते (७) स्थानक में अकेले सोना अंधेरे में बहुत भयकारी था तो भी मैं कई बार अकेला संवर करता । (८) एक बार श्री श्रमणश्रेष्ठ के पास पर्युषण में था तब उन्हें भयंकर आँख का दर्द हो गया मैंने आँखों देखा कि जैनी डॉक्टर आये, कहा- भर्तीकर ओपरेशन करना पडेगा अन्यथा सुबह तक आँखें चली जायेगी । परंतु संतों के कोई जूं भी नहीं रेंकी । दूसरे दिन दुपहर को डॉक्टर ने आकर देखा, रोग गायब था । मुझे भी यह घटना देख कर जीवन के लिये वीरता रखने का आदर्श मिला । (९) मैं उस उम्र में भी शरीर से कारणिक था। माता कमर में दवा के तेल से मालिस करती थी, जब मेरी खादी भंडार की नौकरी चालु थी ।(१०) मैंने दीक्षा के पहले दिन अर्थात् १८-५-६७ को रात्रि १२ बजे तक जलसेवन किया, इतनी गले में परेशानी थी । घर वालों ने ही बातों में रोक रखा था अतः पानी पिलाया था ।(११) सातवीं आठवीं कक्षा में मैनें नीकर, बनियन, टोपी, कुर्ता टेनीस शर्ट, बुशर्ट, पेंट, पायजामा आदि सभी काटना सीना सीख लिया था । (१२) दीक्षा में मेरा नंबर १७वाँ रहा अर्थात् १६ संत गच्छ में मेरे से पूर्व दीक्षित थे । (१३) मेरे दीक्षा समय मेरे से छोटे भाई आशकरण का वेतन आने लग गया था । मेरे मित्र मदनजी के घर में भी अब शांति आनंद का माहोल बन गया था । वे पूज्य श्रमणश्रेष्ठ के कृपापात्र श्रावक भक्त थे और उनके हृदय में स्थान बना चुके थे । क्यों कि संपन्न थे, स्थानक के सामने घर था और धार्मिक लगन सेवाभावना, उदार भावना भी थी । (१४) मेरी दीक्षा समारंभ के खर्च का सर्व प्रथम प्रस्ताव भी उनके घर का था किन्तु वह स्वीकृत नहीं हुआ था । (१५) दीक्षा के दो दिन पूर्व मैंने पूज्य श्रमणश्रेष्ठ से पूछा कि घरवाले दीक्षा दिन देवमंदिर में पूजा करने ले जायेंगे; नारियेल, दीपक आदि करवायेंगे तो मिथ्यात्व लगेगा क्या ? गुढदेव ने कुछ भी दुराग्रह नहीं सिखाया । माता पिता अपने को दीक्षा की आज्ञा देते है और दीक्षा में तो सब हमारे ज्ञान से ही

चलना ही है तो दो दिन और उनकी आज्ञा मानने में कोई दिक्कत नहीं है । (१६) पूज्य श्रमणश्रेष्ठ ने दीक्षा पूर्व एक दिन प्रवचन में कहा था कि दीक्षार्थी के बडे पिताजी दीक्षित हैं उनके पास दीक्षा लेना उनका प्रथम कर्तव्य होता है । ये लेना चाहे तो हमारी संमति और स्वीकृति है। फिर मुझे और घरवालों को खडा करके पूछा गया । सबने कहा आपके पास ही लेना निर्णित है । ऐसी गुढदेव की हार्दिक उदारता थी । (१७) गुजरात के दो महिने विहार में मुझे दो बार कुत्ता काट गया था बचपन में तो ८-१० बार काट चुका था । तब इन्जेक्शन का कोई माहोल नहीं था । जिससे अभी भी मुझे कुत्ते के काटने का प्रसंग आता है तो मैं कुछ भी नहीं घबराता हूँ । शिवांबु प्रयोगसे इलाज कर लेता हूँ ।

दीक्षा पर्याय प्रारंभ : बडी दीक्षा फलोदी होने के बाद सभी संत हम खीचन आ गये । प्रवचन दरम्यान शेषकाल एवं चातुर्मास की विनंतियाँ चलने लगी । पूज्य समर्थ गुढदेव ने अपने चातुर्मास की स्वीकृति खीचन को दे दी । तपस्वीराजजी म.सा. ने अपने चातुर्मास की स्वीकृति पाली संघ को खीचन आने के पहले दे दी थी ।

तपस्वीराजजी म.सा. के पाली चातुमासार्थ विहार का समय आया । पूज्य गुढदेव श्री श्रमणश्रेष्ठ ने श्री प्रकाशमुनिजी, श्री रतनमुनिजी, श्री उत्तममुनिजी, श्री फूसालालजी, श्री खुशालमुनिजी से पाली जाने के लिये पूछा । किसी के स्वीकार न करने पर गुढदेव का खिन्न चहेरा देख कर गुढ भक्त मदनजी गोलेछा ने गुढदेव से जानकारी चाही। गुढदेवने अपना दुःख उन्हें कह सुनाया कि मेरे प्रथम शिष्य तपस्वीराज के साथ कोई पाली जाने को तैयार नहीं हो रहे हैं । मेरे पूर्व बालपन के मित्र मदनजी ने मेरा नाम लेकर पूछा- तो गुढदेव ने कहा कि ये नव- दीक्षित है प्रथम चौमासा है । मेरा यहाँ खीचन चातुर्मास है । अतः मैने त्रिलोकमुनि को पूछना या पाली भेजना उपयुक्त नहीं समझा । मदनजी ने कहा- तिलोक मुनिजी को पूछ कर देख लीजिये । आपकी उलझन समाप्त हो सकती है, ऐसा मुझे पूर्ण विक्तास है । गुढदेव ने बडी तरकीब से मुझे पूछा, मैने कहा- मन तो सोलह आना आपके साथ खीचन रहने का ही है फिर भी आपको मुझे भेजना ही जरूरी होगा तो सोलह आना प्रसन्न मन से जाउँगा । गुढदेव आश्वस्त हो गये उन्हें बडी शांति-समाधि

मिली । मुझे प्रथम वर्ष में ही **गुढदेव की अंतर हृदय की अपार कृपादृष्टि का अवसर मिला**। मई जून की गर्मी में तपस्वीराजजी का दो ठाणा से पाली तरफ विहार हो गया । मैं शरीर से कमजोर तो था ही, गर्मी के परीषह को सहते घबराते पाली के निकट रोहट पहुँचे । पाली के लोगों ने अंदाज लगाया रोहट से विहार होने पर संत दो रात से पाली पहुँचेंगे। किंतु तपस्वीराज ने एक रात रस्ते में रहकर दूसरे दिन सुबह साडे नव बजे के करीब १४ माइल का विहार कर जैन मार्केट में जा पहुँचे । लोगों को बहुत आश्चर्य और अफसोस हुआ । अगवानी करने का उत्साह मन ही मन रह गया । ऐसी ही उस जमाने में संतों के विहार की पद्धति थी । भीड इकट्ठी कर ठट्ठा जमाने की उनमें ढचि नहीं थी ।

प्रथम चातुर्मास मेरा अध्ययन की कसौटी पर था । तपस्वीराजजी तीन घंटे व्याख्यान और तीन घंटे महासतीजी को वाचणी देते थे । मैंने आज्ञा लेकर स्वतः अध्ययन शुढ किया । पाथर्डी की परीक्षाएँ बीकानेर से प्रभाकर तक हो चुकी थी । चातुर्मास में जिज्ञासु प्रोफेसर संपतराजजी ढाबरिया आदि के साथ सहयोग से आचार्य श्रीअमोलकऋषिजी के आगमों के माध्यम से जीवाभिगम, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, नकशे, चार्ट, गणित सहित समझते हुए पूर्ण किये । रात्रि में और सुबह चतुर्थ प्रहर में स्वाध्याय तथा थोकडे सीखना सिखाना चलता था । बीकानेर में श्री पन्नालालजी म.सा.के पास सीखा हुआ गम्मा का थोकडा भी यहाँ मैंने सीखाना शुढ किया । ९-१० श्रावक व बच्चों ने सीखा । यहीं पर सीखे हीरामुनि आदि ने जगह-जगह गुजरात आदि में घूम-घूमकर गम्मा के थोकडे का प्रचार किया ।

गुढदेव से छेदसूत्रो की वाचना :- दूसरा चातुर्मास पूज्य श्रमणश्रेष्ठ के साथ इन्दौर हुआ । शेषकाल में उज्जैन सारंगपुर फरसना करते हुए **गुढदेव ने स्वप्रेरणा से** मुझे छेद सूत्रों की वाचना दुपहर में व्यक्तिगत देने की कृपा करी । फिर इन्दौर में छगनकुंवरजी, कंचनकुंवरजी आदि ठाणा सतियों का चातुर्मास भी साथ में होने से प्रज्ञापना आदि सूत्रों की वाचना हुई । गुढदेव की वाचना प्रश्नोत्तरी एवं प्रवचन सभी में मेरी हाजरी रहती थी । इन्दौर के पूरे चातुर्मास के गुढदेव के संयमजीवन पर हुए प्रवचन मैंने रफ में लिखकर फेअर कर लिये थे । जो शांतिलालजी सुराणा ने खुद के लिखे से संशोधन कर कभी प्रकाशित भी करवाये थे।

शेषकाल में गुढदेव के उदयपुर विचरण में आनंदीलालजी फूलचन्दजी बडे विद्वान भाई खूब प्रश्नोत्तर सेवा का लाभ लेते । उन्हें भी मैंने रसपूर्वक सुनना लिखना किया । उनके ज्यादा प्रश्न दिगंबर आमनाय भावित भी होते थे ।

इन्दौर चातुर्मास बाद का विहार मैने श्री मथुरामुनिजी के साथ धार, मेघनगर, पेटलावद, रावटी, सैलाना आदि में किया । श्री रतनलालजी डोशीजी से भी सेलाना में ज्ञान चर्चा अनुभव सुने । श्री मथुरामुनिजी को विचरने का, व्याख्यान का बहुत अच्छा शौक था । ए क दिन में ४-५ प्रवचन तक भी देने का प्रसंग आ जाता था ।

तीसरा चातुर्मास श्रमणश्रेष्ठ पूज्य गुढदेव के साथ पाली हुआ । वहाँ हम ब्यावर होकर पाली पहुँचे थे । तो ब्यावर तेरापंथी लाइब्रेरी से बृहत्कल्प भाष्य पूज्य पुण्यविजयजी म.सा. संपादित सात भाग उठाकर पाली लाये थे । संतो ने विहार में बंटवारे से उठाया था । पाली चातुर्मास में मैने उनका तथा निशीथचूर्णि का अध्ययन किया । श्री प्रकाशमुनिजी ने भी सातों भागों का क्रमशः अध्ययन किया ।

चौथा चातुर्मास पूज्य गुढदेव का नाथद्वारा हुआ । मेरा चातुर्मास श्री खुशालमुनिजी प्रकाशमुनिजी के साथ गढसिवाना हुआ । उत्तममुनिजी भी थे । यों हम चारों खीचन वालों का वह स्वतंत्र चातुर्मास था । वहीं सुधर्म प्रचार संघ का वार्षिक ग्रीष्मकालीन शिबिर हुआ था । २५०-३०० विद्यार्थी आये थे । उसमें हम तीनों संतो ने एक एक पिरीयड लिया था। उस शिबिर के मुख्य संचालक लक्ष्मीचन्दजी दक थे जो हमारे खीचन स्कूल के वर्षों अध्यापक रहे हुए थे।

पाँचवाँ चातुर्मास पूज्य श्रमणश्रेष्ठ के साथ जयपुर हुआ । वहाँ पूज्य गुढदेव ने मेरे निवेदन से भगवती सूत्र की वाचनी दी, अन्य संत भी बैठते थे । तब तक मैंने भगवती के ५ एडीसन पढ लिये थे । जयपुर में मुझे नवयुवकों की सुबह की क्लाश में पढाने का मौका मिला था । क्यों कि जयपुर पूज्य आचार्य हस्तीमलजी म.सा. का प्रभावित क्षेत्र था । नवयुवक सुबह सामायिक करते ही थे । जयपुर लालभवन चौडा रास्ता में उस समय आचार्य विनय चन्द ज्ञान भंडार व्यवस्थित किया जा रहा था जिसमें सैकडों हजारों हस्तप्रत स्टील के डब्बो में व्यवस्थित की जा

रही थी उसमें से भी प्रसंग पर हस्तप्रतें देखने खोजने का लाभ उठाया था । तब पूज्य श्रमणश्रेष्ठ मुझे खोजी संत कहा करते थे । जयपुर हीरों की नगरी में गोचरी की विशेषता थी जिससे हमने वहाँ सेव, आंबला का मुरब्बा तथा घर की आइस्क्रीम का अनेक बार उपयोग किया था । गोचरी लाने वाले श्री फुसालालजी म.सा. थे और छोटी उमर के संतों में, मैं और श्री प्रकाशमुनिजी थे । उस चातुर्मास में मैने एकांतर उपवास करने का भी अभ्यास किया । एक बार सतियों की सेवा हेतु चातुर्मास में भी ४०-५० कि.मी. विहार किया था ।

जब हम जयपुर चार्तुमास जा रहे थे तब गर्मी में ब्यावर में दो भाई दो बहिन यों चार दीक्षाएँ थी- सैलाना के मोतीमुनि-हुकममुनि तथा निर्मल कुंवरजी और पुष्पकुंवरजी । जिसमें निर्मलकुंवरजी ने श्री प्रकाश मुनिजी की बातों में आकर बिना किसी गुढणी के नाम से दीक्षा ली। जिसमें जीवन में दु:खी होकर बहुत पछताना पडा था। **(क्यों कि अपनापन बिना उसे कौन साथ में रखे, किस के साथ जावे-रहे? यह प्रश्न सदा खड़ा रहता ।)** गच्छ छोडकर गुजरात भाग जाने के मनसूबे करने पडे। उसके दु:ख को सुनकर जानकर मैंने उन्हें उपदेश लिख लिखकर हिम्मत बंधाई और उनके लिये भयंकर गर्मी के मई महीने में तेला कर समरथ गुढ का स्मरण कर उपाय जुटाया और उनका रस्ता क्लीयर किया । आखिर उनको हेरानगति होकर महासती कंचनकुंवरजी की निश्रा-गुढणी रूप में स्वीकार करना पडी । वहाँ भी मनमानी अपनी चेलियाँ करने का दौर चलाया, ग्रुप बनाया । कृतघ्नता कर अलग पडाव किया । इसमें भी श्री प्रकाशमुनिजी की खोटी सलाह मान कर फिर गुढणी का त्याग किया । गुजरात विचरण दरम्यान राजकोट आई । गोंडल गच्छ की असमान समाचारी वाली साध्वियों को वंदन किया और मैं मिला तो हाथ भी ऊंचे नहीं करके सीधी अविनय से खडे-खडे बातें की । जब कि मैंने उनके सुख के लिये भर गर्मी में तेले की साधना कर सहयोग किया था । उस उपकार की भी कृतघ्नता करने वाली यह साध्वी गुजरात में बहुत पीडा पाई, बहुत दोष लगाये और दुखे दुखे शरीर छोडा । कहा है- कृतघ्नी जैसा हीन पुण्य दुनिया में कोई नहीं होता है ।

उस ब्यावर दीक्षा प्रसंग के दो दिन पूर्व मैंने समरथ गुढदेव से निवेदन किया कि अयोग्य दीक्षा देने पर दीक्षा दाता को प्रायश्चित्त आता

है या गुढणी को ? क्यों कि वहाँ होने वाली चार दीक्षा में से एक बहिन की पात्रता बराबर नहीं थी । समरथ गुढदेव हुकमबाजी में ज्यादा नहीं मानते थे, बहुत दीर्घदृष्टि से सोचकर पूर्ण गंभीरता धारण कर के रहते थे जिससे परस्पर में किसी को कर्मबंध में नहीं पडना पडे । गुढदेव का उत्तर था- **भींत का भचीडा खाने पर अपने आप अकल आयेगी ।** मैं किसी को अयोग्य कहकर दीक्षा नहीं दूँ और पीछे से वे किसी गाँव में जाकर दीक्षा देदे तो मेरा क्या रहेगा । गुढदेव ने मुझे समझा दिया कि इस सती को अभी कुछ भी कहने का अवसर नहीं है।

गुढदेव का विहार जयपुर से सारंगपुर तरफ हुआ । मेरा श्री राजेन्द्रमुनिजी के साथ अजमेर पट्टी में विचरण हुआ । उस दरमियान हम दोंनों ने अनेक महिनों तक **धामा हुआ और रखा हुआ धोवणपानी लेने का त्याग रूप अभिग्रह कर** विचरण किया । उधर छाछ की आछ बहुत सुलभ थी । हम दोनों, महीने के ९-१० उपवास कर लेते । कितने ही दिन बिना पानी के निकाले थे । वह हमारे जीवन की विशिष्ट साधना थी जिसमें अनेक नये अनुभव व अभ्यास हुए थे ।

छट्ठा चातुर्मास पूज्य गुढदेव का बालोतरा रहा । उसके पूर्व सारंगपुर में श्री गौतममुनिजी और बडौद में श्री गिरधारीमुनिजी की गुढदेव के हाथ से अंतिम दीक्षा हुई । फिर कई कारणो से गुढदेव के पेट में तकलीफ होने लगी, कैंसर रोग तय हुआ । जिसके लिये पूज्य सौभागमलजी म.सा. फरमाया करते थे कि विहार में श्री फूसालालजी म.सा. और श्री प्रकाश मुनिजी की रसाकसी से विहार में पुज्य गुढदेव के खानपान और चित्तकी असमाधि से उस रोग का संयोग हुआ था । उस शेष काल में श्री प्रकाशमुनिजी का कोटा और रामगंज दो क्षेत्रों में दो बार गुढदेव से टकराव के कारण डब्बे बाँधकर अकेले विहार का उपक्रम बना था । ये दोनों संत प्रायः गुढदेव को छोडकर अलग विचरण करते भी नहीं और दोनों की हुज्जत से गुढदेव संतप्त रहते थे, आहार पानी भी असंतुलित होता रहता था । इन दोनों की हुज्जत से श्री फूसालालजी म.सा. कई बार आत्मघात, छत पर से कूदने के दिखावे-नाटक करते,जिससे गुढदेव हैरान होते । इसी प्रसंगों में एक बार श्री प्रकाशमुनिजी ने अपनी किसी हुकूमत जिद्द के नहीं चलने से सिटी पुलिस जोधपुर में १ महिना

गुढ से आहार अलगाव रखा था। एक बार सिटीपुलिस स्थानक, जोधपुर से एकलविहार किया था तब कोई पकडकर वापिस लाया था ।

यों मेरा छट्ठा चातुर्मास पाली श्री लालचन्दजी म.सा.के साथ हुआ और पूज्य गुढदेव का पेट में कैंसर की गांठ के संयोग युक्त बालोतरा में हुआ ।

उस समय श्री प्रकाशमुनिजी, श्री उत्तममुनिजी आदि का सिवाना में चातुर्मास था । कारणवश श्री प्रकाशमुनिजी चौमासे में विहार कर बालोतरा पहुँच चुके थे । थोडे दिन बाद श्री उत्तममुनिजी भी बालोतरा पहुँच गये तो उन्हें प्रायश्चित्त देकर गढसिवाना भेज दिया गया था।

छट्ठे चौमासे में गौचरी मेरे हाथ में आ गई थी । सुराणा मार्केट में हमारा दो सिंघाडों का चातुर्मास था अर्थात् पूज्य हस्तीमलजी म.सा. के बडे पंडितजी म.सा., श्री मानमुनिजी तथा श्री शीतलमुनिजी का सकारण चातुर्मास हो गया था ।

पूज्य लालचन्दजी म.सा. दुपहर में साधना चलाते थे । श्री मानमुनिजी प्रज्ञापना सूत्र की वाचना देते थे । जिसमें उनके संत-सतीजी श्रावक आदि सभी बैठते थे । मैं उपर स्वतंत्र कमरे में अकेले अध्ययन करता था । प्रज्ञापना सूत्र में कुछ भी आवश्यक लगता तो श्री मानमुनिजी मुझे उपर बुलाने आते थे और सभी के समक्ष अपनी जिज्ञाशा रखकर समाधान करवाते थे । मैं विषय समेट कर शीघ्र उपर चला जाता था । जाते हुए मुझे रोककर श्री पंडितजी म.सा. सांप्रदायिक चर्चा के विषय छेडकर आक्षेप कर उलझाने का प्रयत्न करते, परंतु मैं नम्रतापूर्वक पिंड छुडाकर सुना अनसुनाकर चल देता, कभी विवाद में नहीं पडता । फिर भी उनका वही क्रम बारंबार चलता रहा ।

चातुर्मास उठने के निकट एक दिन रात्रि ९-१० बजे मैंने मौका देखकर श्री मानमुनिजी को(मेरे से दीक्षा में बडे थे) समझाया कि ये श्री पंडितजी म.सा. का प्रवृत्ति-व्यवहार ठीक नहीं रहा । मेरी जगह अन्य संत होते तो प्रेम में विघटन होता,वातावरण बिगडता । इन्हें आप समझावें-निवेदन करें सत्य महाव्रत भी वे असत्य आक्षेप से खराब करते हैं । श्री मानमुनिसा ने कहा आप ही इन्हें समझावें। मैंने कहा- नहीं, आपके गुढदेव, पूज्य हैं आप ही समझावें । मानमुनिसा के हृदय में बात

जँच गई । मैं उपर चला गया । रात्रि ११ बजे मुझे बुलाया तब तक सारा मामला बदल चुका था अर्थात् श्री मानमुनिसा ने विनयपूर्वक मेरी बात रख दी थी । मैं नीचे गया, श्री पंडितजी म.सा.ने अश्रुपूरित नेत्रों से हर्ष-शोक मय नयन से मेरी प्रशंसा, आत्म निंदा करते खेद प्रगट किया और प्रायश्चित्त कर अपना हृदय पवित्र बनाया । श्री मानमुनिसा मेरे से १०-१५ वर्ष बडे थे और श्री पंडितजी म.सा. २०-३० वर्ष बडे थे । यों मेरा छट्ठा चातुर्मास पाली में (तीसरा) पूर्ण हुआ ।

पुज्य गुढदेव बालोतरा में कैंसर की पेट में गाँठ से ग्रस्त थे, वाचा बंद हो चुकी थी । **मैं शीघ्र विहार कर बालोतरा पहुँच गया ।** माहोल बहुत गमगीन था करीब २२ संत और अनेक महासतीजी वहाँ एकत्रित हो गये थे । उस समय बालोतरा में करीब ७०० घर थे । गोचरी की कोई तकलीफ नहीं थी । मिगसर में ही गुढदेव का आहार घटता गया । सुदी पक्ष में तो दूध पानी पर आ गये । सुदी ५-६ को कोन्फ्रेंस के प्रमुख लोग आये थे । गुढदेव ने उनके समक्ष आलोचाना प्रायश्चित्त शुद्धि व्यवहार कर दवा-दोष बंद कर दिया । सुदी-११ को गुढदेव ने दूध भी लेना बंद कर दिया । मुँह से कुछ कहना था नहीं, दूध मुँह के पास लेजाते ही मुँह पक्का बंद कर देते । सुदी-१२ को सुबह प्रतिक्रमण के बाद गुढदेव को ईसारे से स्वीकृति पूर्वक उपवास करा दिया गया । मैने भी उस दिन बेला कर लिया । कई संतों के तपस्या आयंबिल आदि चालू ही थे ।

वाचा बंद के अतिरिक्त गुढदेव की जागृति बराबर थी । स्वीकृति पूर्वक साडे नव बजे श्री प्रकाशमुनिजी ने छज्जीवनी के पाठ से विधिपूर्वक नई दीक्षा विधि पूर्ण कर संथारे का प्रत्याख्यान चौविहार करा दिया था । करीब **४०-४५ मिनिट का संथारा आया ।** मैं तो अंत तक पास में बैठा था । ११ बजे के पूर्व संतों ने शरीर को वोसिरा दिया। दो बजे अंतिम स्मशान यात्रा श्रावकों ने प्रारंभ कर शाम को ५ बजे से ६ बजे तक दाह क्रिया पूर्ण कर लोग निवृत्त हो गये । इस तरह पूज्य श्रमणश्रेष्ठ ने ७८ वर्ष की उम्र में मिगसर सुदी-१२ को अपनी साधना आराधनापूर्ण कर विदा ली । यों मेरा लगभग ६ वर्ष का **पूज्य गुढदेव का सहवास** रहा जिसमें **सभी शेष काल** तथा **तीन चातुर्मास** का संयोग रहा ।

पू. गुढदेव की हस्तलिखित सामग्री एवं सूचना संदेश :– पूज्य गुढदेव का हस्तलिखित संग्रह एवं अन्य साहित्य श्री फूसालालजी म.सा. तथा श्री प्रकाशमुनिजी के पास था । उसका यथायोग्य विभाजन कर लिया गया । विशिष्ठ साहित्य एवं कागजात श्री प्रकाश मुनिजी के पास रहे । उसमें पूज्य गुढदेव का ढग्णावस्था में स्वयं के हाथ से लिखा **सूचना संदेश** पत्र भी था जो श्री प्रकाश मुनिजी ने सबको पढाया एवं पढने दिया । किसी को उसकी नकल करने की मनाई नहीं की गई। संतों की निरविरोध स्वीकृति से वह पत्र श्री प्रकाशमुनिजी ने रखा क्यों कि पूज्य समर्थ गुढदेव के उत्तराधिकारी पूज्य तपस्वीराज श्री चंपालालजी म.सा. ठाणा–२ से महाराष्ट्र में थे । बाकी सभी (२२) संत बालोतरा में थे । बाद में वह पत्र **श्री प्रकाशमुनिजी ने पूज्य गुढदेव तपस्वीराज को दिया या नहीं** इसकी जानकारी करने का कोई प्रसंग नहीं आया ।

पूज्य गुढदेव श्री समर्थमलजी म.सा.की हस्त लिखित पत्र की सूचना का व्योरा— **(१)** मेरे पीछे गच्छ का कार्यभार एवं सारी जिम्मेदारी तपस्वीराज संभालेंगे । दूसरे संत उनको सुझाव सलाह दे सकेंगे । वे भद्रिक आत्मार्थी संत हैं कभी कोई बात नहीं जँचे तो बाद में प्रेम नम्रता से समझाने पर मान भी लेते हैं। । अपनी अपनी हुकमबाजी या आग्रह कोई नहीं चलायेंगे । इसी में गच्छ की शांति एकता टिकी रहेगी । परस्पर भी सभी संत निभने निभाने का ध्यान रखेंगे । **(२)** तपस्वीराज सरल और निखालिस स्वभावी है सभी संत उनका पूर्ण विनय और सन्मान रखेंगे ।**(३)** श्री फूसालालजी म.सा. बडे तपस्वी वैरागी और अच्छे सेवाभावी संत है । खुद बचा–खुचा खराब आहार खाकर सबको अच्छा शाताकारी आहार देकर सुख पहुँचाते थे । इनकी सेवा और संभाल अच्छी तरह होवे ऐसा सभी ध्यान रखेंगे ।**(इनकी अंतिम सेवा ६–८ महीना संतों के सहयोग से मैंने प्रमुखता पूर्वक जोधपुर रायपुर की हवेली में संभाली थी और अंतिम समय उनको संथारे का अवसर एवं उपवास का संयोग भी मेरे निर्णय से प्राप्त हुआ था ।) (४)** महासतीजी श्री नंदकुँवरजी म.सा. का सिंघाडा, चरित्र निष्ठा के कारण अपने प्रति श्रद्धा रखता है । इनके साथ सदा प्रेम सोहार्द्र पूर्ण व्यवहार रखना, इन पर कोई हुकमबाजी का व्यवहार अपने को नहीं रखना । प्रेम सद्भाव

सन्मान से परस्पर निभना निभाने का ही ध्यान रखना ।**(५)** मेरा सभी संत सतियों को यहीं अंतिम कहना है कि समाज में संयम शिथिलता का कई तरह का माहोल चलता है फिर भी सभी अपनी समाचारी एवं आगम आज्ञा से संयम पालन का पूरा पूरा ध्यान रखना और सभी संत सतियाँ परस्पर निभने निभाने का लक्ष्य रखना, इसी में सम्प्रदाय की और जिनशासन की शोभा है ।

गुढदेव के हस्तलिखित सूचना पत्र के पत्रांश को यहाँ पर उद्धृत किया है। इसमें किसी को कुछ भी संदेह या जिज्ञाशा हो तो श्री प्रकाश मुनिजी म.सा. के पास रखे उस पत्र को प्राप्तकर पढने का लक्ष्य रखें । अथवा और किसी संत के पास हो तो जानकारी कर लें ।

विशेष : इस हस्तलिखित अंतिम सूचना पत्र में पूज्य समर्थ गुढदेव ने श्री प्रकाशगुढ के नाम से कोई सत्ता सूचन नहीं किया था । फिर भी उन्होंने अपनी सत्ता धोंस की प्रवृति से कुछ श्रद्धान्वित श्रावको को प्रभावित कर समय समय पर पूज्य तपस्वीराज के शासन कालमें अनेक बार परेशानियाँ खडी करी थी एवं बाप बेटे निकलजाने की धमकी से हैरान परेशान किया था और अनेकबार आवेश में स्वच्छंद विहार भी किया एवं एक बार दो साल के लिये अलग निकल कर आहार संभोग भी बंद रखा था ।

नोंध : श्री प्रकाशमुनिजी के पास एक पत्र गुढदेव के नाम का और भी है जो पर्युषण के आसपास गुढदेव ने मौखिक सूचन किये थे उसे श्री प्रकाशमुनिजी ने खुद लेखित किये थे । वही पत्र समय समय पर पढाया जाता, दिखाया जाता है, ऐसा सुनने में आता है । किंतु गुढदेव के मूल हस्तपत्र की चर्चा कहीं भी सुनी नहीं जाती है । श्रद्धालुजन ध्यान से खोजने का लक्ष्य रखकर असली पत्र पढने का देखने का प्रयत्न करेंगे वह पत्र खुद समर्थ गुढदेव के हस्ताक्षरों वाला लिखा हुआ है । उसका उल्लंघन श्री प्रकाशगुढ ने खुल्ले आम किया है अत: वह पत्र छिपाया जा रहा है।

पूज्य गुढदेव के स्वर्गवास के कुछ दिन (८–१०) दिन बाद मैंने बालेसर तरफ दो ठाणा से विहार कर दिया था । मार्ग में एक गांवमें पोष वद–११ **मेरे जन्मदिन की रात्रि को ४ बजे स्वप्न में पूज्य गुढदेव के प्रत्यक्ष साधुवेश में दर्शन हुए ।** गुढदेव पाट के किनारे बैठकर मेरे से शारीरिक सेवा खुद के निवदेन पूर्वक ली । करीब ५–१० मिनट वार्तालाप

प्रश्न हुए । गुढदेव ने मेरा हाथ पकडकर निर्देश किया– यहाँ दबा, मस्तक दबा आदि । उस प्रसंग में मैंने तीन प्रश्न किये थे पू. गुढदेव की गति, पू. घासीलालजी म.सा. की गति तथा मेरी उम्र । दो–तीन बार पुनःपुनः आग्रह करने पर मुझे उम्र का संकेत दिया जिसके पूर्व मुझे जिननाम कर्म बांधोगे ऐसी अपृष्ट वागरणा करी अर्थात् उम्र के पूछने पर वह कथन स्वतः किया । इन तीन प्रश्नोत्तरों के एवं कुछ शारीरिक सुश्रुषाके बाद मेरी नींद खुल गई । सर्दी के दिन थे छोटा गाँव था फिर भी मैं सोया नहीं, कंठस्थ स्वाध्याय का परियट्टण पुनरावर्तन किया ।

वहाँ से मैं सोयंतरा गया । वहाँ से पू. श्री सोभाग्यमुनिजी म.सा.(जो गच्छ में अब दूसरे नंबर के संत थे) से **आज्ञा लेकर बालेसर होते हुए खीचन(जन्म दीक्षास्थली) गया** । मेरे साथ सैलाने के हुकममुनिजी थे । कुछ दिन ठहरकर मैं जोधपुर पहुँचा । वहाँ पू. श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. तथा श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. पधार चुके थे। मेरी दीक्षा का सातवाँ वर्ष था श्री प्रकाशमुनिजी का तेरहवाँ वर्ष था । जोधपुर में एक दिन उन्होंने मुझे वाचना परिषद में प्रसंगोपात पूछ लिया कि आप खीचन गये तब अपने परिवार के घरों में गौचरी गये थे ? किसको बहुश्रुत को साथ लिया था? मैंने कहा– मैं सोयंतरा से ही पूज्य श्री सौभाग्यमलजी म.सा. की आज्ञा लेकर और गोचरी वगैरह की स्पष्टता करके ही गया था। उन्होंने कहा ऐसा नहीं बहुश्रुत को साथ लेकर जाना होता है । मैंने तत्काल व्यवहार सूत्र का पाठ निकालकर बताया कि यदि मुझे सिंघाडा का मुखिया होकर विचरना कल्पे तो बहुश्रुत मानना होंगा और बहुश्रुत को किसी बहुश्रुत का साथ होना जरूरी नहीं होता है । पाठ देखने पर श्री प्रकाशमुनिजी ने मौन स्वीकार कर अन्य विषय चला दिया ।

सातवाँ चातुर्मास मेरा जोधपुर श्री प्रकाशमुनिजी म.सा.के साथ तय रहा । उस समय हम सिटी पुलिस स्थानक में थे मेरी कमर का दर्द विशेष था । जिससे मुझे धोवण पानी लाने भी श्री प्रकाशमुनिजी नहीं भेजते थे किन्तु श्री खुशालमुनिजी खुद(प्रकाशमुनिजी के पिताश्री) सिटी पुलिस इतनी ऊँची सीढिया थी तो भी पानी लाने नियमित जाते थे । पूज्य तपस्वीराज कुछ संतो को लेकर खीचन विचरण करने गये हुए थे । वहाँ दो संतो का चातुर्मास बालेसर खोल दिया और खुद संतो से खीचन रहे

थे । इतने में श्री रोशनमुनिजी को ताव आ गया, उतरने का नाम नहीं, चातुर्मास निकट आ चुका था । तपस्वीराज को बालेसर का चातुर्मास केन्सल कर उन संतों को खीचन रखना चाहिये था किंतु भद्रिक तपस्वी संत चातुर्मास ज्यादा हो इस हेतु बालेसर जाने वाले संतो को बीच रास्ते से वापिस खीचन आने का समाचार करके खुद अकेले बीमार रोशनमुनि को छोडकर जोधपुर पहुँच गये । बालेसर वाले संत भी खीचन २–३ दिन रहकर उन्हें अकेले छोडकर बालेसर गये । अब पू. तपस्वीराजजी ने खीचन एक संत भेजने का श्री प्रकाशमुनिजी से कहा किंतु कोई जाने वाला नहीं था । मेरी तो कमर बहुत दर्द में थी । कुछ उपाय नहीं होने पर भी तपस्वीराजजी म.सा.ने श्री रोशनमुनिजी को जोधपुर या बालेसर नहीं रखकर खीचन चौमासा खोल दिया और मुझे खीचन जाने का आग्रह पुर जोर से करने लगे, फुल उपदेश झाडने लगे की कमर कमर क्या लेकर बैठ गये जवान साधु हो । आसाढ सुदी ८–९ हो रही थी । आखिर तपस्वीराजजी के कुछ भी समझ में नही आने से मुझे अकेले विहार खीचन के लिये करना पडा । मथानिया २० कि.मी. पहुँच कर में ज्वर से घिर गया । मैंने विहार स्थगित कर उपवास कर लिया । दूसरे दिन कुछ हिंमत जुटाकर पारणा कर विहार किया । आखिर मरते गुडते जैसे तैसे १३० कि.मी. करीब चौमासी १४ को व्याख्यान के समय मैं खीचन पहुँचा । श्री रोशनमुनिजी मेरे तीन वर्ष बाद के दीक्षित थे फिर मी स्वस्थ होने से और होंस होने से व्याख्यान संभालते थे और मैंने गोचरी संभाली । मेरा कमर दर्द पूरे चौमासे में ज्यों का त्यों रहा । श्री पूरणचन्दजी के पिताजी भोमराजजी आयुर्वेदिक औषध विशेषज्ञ थे, मेरी दवा चालू की । कभी दवा ज्यादा हो जाने से मुझे बुखार(दीपावली के पूर्व) आ गया । मालुम पडते ही मैंने लाया आहार श्री रोशनमुनिजी को सोंपकर अभिग्रह युक्त आहार त्याग कर दिया, उस समय दुपहर को दो बजे थे। दूसरे दिन भी बुखार रहा, उपवास हो गया । फिर रात्रि में ताव गया दूसरे दिन पारणा कर कमर की दवा चालू रखी । वैद्य भोमराजजी भी परेशान थे । कमर दर्द बढता जा रहा था । चातुर्मास का विहार आया। लोगों ने मना किया फिर भी भयंकर दर्द में विहार कर दिया गया । लोहावट गाँव में कुछ दिन ठहरे किंतु कमर दर्द में ही विहार करना पडा। जोधपुर आये फिर सभी संत पाली इकट्ठे हुए ।

दीक्षा का सातवाँ और सिंघाडा की प्रमुखता में मेरा पहला चौमासा खीचन मे बिना खोले अचानक हुआ । किस प्रकृति के संत को किस प्यार या अनुशासन से रखना वह मेरे कर्म योजना में नहीं था । संवत्सरी का मेरा लोच श्री रोशनमुनिजी ने सही ढंग से किया किंतु उनका लोच मुझे करना रहा । वे लोच एवं व्याख्यान वाँचने में दिलचस्प एवं सफल थे । मेरे लोच करने से उन्हें संतोष नहीं रहा इसमें उनकी सहनशीलता की कमी थी या मेरी लोच करने की अयोग्यता वह मैं नही समझ सका। फिर भी मेरे लोच से असंतुष्ठ होने के कारण तथा अपने गुणों के अभिमान से वे मेरे प्रति विनय भावित न रह कर वांके टेडे बोलने चलने लगे । मैं उन्हें संतुष्ट कर सकने के विवेक से प्रयत्न करता फिर भी वे भाषा भाव से व्यवहार से विनयशील नहीं रह सके । इसी वर्ष से मुझे अपने अशुभ कर्मोदय से **सामुहिक जीवन से असंतोष घर कर गया और एकलविहार संयम साधना के बीज का वपन, जीवन में सामुहिक निराशा के साथ प्रारंभ हो गया** और वह एक कोने में पडा रहा । क्यों कि मुझे एकल विहार के योग्य बनना बाकी था। उसमें ४० वर्ष की उम्र आगम से आवश्यक थी । धैर्य सहनशीलता हिम्मत उत्साह जीवन भर रह सके, लोच स्वयं किया जा सके तथा रोग आतंक आने पर सहाय पच्चक्खाण में सफल हो सके इत्यादि योग्यता जरूरी लगने लगी ।

उस चातुर्मास के बाद मैंने स्वयं लोच शुढ किया, भयंकर ताव आने पर भी किसी की सेवा और डॉक्टर बुलाने का मानस नहीं करने का संकल्प किया, जो ४०वें वर्ष के प्रवेश तक गच्छीय साधना के १९वें चातुर्मास तक पालन किया । क्यों कि उम्र की योग्यता तक गच्छ में धैर्य रखकर रहना जरूरी था। सब कुछ परिस्थितियों को अंतर्मन में घोट के पीजाना था । बाहर कभी ऊफ भी नहीं करना था । एकलविहार के संकल्पों को प्रगट करना भी अनुचित था । क्यों कि ४० वर्ष की उम्र तक चुपचाप गच्छ में रहना जरूरी था। अन्यथा आगम जानकार के द्वारा आगम विपरीत एकलविहार के समाचारण का कलंक झेलना होता । आखिर ३७-३८ वर्ष उम्र के होने पहुँचे । अतः वडीलों को परोक्ष संकेत देने शुढ करने पडे । पर आम जनता को, परिवार वालों में, निकट स्नेहियों में नहीं पहुँचे उसका ख्याल रखा । आखिर गर्भ सहित ४०वें वर्ष

के प्रारंभ हो जाने के बाद ही १९ चातुर्मास+२१वें वर्ष में दीक्षा+नव महिने गर्भ के यों मैने अपनी सोच समझ अनुसार आगम तात्पर्य को निभाया । अभ्यास के १३ वर्षों में गच्छ में ३-४ बार ताव आया तो सागारी अनशन से ही उसे निवारण किया । जिसमें कभी उपवास बेला तेला तक करने पर सफलता मिली । गच्छ त्याग के बाद तो एकबार विकट ताव में शिर दर्द और कमर दर्द की तीव्रता में भी ४ उपवास हिम्मत धैर्य संतोष के साथ किये । अंतिम चार उपवास की सफलता के सात दिन बाद संवत्सरी थी तो उसे भी एक साथ आठ उपवास पचक्खकर पार करी । इस साधना में, मैं अकेला ही था कोई सेवक का भी साथ नहीं लिया । बिना कोई अपेक्षा सहयोग के मैंने ४+७+८ दिन हिम्मत से पूर्ण किये उसे आज लेखन के समय तक १० वर्ष होने जा रहे हैं फिर कभी ताव नहीं आया ।

हां तो वापिस पीछे चलें! सातवें चातुर्मास के बाद प्रायः सभी संत पाली में मिल गये थे । श्री रोशनमुनिजी ने गुढदेव से अपना असंतोष व्यक्त कर दिया था । मुझे गुढदेव तपस्वीराजजी ने कुछ पूछा नहीं तो कहने का कोई संयोग कर्म फरसना से नहीं हुआ । दूसरे दिन में व्याख्यान बाद गुढदेव की सेवा में जाकर विनय सेवाभाव से बैठ गया। २०-२५ भक्त श्रावक पाली के बैठे थे ।

गुढदेव के मानस में श्री रोशनमुनि जी के शब्द व्याप्त थे । मुझे कुछ पूछे बिना इतने लोगों के समक्ष मुझे लक्ष्य कर पहले कुछ परोक्ष, फिर प्रत्यक्ष उपदेश, उपालंभ और रोष, निराशा पूर्ण शब्द सबके सामने २५-३० मिनट तक बोलते रहे । मैंने ऊफ भी करना अनुचित समझा विनय नम्रता और सहज चेहरे से सुनता रहा । **अंतरमन में तो मैं गच्छ-समूह से विरक्त हो चुका था** । फिर भी १३ वर्ष तक अपने कर्मोदय को समझ कर वडीलों की अनाशातना से रहने का दृढ निर्णय रखा था। समभावों में इतना ही विभाव आता था कि छोटे की शिकायत सुनना और बड़ों को कुछ भी नहीं पूछना कि साथ वाले साधु ने विनय भाव कैसा रखा ? यह घोर अन्याय आगम विपरीत भी था और नीति व्यवहार विपरीत भी। किंतु ऐसा सोचकर उपेक्षा करनी ही थी कि हम ३० वर्ष के जवान अपने स्वभाव को मोडें, अब ६० वर्ष के वृद्धों से

अच्छा होने की क्या अपेक्षा रखना । वहाँ वंदना कर उठना ही बाकी था । मैंने गुढदेव से इतना ही निवेदन किया कि मेरे से जो भी अपराध बना मुझे १० दिन के लिये ४ विगय(दहीसिवाय) त्याग करा दीजिये । आग्रह युक्त निवेदन से गुढकृपा हो गयी । मैंने अशुभ कर्मोदय में कर्म निर्जरा का यही उपाय झट निकाल लिया । सभी संत मेरे छाछ रोटी, दही रोटी और पानी रोटी खाना देख स्तब्ध और आश्चर्य चकित थे, पर मैंने परिपूर्ण मौन भावपूर्वक दस दिन निकाले । तब गुढदेव सीधे बोलने शुढ हुए, मैने पच्चक्खाण पूर्ण कर एक संत को आज्ञापूर्वक लेकर मालवा तरफ विहार किया ।

साथ का संत महिना भी शांति से नहीं चला अविनय व्यवहार जिद्दाजिद्दी हकुमत आदि चालू हो गये । बडी मुश्किल से शेषकाल बीता। श्री मथुरामुनिजी ठाणा-२ से मिले । संतों को अदलबदल कर हमने दो चातुर्मास किये । मैने तथा श्री गिरधारीमुनिजी ने मंदसौर और श्री मथुरामुनिजी तथा श्री हुकममुनिजी ने सैलाना किया । चातुर्मास बाद फिर मिले । संत अदल बदलकर हम मेवाड की और चले । नवमा चातुर्मास मेरा नाथद्वारा श्री सागरमुनिजी के साथ हुआ । गले मे अत्यंत वेदना थी । बोलना कम होता था । **आठवें मंदसौर चौमासे से दांतों में पूर्ण पायरिया चालू था।** दवा और डॉक्टर का परहेज चालू था । सर्दी में सनवाड में ५-६ उपवास के साथ स्वमूत्र चिकित्सा भी करी । कोई फर्क नहीं पडा । कई कारणों से अनुभव से मुझे मेरी उम्र ३३ वर्ष ही लगती थी । अत: कोई दोष या डॉक्टर परिचर्या मंजूर नहीं थे । नाथद्वारा के प्रमुख श्रावकों को इसका बहुत दुख था । एकबार वे ज्योतिषी को लेकर आ गये और ३३ वर्ष की बात का खुलासा करने पर उतर गये । आखिर मुझे मेरे विचार रखने पडे । तब ज्योतिषी ने सिद्ध कर बताया कि आपकी उम्र ३३ नहीं ७० तक चलेगी। आप शरीर पर ध्यान देवें ।

नवमे वर्ष की विशेषताएँ : मैंने सनवाड में पू. लालचन्दजी म.सा. की सेवा में आचारांग सूत्र की वाचना लेकर कंठस्थ किया । उस वर्ष के नवमें चातुर्मास नाथद्वारा में तीन छेद सूत्र आ.श्री घासीलालजी म.सा.की बडे अक्षर की पुस्तक से रात्रि में सुदी आठम से वदी आठम तक चन्द्र के प्रकाश में १५ दिन में कंठस्थ किये । बृहत्कल्प ६ दिन में, फिर व्यवहारसूत्र ५ दिन में तथा अंत में निशीथ चार दिन में कंठस्थ किया ।

नाथद्वारा चातुर्मास पूर्व मंदसौर में करीब दो कि.मी. उपर से अभिधान राजेन्द्रकोश मैं अकेला उठा कर तीन-चार दिन में लाया । और यहा वे कोश सहज मिल गये थे ।श्रावण भादवा संवत्सरी तक ५० दिन में पूरे सात भाग की प्रत्येक लाइन देखी और उस पूरे कोश का आगम कोश बनाया । उसमें जहाँ जहाँ ३२ आगम के टीका आदि उद्धृत थे उन सब की पृष्टांक सूत्रांक आदि सहित टीकांश स्थलों की शब्द निर्देश के साथ नोध ली । फिर उसके आधार से अनेक शास्त्रों के सूत्रांक (सुत्तागमे के) सहित क्रम से लिस्ट तैयार करी ।

नाथद्वारा में हमारा, उपाश्रय के प्रथम मंजिल में रहने का स्थान था । नीचे ग्राउन्ड फलोर में बाहर दुकानें थी । उनमें एक लाउडस्पीकर की दुकान थी जहाँ दिन-रात अधिकतम रिकार्ड चालु रहती थी । जिसमें 'सौतेली मां का' संगीत मुख्य था अन्य सैकडों भजन थे । उससे मैंने कभी खीझना नहीं किया किंतु अपना स्वाध्याय क्रम चालु रखा । एक बार प्रतिक्रमण के बाद मैंने एक घंटे में पूरे उत्तराध्ययनसूत्र की स्वाध्याय करना तय किया ।पूरे घंटे भर जोर से रिकोर्ड चलती रही और मैने अपने संकल्प प्रमाणे एक घंटे में पूरे उत्तराध्ययन की सज्झाय अकेले ने ही करी । इस प्रकार नाथद्वारा चातुर्मास में अत्यधिक मौन के साथ अनेक उपलब्धियाँ रही ।

इसके अतिरिक्त मारवाड बिलाडा में भी एक बार मैंने श्री प्रकाशमुनिजी से **अनुयोगद्वारसूत्र** की वाचना ली और उसी वर्ष के आस-पास **सूर्यप्रज्ञप्ति** की टीका उन्हीं की आज्ञा से उन्हीं की निश्रा से स्वयं पढी । यों मेरे ३२ सूत्रों का अध्ययन एवं टीका आदि का पूर्णज्ञान १० वर्षकी दीक्षा तक पूर्ण हो गया था । छेदसूत्र, प्रज्ञापना, भगवती आदि अनेक शास्त्रों की वाँचना पूज्य समर्थ गुढदेव के सांनिध्य से एवं स्वत: हुई । गणितानुयोग रूप भूगोल खगोल के शास्त्र प्रथम चातुर्मास में प्रोफेसर संपतराजजी ढाबरिया(भिणाय) के साथ बैठकर पाली में गणित विस्तार से अभ्यस्त किये थे । संस्कृत प्राकृत तो बीकानेर वैराग्य काल में कर चुका था । इसलिये अध्ययन में कहीं भी ढकावट नहीं आई क्यों कि स्कूल का विषय भी गणित फिजिक्स केमेस्ट्री का ही था ।

नाथद्वारा चातुर्मास बाद विहार : मेरा और श्री हुकममुनिजी का विहार मारवाड तरफ हुआ । पाली में जैन डॉक्टर का संयोग हुआ । स्थान में

आकर खडे-खडे दांतों का उपचार चालू किया । तीन चार दिन में उसका कार्य पूर्ण हुआ । १०-१५ दिन मैने विटामिन सी की गोली चालु रखी । दांतों में दुर्गंध मिटी, शांति होने लगी । दो प्रकार के पेस्ट डॉक्टर ने बता दिये थे । साधु समाचारी से जहाँ मिले तो रोजाना दो समय करना था । यथासंयोग १-२ वर्ष पेस्ट चालु रखने से पायरिया साफ हो गया। जिससे ३०वर्ष की उम्र से ५०वर्ष तक दांत की तकलीफ बिना निकला, बिना पेस्ट मंजन के । ५०की उम्र के बाद एक के बाद एक करके दुखने से दांत का उपचार-ओपरेशन चालु रहा जो आज तक शीर्फ १-२ असली दांत डाढ है, कहीं खाली और कहीं नकली है । तरकीब से योग्य आवश्यक खाना खा सकता हूँ ।

वहीं पाली में पूज्य तपस्वीराजजी मिले, श्री हुकममुनिजी को पूछा, कैसे रहे ? उन्होंने स्पष्ट कह दिया इनके साथ में महादुखी हो गया। अब क्या शेष था । मेरे लिये गुढदेव तपस्वीराज की अपार वर्षा चालू हो गयी । मुझे गच्छ से विरक्ति में संयोग बढते गया । बाहर ऊफ भी नहीं करना अंदर **एकलविहार के संकल्प पुष्ट होते चले ।**

फिर महात्मा जयंतिमुनि के साथ ग्राम्य विहार का प्रसंग बना । गवेषणा की उत्कटता से छोटे गामों में धोवण का संयोग उन्हें अच्छा नहीं रहा, खराब विचित्र धोवण पीने मनोज्ञ नही लगे । मेरे साथ की हैरानी जोधपुर पहुँचने पर तपस्वीराज के सामने अलग भाषा में महात्माजी ने रख दी । मुझे तो अपने अशुभ उदय को बिना किसी प्रकार की लीपापोती-स्पष्टीकरण के सहन ही करना था । किसी को भी अपने मन का दुख कहा जाना शक्य और उचित नहीं था । उसमें मेरी और गच्छ की शान खराब ही होनी थी । दुख इतना ही था कि गच्छ संभालने वाले विनय अविनय अनुशासन को कुछ भी मुख्यता नहीं देते थे ।

जोधपुर में २२ महिना पेट, गले की बिमारी-ओपरेशन एवं दवा में समय बीता । अंत में आयुर्वेदिक परपट्टी आदि दवा से स्वास्थ्य अच्छा हुआ । छत्तीसगढ की विनती मांग से रायपुर जाना तय किया । बालोतरा चौमासा उठाकर जोधपुर से श्रीबसंतीमुनि की दीक्षा के दूसरे दिन (मिगसर वदी छठ के दिन) चार संतों ने विहार किया । आगे श्रीराममुनिजी मेरे साथ चले । छत्तीसगढ में श्रीमथुरामुनि, श्रीराजेशमुनि दो संत थे । श्रीराजेन्द्र मुनिजी दिवंगत हो चुके थे । रायपुर चातुर्मास की उन्हें विनती थी तो

उन्होंने शर्त रख दी कि तिलोकमुनिजी आवे तो चातुर्मास के लिये ढकूँगा अन्यथा छत्तीसगढ छोडकर मारवाड जाना होगा ।

रायपुर में मेरे पारिवारिक अनेक घर थे सगे भाई, काका बाबा के भाई, मासा, मामा, सगी बडी बेन, बडे पिताजी की लडकी बेन यों परिवार तथा खीचन गांव के करीब ३० परिचित घर थे । मैं नवमी कक्षा रायपुर में पढा था । दो वर्ष दुर्ग में पढा था राजनांदगाँव बालोद वगेरे में भी परिचित थे । अत: जाना अनेक अपेक्षा से जरूरी बन गया था । इन्दौर धार तक आराम से गये आगे रस्ता विकट था । लम्बे विहार गौचरी दुविधाएँ सभी पार करते चले । नागपुर से ४ मील पहले विद्युत बोर्ड के ४०० बंगले थे । पगी की गेर हाजरी में हम उसमें घुस गये । दिन अस्त होने का समय आ गया था । उसमें कोई जैन नहीं मिला । फिर भी एक मद्रासी ने अपने एकस्ट्रा ब्लोक ग्राउन्डफलोर खाली मकान में ठहाराया था । फ्लेट वालों ने उपर शिकायत कर दी कि किन्हीं अनजान लोगों को ठहरा दिया । उस ठहराने वाले पर फोर्स आया । वह शराब पी चुका था । उसने आठ बजे वापिस आकर हमें निकलने का बारंबार निवेदन किया । समझाते हुए भी आखिर हमें ९ बजे निकलना पडा । सीढियों के नीचे ठहर गये । वहाँ भी लोगों ने हुज्जतें करी, रहने नहीं दिया, ठोकरें मारने लगे । आखिर साडे नव बजे के बाद मकान छोड रस्ते पर आ गये । सामने बंगलों का संचालक प्रमुख मिला। बहस हुई, डांट लगाई तब उसने साथ चलकर स्कूल में ठहराया । तब तक १० बज के २० मिनट हो चुका था ।

सुबह नागपुर गये । राजनांदगाँव के लोग आये। माघ की पूनम के बाद आगे चले, भंडारा पहुँचे । श्री राममुनिजी हैरान परेशान हो चुके थे। आगे बढने की जगह पीछे चलने का बोलने लगे । बहुत समझाया, कुछ नहीं चला मेरे अशुभ कर्म तीव्रोदय आ चुके थे । आखिर मैने छ दिन के अनशन की धमकी देकर उपवास प्रारंभ किया । १५० किलोमीटर ही राजनांदगाँव रह गया था किंतु मामला उलझ गया । १-२ उपवास बाद कुछ परिवर्तन हुआ और दु:खे दु:खे-मन बिना विहार आगे चला । राजनांदगाँव होली के १५-१८ दिन पहले पहुँच गये । दोनों ने व्याख्यान शुरू किया । मैंने १२ व्रत की अपनी बनाई ढाल से विवेचन किया ।

पू. मथुरामुनिजी म.सा. विचरने के पूर्ण सौकीन थे । अपना वादा भी भूल गये । हमे परेशानी में सहयोगी भी जरूर बने । उनका वादा था कि तिलोकमुनि आवे तो में नागपुर तक सामने लेने जाउँगा । किंतु राजनांदगाँव भी मिल जाते तो गनीमत । वे तो अपने मस्ती में राजनांदगांव से भी २००-२५० कि.मी. दूर विचरने चले गये। आखिर हमें ही आगे बालोद तरफ विहार करना पडा । भंडारा-राजनांदगाँव के बीच एक जगह ८० कि.मी. तक घर नहीं थे । हम ३५ कि.मी. एक दिन गुड गर्म पानी से चले । फिर दूसरे दिन भी वैसे ही ३५ कि.मी. चलकर स्कूलादि के बरामदे में ठहरे । तीसरे दिन १० कि.मी. चलने पर ४-५ जैन के घर सामान्य गाँव आया । श्री राममुनि को रोटी के साथ साग जरूरी होने से मैने अपनी गच्छ समाचारी विढद्ध कंदमूल की सब्जी ग्रहण की, उन्हें संतोष मिला ।

होली चौमासी हमने राजनांदगाँव की और महावीर जयंति श्री मथुरा मुनिजी के साथ बालोद करी। तदनंतर पुन चारों संतो का राजनांदगाँव आना हुआ । रस्ते में अर्जुंदा गुंडरदेई गाँव थे । गुंदरदेई में जैन ४-६ घर थे । श्रीमथुरामुनिजी के साथ में भी गोचरी में था उनकी दीक्षा का १४वाँ चातुर्मास और मेरा बारहवाँ चातुर्मास रायपुर होना था । गौचरी मे सुबह नवकारसी के समय एक घर में करीब २५-३० आइटम पापड सहित थे। श्रीमथुरामुनिजी ने नि:शंकतापूर्वक जो मन भाया लिया । आधे घर कल के लिये रखे । दूसरे दिन गोचरी हम दोनों साथ गये । मैंने कहा-कल फरसे घर में चलें परीक्षा करें, गये । चूला ठंडा पडा था कुछ नहीं । बहिन बर्तन मांज रही थी उसने पूछा-क्या चाहिये ? मैने कहा-पापड सूजता है, बहिन सरमाई फिर कहा-घर कल फरसा है, मैने कहा-अच्छा, यों बोलते हुए हम निकल गये । छोड रखे घरों में श्रीमथुरामुनिजी ने पूर्ववत् गोचरी करी । वहाँ से विहार कर हम अर्जुंदा आये वहाँ रतलाम के झब्बा लालजी वैरागी हमारे साथ थे । उनके साले उन्हें दीक्षामें अंतराई बनकर ले जाने आये थे । संतों को अयोग्य बोले तो सामायिक वाले वृद्ध श्रावक ने उन्हें टोका तो उसे धक्का देकर गिरा दिया। हल्ला सुनकर तमाशा देखने के लिए बच्चे इकट्ठे हो गये थे । किसी ने जाकर श्रावक के घर में समाचार दे दिये । श्रावकजी के पुत्र आये और उस

वैरागी के साले बसंतीलाल नलवाया की खूब पिटाई करी । वह पुलिस रिपोर्ट करने भागा, रस्ते में राजनांदगाँव के श्रावकों के आने का संयोग हो गया । समझाकर उसे रतलाम रवाना किया । फिर राजनांदगाँव में दीक्षा थी वहाँ रायपुर का चातुर्मास खोल दिया । पुखराजजी गोलेच्छा बालोद दर्शन वार्ता करने आ चुके थे । महावीर भवन नया बन गया था। उसी में चातुर्मास करने की श्रीमथुरामुनिजी की एक शर्त थी दूसरी शर्त गोचरी तीनों टाइम मुझे करनी थी । कुछ टीप टाप के काम महावीर भवन के बाकी थे तो चातुर्मास खुल जाने से फुर्ती से होने लगे । प्रवेश तक पूरे काम नहीं होने से थोडे दिन समता संघ के धाडीवाल भवन में रहे । खीचन का एक लडका अधूरा वैरागी रायपुर से बालोतरा गया था । श्रीप्रकाशमुनिजी के पास बातें बनाते कह दिया कि हमारा चौमासा खुल गया है स्थानक का काम जोर शोर से रात दिन चल रहा है । कानों के कच्चे हुकम लिखा दिया कि इस वर्ष चौमासा महावीर भवन में नहीं करें ।

अब पुखराजजी, भीखमचन्दजी आदि और श्री मथुरामुनिजी दुविधा में पड गये । धाडीवाल भवन में चौमासा नहीं करना था, थोडे दिन के लिये ही वह था । रायपुर चौमासा कंसल करने की नौबत आ गई । गच्छ की शान बिगडते देख मैंने कहा कि यह केश मेरे हाथ में दे दो, मैं चिट्ठी लिखाउँ वैसे लिख दो, रस्ता निकल जायेगा, सबने मंजूरी दी।

मैने श्री प्रकाशमुनिजी को उपालंभात्मक निवेदनपत्र लिखाया कि इतने दूर विचरण करने वाले संत कितना कष्ट सहन कर गच्छ की शान जाहो-जलाली करते है उसमें अचानक बदला-बदली कर ऐसी आज्ञा लिखाना उचित-योग्य नहीं होता है । जब कि मैं आपको पूछकर चला था कि महावीर भवन बनेगा उसमें चातुर्मास करना कल्पेगा ? आपने हाँ भर दी थी । अब दूर की बात वहाँ विचरने वालों के विलपावर पर नहीं रखकर ऐसा अविचारी हुकम लिखा देना पुनः विचारणीय है । यह पत्र बालोतरा रवाना किया और एक पत्र जसनगर विराजमान तपस्वीराज की सेवा में भेजकर आज्ञा महावीर भवन की मंगाली । काम हो गया। पर श्री प्रकाश मुनिजी ने मेरे प्रति जिंदगी भर की मन में गांठ बांधली अर्थात् हमारी घनिष्टता में उन्होंने खटाश रखली जो जिंदगीभर कभी छोडी नहीं । तथापि छत्तीसगढ में गच्छ की शान रह गई, चौमासा

केंशल नहीं होने से गच्छ की फजीती होती बच गई ।अब श्रीमथुरामुनिजी का हमारा चातुर्मास रायपुर महावीर भवन चल रहा था । गोचरी तीनों समय मेरे जिम्मे थी क्योंकि श्रीमथुरामुजिनी को अपनी गोचरी गुंडरदेई की गलती खटक गई थी । मैंने सहर्ष तीनों टाईम गोचरी, प्रातःकालीन धार्मिक क्लास ८० विद्यार्थी की, दुपहर में दस महासतीजी को भगवती सूत्र की वाचणी दो-ढाई घंटे की एवं प्रतिक्रमण बाद प्रश्न चर्चा १४ नियम भी नियमित करवाना स्वीकार किया । सारा कार्यक्रम अच्छा चल रहा था, पर्युषण के दिन आ गये । मेरे व्याख्यान की प्रेरणा संबंधियों के द्वारा होने से श्रीमथुरामुनिजी ने तूल देकर मुझ पर हुकम लगा दिया, जो अपेक्षा से उचित था । क्यों कि मेरे संबंधी पारिवारिक लोगों की ५०-६० जन- संख्या थी । उपरोक्त सारी जिम्मेदारी के साथ व्याख्यान का भार पडने से और मुझे व्याख्यान वांचने में शारीरिक सुविधा नहीं होने से स्वास्थ्य बिगडने लगा । सांस धडकन बढने लगी । ताव सरीखा भी होने लगा, मेरे सारे कार्य छूटने लगे-बेकार होने लगे ।

मैं खीचन के मालुजी जो हलवाईलेन में सोने-चांदी की दुकान चलाते थे उन्हें सारी हकीगत समझाकर देशी दवा ले आया। श्रीमथुरा मुनिजी को दिखा दी गई । उन्होंने मालुजी को मना कर दिया, जवान साधु को ऐसी दवा नहीं देनी चाहिए । जब कि ये दवाएँ मैं जोधपुर में लेकर ही ठीक होकर आया था परंतु श्रीमथुरामुनिजी को समझ में नहीं आने से और उनका छतीसगढ में वर्चस्व होने से खीचन के होते हुए भी उन्होंने(मालुजी ने) दवा देनी बंध कर दी । मेरा स्वास्थ्य सुधरने लगा था, वह बिगडने लगा । संवत्सरी को बहुत निवदेन करने पर भी श्रीमथुरा मुनिजी धुन के पक्के और दयार्द्र हृदय के नहीं होने से एक नहीं सुनी । मैंने संवत्सरी का उपवास का पारणा नहीं किया और गोचरी छोड दी और उपवास आगे बढाकर स्वमूत्र चिकित्सा शुढ कर दी ? फिर भी श्रीमथुरामुनिजी ने गौचरी का कार्य नहीं लिया । निष्ठुरता रखी और नव दीक्षितों से रायपुर की गौचरी मंगाई । २-३ दिन बाद मुझे कुछ ठीक लगा, पारणा किया, गौचरी आदि कार्य शुरू किये पर ज्यादा अनुकूलता नहीं होने से नीचे घरों की गौचरी करी, उपर चढने के घर छोडने पडे । श्रीमथुरामुनिजी की निष्ठुरता देखकर मेरे एकलविहार के संकल्प और

दृढ बने । मैं गच्छ के विहार से विरक्त बना । चौमासा उठते उठते विशाखापटनम फरसने की विनती और अगला चौमासा दुर्ग की विनती ने जोर पकडा । श्रीमथुरामुनि विशाखापटनम विजयनगरम के लोगों को यह कहने लगे कि श्री तिलोकमुनि चले तो मैं आ सकता हूँ । जब कि मैं तो अंतरमन में टूट चुका था । पर यह बात गृहस्थों को कहना और गच्छ की शान खराब करना मेरे स्वभाव में नहीं था । मैं श्रीमथुरामुनिजी के सारे व्यवहारों को घोटकर पी गया । बाहर ऊफ भी नहीं किया । रायपुर दुर्ग के मेरे परिवार के लोगों को मेरा मना करना बहुत खराब लग रहा था फिर भी अनेक उपालंभ सुनकर मैं अंतर्दुःख की बात किसी को नहीं कह सका। सभी लोग मेरी जिद्द मान कर हतास थे । विशाखापटनम वाले भी मेरे खीचन गाँव के बहुत थे । किसी को मेरी बात समझ में नहीं आने से नाराज रहे । खुद मेरे रायपुर दुर्ग के पारिवारिक भाई बहिनों को भी मैने अंतर दुख की बात नहीं की । पुखराजजी भी बहुत हतास नाराज रहे । मैने सर्वत्र तबियत ठीक नहीं रहने से मारवाड जाने का उत्तर बना रखा था । चौमासा उठा, दुर्ग राजनांदगाँव में सभी का मेरे प्रति असंतोष था। संतों का छत्तीसगढ छोडने का कलंक भी मेरे पर था। फिर भी मैंने गच्छ की शान के लिये दिल की सच्ची बात किसी के सामने नहीं रखी।

राजनांदगाँव से मेरे साथ **श्रीराजेशमुनि मारवाड के लिये चले** और श्रीमथुरामुनिजी श्रीराममुनिजी महाराष्ट्र के लिये चले।नागपुर पहुँच कर श्रीमथुरामुनिजी क्या अकल चलाई कि जिससे मेरे पास बेतूल में तार पहुंचे धींगडमलजी पूरणचन्दजी के नाम से कि तुम मारवाड नहीं आवो महाराष्ट्र श्रीमथुरामुनिजी के साथ विचरो । तार पहुँचाने वाले बेतूल के श्रावक जवाब देने का बार बार कहते । एक दो दिन बाद जब श्रावकजी घर में नहीं थे तब मैंने घर वालों को समझाकर एक सातवीं कक्षा के बच्चे को लाकर पत्र लिखवा कर तपस्वीजी म.सा. की सेवा में पोस्ट करवा दिया। इस पर श्रीराजेशमुनि उतावल करने लगे कि मुझे महाराष्ट्र नहीं चलना, उपर से देवता आकर कह दे तो भी । जल्दी विहार करें मारवाड चलें । मैने कहा-हुकम अपने पर महाराष्ट्र जाने का है । मैं एक कदम भी आज्ञा विपरीत मारवाड तरफ नहीं चल सकता । शांति रखो पत्र का जवाब आने दो ।

मेरा पत्र विस्तृत विगत के साथ गुढदेव को मिला तुरंत हमें मारवाड आने की आज्ञा लिखा दी । बेतूल जवाब आज्ञारूप में आने पर ही मैंने मारवाड तरफ विहार किया । अब श्रीमथुरामुजिनी चुपचाप दो ठाणा से महाराष्ट्र विचरने लगे । कभी मारवाड नहीं आये । आखिर मेवाड में ही ठाणापति रहे । क्योकि मेरी सूझबूझ एवं पहुँच के आगे उन्हें सर्वत्र शर्मिंदा होना पडा ।

मारवाड में श्रीप्रकाशमुनिजी ने मेरी अनुपस्थिति में पूज्य तपस्वीराज को हैरान करना पुर जोरों पर शुढ कर दिया । धोंस जमाते और बाप बेटे निकल जाने की धमकी देते । इसी हुज्जत में जालोर से सांचोर तरफ बाप बेटे निकलकर नाराजी दिखाकर चले गये। थोडे ही समय में श्रावकों ने बीच बचाव कर उन्हें वापिस लाया गया । मेरे को मारवाड आना जरूरी था । मैं श्रीप्रकाशमुनिजी को और पू.तपस्वीराजजी दोनों को समझाकर बीच बचाव करता था । **श्रावक लोग एकांत श्रीप्रकाशमुनिजी का पक्ष लेकर तपस्वीराज को दबाते थे ।** जिससे श्रीप्रकाशमुनिजी ने अपनी जिद वसात पत्रिका छपी हुई ६ दीक्षा को रोक लगा दी । फिर दोनों का साथ में खीचन चौमासा हुआ और मुझे जोधपुर महामंदिर श्रीफूसालालजी म.सा.की सेवा में रखा। दीक्षाएँ एक साल के लिये पूर्ण बंद कर दी गई थी । खीचन चौमासे में पू. तपस्वीराज को लोगों से बहुत उपालंभ सुनने पडे । तपस्वीराज का हृदय रो उठा । उन्होंने दीक्षा बंद करने के श्रीप्रकाश मुनि के फरमान का विरोध शुढ कर दिया । दोनों लडते झघडते जोधपुर रायपुर हवेली पहुँचे । मिटिंगों पर मिटिंगें हुई । श्रीतपस्वीराजजी पक्के अड गये कि बाप-बेटे कल जाना हो तो आज जाओ, दीक्षा कभी नहीं ढकेगी। अब श्रीप्रकाशमुनिजी को खीझने के सिवाय कुछ नहीं बचा था। फिर भी जिद्दी अपनी बात नहीं छोडते। तब मैने एक उपाय निकाला– पू. सौभागमलजी म.सा. के साथ सभी युवक संत– अमृतमुनि, वसंतीमुनि, लक्ष्मीमुनि, प्रवीणमुनि आदि संतों की मिटिंग कर तय किया कि श्रीप्रकाश मुनिजी, श्रीतपस्वीराजजी के कंधे पर पिस्तोल रखकर चलाते है और वे कंधा खिसका ले तो नाराज होकर भागने का डर दिखाते हैं तो श्रीप्रकाशमुनि को आचार्यपद देकर पू. तपस्वीराज को जिम्मेदारी से मुक्त कर दें । तभी पूरी सत्ता श्रीप्रकाशमुनि के पास हो जाने पर फिर इन दोनो की माथाकूट

नहीं रहेगी। हमने बात पास करने के लिए मिटिंग में रखी कि हम सभी संत दस्तक करने के लिये इसमें सम्मत हैं ।

श्रावकों को और तपस्वीराज को भी बात जंची । किंतु श्रीप्रकाश मुनिजी ने तुरंत बात काट दी कि मुझे आचार्य नहीं बनना है श्रीत्रिलोकमुनी को बनना हो तो बना दो । मैंने बहुत समझाया आपकी योग्यता है तभी हम कहते है मेरी तो किंचित भी क्षमता नहीं है । फिर तपस्वीराज से हुजत चलने लगी एक दो दिन में बाप बेटे के विहार का तय होने लगा। दूसरे दिन मिटींग मे तपस्वीराज को श्रीप्रकाशमुनिजी ने भलाबुरा सुनाया। यह भी कहा– अब संप्रदाय को छट्ठा आरा लग गया है । फिर बात बात में तपस्वीराजजी को कहा कि आपको घणा भटका आयेगा अर्थात मेरे निकल जाने के बाद बहुत पछाताओगे । मैंने उस समय कहा– कि ऐसा बोलना अच्छा नहीं है । भगवान महावीर भी चले गये, गुढदेव समरथमलजी म.सा. भी चले गये तो भगवान का शासन चलता ही है । आप ऐसे गर्व भरे वचन मत निकालो । तो मेरे उपर श्रीप्रकाशमुनिजी टूट पडे– लो यह आपका चेला तैयार हो गया है गच्छ संभालेगा अब मेरी कोई जरूरत नहीं, यों कहकर अपना विहार तय रखने लगे। तपस्वीराज के ज्यादा आग्रह से श्रीतेजमुनिजी को साथ में ले जाना तय रहा । विहार कर पाली गये, मैं तो जोधपुर ही रहा । तपस्वीराजजी भी पाली पहुँचे । वहाँ से संबंध विच्छेद कर अलग विहार की बातें चली । आखिर १ वर्ष के लिये वसंतीमुनि–लक्ष्मीमुनि को पढाने के बहाने श्रीखुशाल मुनिजी के नाम से लेजाना मंजूर किया । श्रीप्रकाशमुनि अब गच्छ से मुक्त मेवाड मे विचरने लगे । मैं जोधपुर श्रीफूसालालजी म.सा. की सेवा में रहा श्रीसौभागमलजी म.सा. भी जोधपुर रहे । तपस्वीराजजी म.सा. कोटा तरफ विचरने गये श्रीप्रकाशमुनिजी ने वल्लभनगर चातुर्मास करना तय किया । मैंने समाचार कहलाये कि लालचन्दनी म.सा. मेवाड में हैं उनके पास से चौमासा खोलाना, तो व्यवहार अच्छा रहेगा परंतु उत्तर स्वच्छंदता का रहा। लाल चन्दजी म.सा. से मिले भी परंतु आहार पानी अलग रखा। फिर खुद ने ही चातुर्मास खोला ।

इधर जोधपुर मे मैंने पू.सोभाग्यमलजी म.सा. के सांनिध्य में सारी गच्छ व्यवस्था संभाली । श्रीपारसमुनि को व उसकी माताजी को

और एक बहिन को जोधपुर में दीक्षा दी । श्रीपारसमुनि को पूर्ण रूप से संभालने की एवं पढाने की जिम्मेदारी श्रीसौभाग्यमलजी म.सा.ने मेरे पर डाल दी । श्रीपारसमुनिजी समर्पित होकर अध्ययन और संयम विकास करने लगे। एक वर्ष में अनेक तरह से योग्य होने लगे । साडे बारह वर्ष की उम्र में उनकी दीक्षा हुई । महाराष्ट्र के थे दिनभर में एक गाथा मुश्किल से याद करते थे । १-२ महीने में तो उन्हें २० गाथा दिन की याद होने लगी । उनका खानपान रहन सहन गौचरी साथ में जाना आदि सारा मेरे अनुशासन में था ।

एक वर्ष पूरा हुआ । उधर **श्री बसंतिमुनि, श्री लक्ष्मीमुनि का भी एक वर्ष** हो रहा था । राजकोट में **श्री धीरजमुनि** अपने पिताके साथ महात्माजी के पास दीक्षा लेना चाहते थे । मारवाड आये, जोधपुर में बातचीत हुई, मैने श्रीप्रकाशमुनिजी के पास वार्ता की सलाह दी वल्लभनगर जाकर बात की। श्रीप्रकाशमुनिजी ने साफ कह दिया में अभी गच्छ से बाहर हूँ मैं कुछ नहीं कह सकता । तुम जोधपुर ही बात करो । फिर हमने उनकी दीक्षा तय कर दी ? दीक्षा के बाद आहार पानी अलग या सामिल का प्रश्न आया क्यों कि उन्हें गोंडल संप्रदाय के नाम से दीक्षा दी गई थी ।श्रीप्रकाशमुनि ने जसवंतभाई को कोई जवाब नहीं दिया तो मैने सामिल आहार की आज्ञा दे दी । क्यों कि नवदीक्षित तथा अपनी संपूर्ण समाचारी वाले और हमने ही दीक्षा दी तो आहार सामिल रखना योग्य होगा अत: वह निर्णय क्रियान्वित रहा । पात्र की प्रतिलेखना कोई कारण से १ बार चल गई थी तो मैंने सभी सिंघाडों में दो बार करने की सलाह सूचन भेजकर सब की स्वीकृति से दो बार चालू करवा दी । जो श्रीप्रकाश मुनि जी की जिद्द से विपरीत थी । एक वर्ष के बाद जोधपुर सेवा में श्रीबसंतमुनि, श्रीलक्ष्मीमुनि की बारी थी किंतु उन्हें पाली से श्रीप्रकाशमुनिजी एक वर्ष के लिये ले गये थे। अब स्वत: भेज देना था किंतु नियत बदल गई थी । मैने सेवा के नाम से दोनों भाई को बुलाने हेतु पत्र दिये, उपेक्षा करने पर तार दिलाने शुरू किये । गाँव गाँव में चिट्ठी-तार द्वारा संतो को सेवा में बुलाया जाने लगा। जिससे उन्हें भेजने के लिये विवश होना पडा। मन नहीं होने से ऐसा बोलने लगे कि तुम दोनों भाई जाओ फिर वापिस कभी मैं जिंदगी भर तुम्हें नहीं रखूँगा।

श्रीबसंतिमुनि ने देखा कि दोनों गये तो फिर नया चांस नहीं मिलेगा, तो बिना पूछे अकेले ही विहार करके जोधपुर आ गये और बोले कि मैं अकेला ही दो का सेवा कार्य कर लूँगा । मन में डर भी था कि श्रीतिलोक मुनि अकेले को नहीं रहने देंगे तो । पर मैने आग्रह नहीं रखकर अकेले आये तो भी स्वागत रखा । उन्हें सेवा कार्य संभलाकर मैं श्रीपारसमुनिजी को लेकर विचरने चला । सैकडों हजारों प्रश्न इकट्ठे हो गये थे इसलिये श्रीप्रकाशमुनिजी के पास जाना था । वे मेवाड छोडकर पिपाड भावी बिलाडा तरफ आ गये थे ।

पारसमुनिजी के उत्तराध्यान दशवैकालिक अर्थ सहित कंठस्थ हो गये थे । अब आचारांग चालु था । श्री सौभाग्यमुनिजी म.सा. की **आज्ञा से पारसमुनि को लेकर मैंने विहार किया** और पींपाडसिटी पहुँचे। **पूज्य प्रकाशमुनिजी म.सा.ठाणा ४**से वहीं थे । स्थानक में साथ ही ठहरे वंदन व्यवहार रखा । गौचरी साथ में ले जाते । अलग गौचरी दिलवाकर अलग आहार करते । अन्य संप्रदाय की महासतीजी भी दुपहर को पधारते ज्ञानचर्चा रूप मे वाचणी का समय पूर्ण होता । मेरे प्रश्न भी चलते । एक दो दिन बाद मन से काया से हावभाव से प्रश्न नहीं पूछने का ईशारा करने लगे । मैंने निवेदन किया- मेरे प्रश्न शंकाओं का समाधान एवं योग्य सुझाव सलाह मांगने पर देते रहेंगे तो आप इस तरह भले अलग चलते रहें । मैं आकर प्रश्न पूछकर चला जाउँगा। मन में पवित्रता नहीं होने से सीधा उत्तर नहीं मिला । मैंने कहा- मैं एक ४० पृष्ट का निवेदन लिखकर लाया हूँ (वह भक्ति गुणग्राम युक्त संबोधनों युक्त हितावह शिक्षा संदेश सुझावरूप था।) उसे ध्यान पूर्वक पढलें फिर जो उत्तर भाव फरमायेंगे उसे मैं स्वीकार कर चला जाउँगा । उत्तर टेडा मिला कि नहीं पढना । मैंने कहा-आप पढ लेंगे तो मैं इसे(शिक्षा निवेदन को)फाड दूंगा अन्यथा अन्य साधु-साध्वी श्रावक आदि को पढाउँगा । लिखा तो सिर्फ आपके लिये है । जिद तो रखी ही, बाकी बोली में कोई कटुता नहीं रखी, यह तो सदा की चाल थी ही ।

आखिर मैने साथ के संतो को श्रीतेजमुनि, श्रीलक्ष्मीमुनि को पढ कर सुनाया वातावरण दूषित हुआ । मेरे प्रश्न पूछने पर टालने का नाटक और अन्य सतियों,श्रावक को जवाब बराबर देते । दूसरे दिन गौचरी

उसी विधि से लाकर गौचरी करने बैठे । हमारा मांडला पास-पास में अलग था । तेजमुनि को उन्होंने आहार दिया । वे भडक उठे- यह क्या नाटक है- मैं भी ज्ञानगच्छ का, ये संत भी ज्ञानगच्छ के; इन्हें अलग क्यों ? पात्री आहार की पटक कर कह दिया कि मुझे भी तुम्हारे साथ आहार नहीं करना इनके साथ ही करना । मेरी लिखी सामग्री बहुत कुछ उनके दिमांग में भर गई थी । श्रीप्रकाशमुनिजी ने गच्छ में जोधपुर पत्र लिखा कर शिकायत करी। अब हम गाँव गाँव साथ रहते विचरते आगे बढते गये। जोधपुर से धींगडमलजी, पूरणजी, जशवंतभाई आये । पंचायत ए क पक्षीय करने लगे । मैंने स्पष्ट कहा कि मैं गच्छ को जमाने की युक्ति करता हूँ और ये गच्छ छोडकर प्रकाश गच्छ चलाने की फिराक में युक्ति करते है तो भी आप इन्हें सच्ची सलाह नहीं दे कर मेरे पर हुकमबाजी इनके दबाव से करते हो, यह उचित नहीं है । ये यदि हमें ज्ञान एवं सुझावों की मदद करने की उदारता नहीं करेंगे तो मैं भी गच्छ में जोधपुर नहीं आकर अन्यत्र बीकानेर आदि अन्य संप्रदाय मे जाने की युक्ति करूँगा। अत: आप लोग गच्छ का भला चाहो तो इन्हें तपस्वीजी म.सा.की विनय भक्ति के साथ गच्छ संभालने का आग्रह करो । अथवा मैं संभालूँ तो हमें यथायोग्य सहयोग करें परंतु गच्छ का खराबा कर प्रकाश गच्छ नहीं बनावे । एसा नहीं करने पर मैं भी मेरे समझ में आयेगा वही करूँगा । आप लोग पहले इन पर सत्ता चलाकर गच्छ का भला करें फिर मेरे पर सत्ता चलाने की बात करें । गच्छ के प्रमुख श्रावक गच्छ संभालने वाले को सहयोग न करके, गुढ पर रोब जमाकर अलग निकलने वाले को मदद करे, उसका पक्ष लेवे तो यह अन्याय अनीति गद्दारी मैं नहीं देख सकता, सहन नहीं कर सकता । अब आप मुझे कुछ नहीं कहेंगे । वे जोधपुर वापिस चले गये और चुपचाप बैठ गये । विचरण करते हम पाली तक पहुँचे । वहाँ भी सतियें श्रावक पूछे तो जवाब समाधान देवे और मैं पूछुँ तो हाथ से नहीं बोलने का धीरे धीरे ईशारा गुप्त पणे करे । देखने वाले समझने लगे और लोगों की हिम्मत चर्चा भी बढी । परंतु टालना या झूठी सफाई करना चलता रहा । आखिर मैं उनके साथ बालोतरा चौमासा भी नहीं गया और श्रावकों के पक्षपात स्वभाव के कारण जोधपुर भी सेवा में वापिस नहीं गया परंतु श्रीवीरपुत्रजी म.सा. के

संग व्यावर चौमासार्थ चला गया । वहाँ समता संघ के श्री शांतिमुनिजी म.सा.का चौमासा शहर में ही था । मिलना और विचार वार्ता गोचरी के समय होता, वे तो मुझे चाहते ही थे । चौमासे में गोचरी और रात्रि की थोकडा क्लास मेरे जिम्मे थी । चौमासा न्यातनोरे में श्रमणसंघ की तरफ से था । श्रीगौतममुनिजी और श्रीरमेशमुनिजी भी थे ।

सन १९८३ के ब्यावर चातुर्मास बाद हम जोधपुर आये । श्रीअमृत मुनि, श्रीजयंतिमनि, श्रीधीरजमुनि, श्रीराजेशमुनि आदि अहमदा-बाद थे । पू. तपस्वीराजजी म.सा. भी जोधपुर पधार गये थे । मेरा एकल-विहार का समय(४० वर्षकी उम्र) नजीक आ रहा था । दो-तीन वर्ष बाकी थे । प्रकाश गच्छ चलाने की धुन भी प्रगतिमान थी । श्रीलक्ष्मीमुनि बसंतिमुनि जोधपुर थे । श्रावकों की गद्दारी चालू थी वे श्रीप्रकाशमुनिजी के पास बारंबार जाते रहते और सांठ गांठ करते रहते थे ।

गच्छ के जवान संतों को मुख्य श्रावक और श्रीप्रकाशमुनिजी तोडने में थे । किंतु तपस्वीराज की आज्ञालिखित का वादा था और तपस्वीराजजी और श्रीसौभाग्यमुनिजी को मैंने आज्ञा नहीं लिखने में पक्का कर रखा था और मैं ध्यान भी रखता था तथा यदि कोई श्रावक फुसलाकर आज्ञा लिखवा ले तो में उसी क्षण गच्छ छोडकर श्रीनाना लालजी म.सा.के संघ में जाने बीकानेर तरफ विहार कर देता ।

ऐसी पशोपेच से श्रावकों और श्रीप्रकाशमुनिजी ने तंग होकर नया रस्ता अनीति का निकाला कि पू.तपस्वीराज की आज्ञा लिखाये बिना जो **संत गच्छ छोडकर छ महिना घूम लेंगे तो उन्हें फिर मैं बिना आज्ञा भी रख लूँगा ।** ऐसे समाचार श्रावकों ने बेसर्मीपूर्वक तपस्वीराज और युवक संतो को सुना दिये ।

अब तो ज्ञान गच्छ टूटकर प्रकाश गच्छ गद्दार श्रावकों के सहयोग से चलने वाला ही था । मैंने पूज्य सौभाग्यमलजी म.सा. और श्रीवीरपुत्रजी म.सा. से विचार निवेदन कर तपस्वीराजजी को समझाया, निवेदन किया कि गच्छ को आबाद रखना हो तो अब आपका बडापना छोडना होगा ।आप तीनों अर्पणता पत्र लिखकर बालोतरा भेज देवें और श्रीप्रकाश मुनिजी को बुला लेवें । श्रावकों को यह उपाय अच्छा लगा,पत्र बनाया और तपस्वीराजजी आदि के दस्तक कराकर ले गये । श्रीप्रकाशमुनि

विहार कर जोधपुर आ गये । मन ही मन सारा वातावरण लाचारी से बदल चुका था । **आखिर श्रीप्रकाशमुनिजी ने सत्ता संभाली**, सभी ने दस्तक कर दिये । मुझे भी आग्रह करने पर सशर्त मैंने दस्तक कर दिये कि गच्छ मे रहना हो जब तक, नहीं रहना होगा तो मैं इस्तीफा लिखकर जा सकता हूं फिर आज्ञा मानने की कोई बात नहीं होगी, श्रावको ने मंजूर किया । सभी ने हिलमिल के संगठन किया । अब दीक्षा रोकना आदि सब श्रीप्रकाशमुनि के हाथ में था तपस्वीराज अब कुछ भी नहीं बोल सकते । तो श्रीप्रकाशमुनि ने भी दीक्षा रोकने की माथाकूट फिर तपस्वीराज के जीतेजी कभी नहीं चलाई और तपस्वीराजजी की भक्ति विवेक के साथ अपना शासन तपस्वीराजजी के नाम से चलाने लगे । मेंरे प्रति उनका अंतरमानस छत्तीसगढ रायपुर के प्रसंग से बदल चुका था फिर उसमें प्रकाशगच्छ नहीं चलने देने की मेरी युक्तियों से वे और भी मन से हैरान थे । उपर से कहते कि तुम मेरे पर भार छोडकर नहीं जा सकते और अंदर में चाहते कि मैं निकल जाउँ तो अच्छा ।

उपर की सफाई एक साल चली । सन १९८४ में **फिर मुझे इस्तीफा लिखना ही रहा** । वे बालोतरा से जोधपुर आने में और उत्तर देने में देर कर रहे थे । मैने तपस्वीराज को निवेदन कर उनकी बिना इच्छा संभोग पच्चक्खाण, सहाय पच्चक्खाण, मौन और स्वाध्याय का एक महीने का अभिग्रह कर लिया । फिर श्रीप्रकाशमुनिजी का जोधपुर आना हुआ । जिस संत से मैंने मेल मिलाप विचारणा कर रखी थी उसे जोधपुर से बुला लिया और बीच के गाँवों में उन्हें छोडकर आये । पहले दिन रात्रि में हम दोनों बैठे थे । यथा प्रसंग कह दिया कि मैं आपका ईस्तीफा मंजूर करता हूँ । मैंने कह दिया कि अब आप जोधपुर आ गये हैं तो तपस्वीराज आदि संत और श्रावको से निपटाकर मुझे बुलाकर सबके सामने निर्णय देंगे, बालोतरा से लिखा देते तो वह अलग होता । फिर दूसरे दिन ३ संत ३ श्रावकों की मिटिंग के बाद मुझे बुलाया ।पू.तपस्वीराज ने पूछा– बाबु क्या चाहते हो । मैंने कहा जो लिख दिया है वही । तो कहा– कोई संत हम दें तो अलग विचरोगे ? मैंने मना कर दिया। पूज्य तपस्वीराज ने फैंसला दे दिया– जो रहना हो तो यह आपका घर है हम कोई आपको जाने का नहीं कहते हैं, बाकी आपको सुख हो वैसा कर

सकते हो । मैंने कल अक्षय तृतीया का उपवास पचक्ख रखा था । चौथ का विहार कर दूँगा ऐसा कह दिया । बात पूरी हो गई । श्रीजयंतिमुनि को बहुत दु:ख हुआ, उन्होंने मिटिंग में भी बहुत दलाली करी थी कि ये किसी भी तरह गच्छ में रहे वैसा करें । तपस्वीराजजी ने भी बहुत प्रयत्न किया था । एक घंटा उन छह जनों की मिटिंग चली थी फिर मुझे बुलाया था। मुझे यह भी पूछा गया था कि तुम गच्छ में किस तरह रह सकते हो ? मैंने ईस्तीफा पत्र में इसका समाधान लिख दिया था । उसे दुहराया कि दो वर्ष में सब आपकी आज्ञा और एक वर्ष में मुझे आत्म साधना की पूर्ण निवृत्ति अर्थात् संभोग पच्चक्खाण, सहाय पच्चक्खाण, स्वतंत्र गोचरी, मौन आदि समूह में रहते करना। तो पू.तपस्वीराजने श्रीप्रकाश मुनिजी से कहा– ऐसी छूट देने में क्या तकलीफ है तो श्रीप्रकाश मुनिजी बोल गये कि ऐसी छूट मैं नहीं दे सकता और आपको देनी हो तो यह लो आपकी सत्ता संभालो मुझे नहीं रहना। मैने बात सुधारली, पू.तपस्वीराज से निवेदन किया कि ये जो भी करे मुझे सहर्ष मंजूर है, इनको अपनी बुद्धि से गच्छ संभालने देवें । मुझे एकल विहार में कोई तकलीफ नहीं है सभी तरह से अभ्यास-तैयारी करली है।

श्रीजयंतिमुनिजी के मन को नहीं भाया पर कुछ कर नहीं सके । शाम को जशवंतभाई को मेरे पास भेजा । उनको उसी दिन रात में ऐरोप्लेन से मुम्बई जाने का था । मुझे आकर उन्होंने कहा कि श्रीप्रकाशमुनिजी श्रीजयंतिमुनिजी को बालोतरा नहीं रखकर तपस्वीराज के साथ जोधपुर रखेंगे । इनके २८ सूत्रों की वाचनी हो चुकी है चार सूत्रों की बाकी है जो तुम यह चौमासा उनके लिये ढक जावो तो उन्हें सूर्यप्रज्ञप्ति, जंबुदीप प्रज्ञप्ति, जीवाभिगम आदि की वाचणी लेना है । आग्रह पर मैने कहा– चातुर्मास बाद मैं एकलविहार करने में खुला हूँ । फिर कोई मिटिंग आज्ञा की जरूरत नही रहेगी । यह शर्त जशवंतभाई द्वारा स्वीकार करने पर मैने चौमासा ढकना मंजूर कर लिया। फिर श्रीप्रकाशमुनिजी को यह पोग्राम बताया तो उनके मुंह से निकल गया कि ऐसा कुछ करने की जशवंतभाई को क्या जरूरत थी । मैंने कहा श्रीजयंतिमुनिजी की भावना आग्रह देख मैंने चार महिने का धीरज रखा ।श्रीप्रकाशमुनिजी भी बिना मन के चुप रहे । फिर जशवंतभाई, श्रीप्रकाशमुनिजी के दर्शन कर बात

कहकर मंगलिक सुनकर चल दिये । मेरा वह **१९वाँ** गच्छवास का **अंतिम चातुर्मास जोधपुर तपस्वीराजजी म.सा.** की सेवा में महात्माजी म.सा. को पढाने हेतु नक्की रहा ।

महात्माजी की इच्छित वाचणी पूर्ण लगभग हुई । सूर्यप्रज्ञप्ति उपवास में पढाता था उसकी तबियत खराब हो जाने से वह अधूरी रही। चातुर्मास में पात्र प्रतिलेखन दो बार करने चर्चा चल पडी क्योंकि श्रीप्रकाश मुनिजी के गच्छ छोडने पर सभी सिंघाडों में दो बार चालु हो गई थी जो उन्होंने सत्ता लेते ही उसी क्षण किसी से विचार विमर्श किये बिना उसी बैंठक में एक बार पात्र प्रतिलेखन करने का नियम कर दिया था जो कई संतो को (श्रीलालचन्दजी म.सा., श्रीजयंतिमुनि आदि को) नहीं गमा था । श्रावक आगे आये कि श्रीप्रकाशमुनिजी लिखेंगे तुम भी लिखो और हम चौमासे में सभी चातुर्मास के सिंघाडों के पास जायेंगे । श्री प्रकाशमुनिजी ने ४ पृष्ट का लिखा मैंने १४ पृष्टका लिखा उन्होंने मेरे १० पृष्ट काटकर सर्वत्र भेजा । श्रावक जाकर आये सर्वमत दो बार के लिये आया । श्रीप्रकाशमुनिजी का आत्म विश्वास गलत पडा । अब तो जिद्द और हकूमत के सिवाय कुछ बचा नहीं था । पूर्णचन्दजी जशवंतभाई मेरे पास आये और सही स्वीकार करके कहा कि इतनी छोटी सी बात के लिये इतने बडे संतों की बात रहने दें श्रीप्रकाशमुनिजी को दो बार की बात मंजूर नहीं है । अत: आप इस विषय को छोड दें । मैंने कहा कि मैं पूरे १४ पृष्ट मेरे आपको पढकर समझा देता हूँ आप सहर्ष शांति से सुन ले फिर जो आप फेंसला देना चाहे दें उसे मैं स्वीकार कर लूँगा । दोनों ने बैठकर मेरे भाव सप्रमाण विस्तार से सुने फिर कहा कि आपके प्रमाण पूर्ण सत्य है इसमें कोई दो राय नहीं है । फिर भी अब आप उसे छोड दें, गच्छ में किसीके साथ इस विषय को नहीं चर्चें। मैंने स्वीकार कर लिया।

देखा! एक तानाशाह की खोटी जिद्द के लिये श्रावको ने जीवित मक्खी निगलने का निर्णय कर लिया । यह मान कषाय और मेरी बात की शान के लिये आगम प्रमाण और ढेर सारे प्रमाण घोट कर पी जाने वाले जिद्दी आत्मा की और कभी आलोचना शुद्धि सरलता नहीं करने वालों की सद्गति और आराधना संभव भी नहीं हो सकती, जिनशासन में इस बात को अधना सा आत्मार्थी साधक भी समझ सकता है । हम

करें सो कायदा उक्ति चारितार्थ हुई । आगमानुसार चलने की बातें करने वालों की इतनी निकृष्ट दशा एक जिद्द की प्रकृति से पूर्ण करली जाती है **इसका नाम है संसार** । यहाँ सब पुण्य के जोर से चल जाता है चाहे वडीलों की घोर आशातना का जीवन हो चाहे खोटी जिद्द का जीवन हो। इस भव में पुण्य प्रबल हो तो बडे बडे चोर डाकू अन्यायी भी सफलता प्राप्त करते देखें जाते है। परन्तु कर्मों का विपाक आने पर फिर पूर्ण न्याय हो जाता है । अत: **मानव को अपने पुण्य और बुद्धि का दुरूपयोग कभी भी नहीं करना चाहिये ।** अपनी बात की शान के पीछे न्याय का गला कभी नहीं घोटना चाहिये । बात की शान तो रावण ने भी रखी थी, जीते जी सीता को वापिस नहीं दी थी परंतु परिणाम सबके सामने आ गया था ।

चातुर्मास पूरा होते ही मेरा एकलविहार सुनिश्चित था । तपस्वी राजजी म.सा. ने शालावास तरफ विहार किया वहाँ दीक्षा थी । मुख्य संचालन मेरे हस्तक होने से मैंने उतावल नहीं की ।(श्रीप्रकाशमुनि बालोतरा से नहीं आ सके थे) दीक्षा के बाद लोग बिखर गये । हमारा विहार लूणी तरफ हुआ तपस्वीराज वापिस अचानक जोधपुर चले गये लूणी आने का पोग्राम था उसे केंसल कर दिया । अन्यथा मुझे विहार में जंगल में तपस्वीराज से मंगलिक सुनकर एकलविहार करना था । लूणी में एक दिन दुपहर व्याख्यान पूर्व मैंने श्रीहीरामुनिजी(पालीके) तथा श्रीमहात्माजी को संकेत दे दिया कि आप पाली जायेंगे । मेरे पाली आना नहीं हो सकेगा मुझे अन्यत्र विहार करना है ।श्रीहीरामुनि ने आग्रह किया आप ऐसा कुछ नहीं करें मैं जिंदगीभर आपकी आज्ञा मानूँगा, सेवा में रहूँगा, परंतु मुझे कुछ स्वीकार नहीं था । वे सभी संत व्याख्यान में गये और मैं तुरंत सामान व्यवस्थित करके ३ बजे के करीब निकल पडा । मुझे कोई रोकने वाला या देखने वाला भी नहीं था क्यो कि व्याख्यान अन्य दिशा में बहुत दूरी पर था। **६ कि.मी. का विहार कर मैं एक गाँव मे १० दिन रहा,** किसी को कुछ भी पता नहीं लगा । श्रावक लोग दूर दूर खोज करते रहे कल्पनाएँ करते रहे,थक कर शांत हो गये । **टिप्पण : मेरा इस्तीफा मंजूर हो चुका था । मैं मात्र श्रीजयंतिमुनि को आगम पढाने रूका था । अत: पात्र संबंधी चर्चा मैंने नहीं उठाई थी किंतु गच्छ के आगम निष्ठ संत श्री लालचंद्रजी म.सा. (मेवाड) ने ही**

उठाई थी । उस पर श्रीप्रकाशमुनिजी ने अपने आत्मविश्वास से खुद ने एक बार पात्र प्रतिलेखन का विषय लिखकर मुझे श्रावकों द्वारा सूचित किया था कि गच्छ में विचार भेद चल रहे है अतः यह सर्व सम्मति प्राप्त करने का प्रावधान बनाया है । इस पर मैने स्वीकृति देकर अपना मन्तव्य आगम प्रमाण का लिखित दे दिया । मेरी कोई पंचायत नहीं थी कौन जायेगा, कहाँ जायेगा, क्या करेगा, मेरा निबंध कितना तोडकर भेजा जायेगा आदि सब श्रीप्रकाशमुनिजी की संरचना व्यवस्था थी । वादा भी उनका अपना था फेंसला भी उनका अपना रहा कि अब इस विषय की चर्चा बंद की जाती है और अब पात्र प्रतिलेखन दो बार नहीं, सभी बिना तर्क के एक बार ही करेंगे, यही व्यवस्था(अर्थात् व्यक्तिगत जो हुकमी तानाशाही) है । बस, सर्व संतो ने गच्छ के भले के लिये अन्याय का अनागमिक घूंट पी लिया ।

मेरा एकलविहार हो चुका था । कुछ समय बाद मुझे पता चला कि संत पात्र की प्रतिलेखना एकबार करते है और महासतियाँ नंदकुँवरजी महासतीजी की समाचारी अनुसार दोनों समय पात्र प्रतिलेखन करती हैं।

मैंने गच्छ छोडने तक अपने परिवार के किसी भी व्यक्ति से गच्छ छोडने के विषय में किंचित भी सूचन नहीं किया था । अब कभी मेरे परिवार के लोग आते तो गच्छ वालो को जवाब देना पडता था । मेरे पास ४ भाई ४ बहनों में से कोई नहीं आया । क्यों कि मैने किसी भी आगंतुक से नहीं बोलने का नियम अर्थात् मौन कर रखी थी । छोटे साइन बोर्ड जैसे कार्ड बना रखे थे, एक वर्ष के लिये । मेरा एक भाई एक दिन श्रीप्रकाश मुनिजी से पूछ बैठा कि उन्होंने गच्छ क्यों छोडा ? क्या तकलीफ हुई ? कभी कोई बात १९ वर्ष में हमें सुनने देखने को नहीं मिली थी । श्रीप्रकाश मुनिजी को ईमानदारी से मेरा इस्तीफा लिखित पत्र बता देना चाहिये था। किंतु उनको जवाब देना भारी पडा । अतः स्पष्ट झूठ बोल गये कि उनको आचार्यपद की भूख थी हमारे गच्छ में यह परंपरा नहीं है इसलिये चले गये । प्रति तर्क चर्चा नहीं करते हुए विषय और प्रवृत्ति पलटकर टाल दिया । फिर करीबन एक साल बाद मेरे परिवार वाले मिलकर सामुहिक रूप से मेरे पास दीपावली बाद आये (भाई, बहेन, पिताजी) अरस-परस बातचीत विचार विमर्श के बाद पिताजी का प्रश्न अकेले नहीं कल्पने का

रहा । मैने ४० पृष्ट की कोपी प्रमाणों की लिख रखी थी उन्हें दे दी । पूरी पढकर वे शांत रहे । सभी मन मशोस कर मेरा एकलविहार स्वीकार कर चले गये । श्रीप्रकाशमुनिजी के स्पष्ट झूठ से परिवार वालों की श्रद्धा को ठेस लगी किंतु मैने किंचित भी श्रीप्रकाशमुनि के प्रति नाराज नहीं रहने का समझाया । क्यों कि मेरे पास आने से तो कुछ मिलना कम ही संभव है । गच्छ गुढ से संपर्क रखेंगे तो ही धर्म, ज्ञान, संस्कार बढेगा । फिर भी कुछ वर्षों बाद मालूम पडा कि एक भाई पूरा मंदिर धर्म पालने लगा अन्य भाई बहिनों का भी मन दुख रहा। मेरे पास कुछ भाई बहनें प्रतिवर्ष आते थे । धीरे-धीरे मनदुख कम हुआ सभी का कम ज्यादा गच्छ से संपर्क रहने लगा । यों मेरी एक बहिन मंदिर के घर में, एक नाना गुढ के घर में, एक हस्ती गुढ के घर में होने से इधर उधर दोनों तरफ संबंध रखती है । धीरे धीरे ज्यादा संबंध ज्ञानगच्छ से रहने लगा । आज प्रायः सभी भाई-बहन का प्रकाश गच्छ से लगाव है, एक भाई मंदिर लगाव का सपरिवार आजतक बना रहा है ।

नोंध : एकलविहार का सप्रमाण निबंध तथा पात्र प्रतिलेखन दो बार के प्रमाणों का निबंध मेरी संपादित प्रकाशित पुस्तकों में आज भी उपलब्ध है । मेरे आगम साहित्य के करीब २००० सदस्य हिन्दुस्तान के प्रायः सभी प्रांतों में बने हैं । छेद सूत्र परिशिष्ठ खंड-२ पृष्ठ-१२में तथा सुयगडांग सूत्र पुष्प-४ में है तथा आगम निबंधमाला भाग-५में दोनों निबंध उपलब्ध है ।

स्पष्टीकरण- झूठ कैसे ? प्रकाशमुनिजी के झूठ बोलने का तरीका तो पेटेंट था कि **मुझे तो ऐसा याद नहीं है ।** यथा हम कह दे कि श्रीजनक मुनिजी ने आपको थपडें मारी थी क्या ? तो कह देंगे मुझे तो ऐसा कुछ याद नहीं । हम कहें कि श्रीत्रिलोकमुनिजी के भाई को आपने ऐसा (आचार्यपद का) कहा था तो फट से उत्तर आयेगा कि मुझे ऐसा कुछ याद नहीं । इसी लिये मैंने उनका इस्तीफा स्वीकारने का मौखिक कथन रात्रि में मंजूर नहीं किया था । क्यों कि मैं उनके कहने से विहार कर लेता तो वे समय पर बोल भी देते कि मैने तो ऐसा कुछ कहा ही नहीं ।

स्पष्टीकरण आचार्यपद : श्रीप्रकाशमुनिजी तपस्वी गुढ से दीक्षा संबंधी हुज्जत कर अयोग्य सुना सुना कर गच्छ से निकलकर अलग रहने लग

गये थे और उन्हें दो साल हो रहे थे । पीछे तपस्वीराज का मैं प्रथम शिष्य और गच्छ संचालन देख-देख कर ही रहा था । आचार्यपद की भूख होती तो पद लेना भी मेरे हाथ में ही तो था परंतु मुझे ऐसी कुछ अपेक्षा गच्छ में थी नहीं । मुझे तो सातवें वर्ष की दीक्षा से ही एकलविहार का संकल्प हो चुका था, सिर्फ ४० वर्ष की उम्र होने का इंतजार करते हुए समय पास कर रहा था । और गच्छ छोडने के बाद भी मैंने किसी गच्छ में जाकर आचार्यपद लिया हो ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । तो भी कुछ जवाब सही नहीं दे सके तो श्रुतधरजी होकर प्योर(स्पष्ट) झूठ बोल गये। जिसका आज तक कोई प्रायश्चित्त नहीं, पश्चात्ताप नहीं, दोष स्वीकार करने की सरलता भी नहीं ।

॥ इति गच्छवास यात्रा विवरण समाप्त ॥

एकल विहार यात्रा विवरण

प्रथम वर्ष : प्रथम विहार से पहुँचे उस गांव में प्रथम प्रहर में स्वाध्याय करता । दूसरे प्रहर में एक घंटा ध्यान करता । फिर गौचरी पानी की व्यवस्था सिर्फ एकबार में पूरी कर लेता । वहाँ जैन का एक भी घर नहीं था। पानी भी स्वत: जो मिल जाता वही गवैषणा करके लाता था । हंमेशा एक बार ही गौचरी पानी को निकलता । दसवें दिन शाम को एक सिंघाडा ज्ञानगच्छ की महासतीजी का आया। साथ में एक भाई शालावास से पहुँचाने आया । वह मुझ से मिला, ज्ञानगच्छ संप्रदाय का परिचित श्रावक था । वापिस जाते उसने रस्ते में लूणी के जैनों को भी बता दिया और शालावास जाकर जोधपुर भी फोन से सूचना कर दी । मोबाइल का जमाना चालु नहीं हुआ था । दूसरे दिन लूणी के ४-५श्रावक मेरे पास पहुँच गये। घंटा भर लूणी आने की विनंती करी फिर चले गये । उनके जाते ही मैंने शीघ्रता से सोर्ट में गोचरी पानी निपटाया। तैयार होकर सोच समझकर विहार कर दिया । विहार के १०-१५ मिनट बाद एक कार जोधपुर से ८-१० श्रावकों की पहुँच गई । गाँव में पता लगाया कि संत किधर गये । गाँव वालों ने बता दिया कि उस रस्ते पर कार आदि नहीं चल सकेगी । आगे सडक पर आने वाला गाँव १० कोस पर था जहाँ पहुँचने में मुझे दो दिन लगने वाले थे । श्रावकों को मेरे पास पहुँचना

शक्य नहीं था । हताश हो कर स्वत: जोधपुर चले गये । अब मैं पाली से जालोर के रस्ते में पाली से २०-२५ कि.मी. दूर एक गाँव मे पहुँच कर १०-२० दिन ढका । लेखनकार्य(फेअर) किया । २१वें दिन वहाँ पर एक संत गच्छ छोडकर अचानक मेरे पास पहुँच गये । हम आबु पर्वत तक ५ महिना साथ रहे फिर वह संत खेडब्रह्मा चातुमासार्थ चल दिया। उसके जाने के बाद एक संत मारवाड से आया जो खद्दरधारी श्रीगणेशीलालजी म.सा. के संप्रदाय का और श्रीप्रकाशमुनि के पास पढने गया था । कुछ समय बाद श्रीप्रकाशमुनि ने उसे छुट्टी करदी तो पाली में पू. तपस्वीराज ने मेरे पास पढने जाने की प्रेरणा कर दी ।अत: वह वहाँ पहुँच गया । हम दोनों पालनपुर महेसाणा होकर अहमदाबाद जा रहे थे । पालनपुर में धीरजमुनि, राजेशमुनि बसंतिमुनि आदि मिले जो अहमदाबाद से जोधपुर बालोतरा जा रहे थे । मैं गुजरात में धीरजमुनि, राजेशमुनि के साथ मिलने रहने के मानस में ही था । बातचीत करी तो कहा अभी हम मारवाड जा रहे फिर आकर सोचेंगे। श्रीबसंतिमुनीजी ने मुझे बिना पूछे सलाह सूचन दिया कि आपने एकलविहार करके तो खोटा किया और गुजरात तरफ आने का निर्णय लिया वह और भी खोटा किया । हिन्दुस्तान बहुत पडा, कहीं भी चले जाते । क्यों कि गुजरात के छोटे बडे कई संघों के कडक नियम है कि एकलविहारी को मकान नहीं देना। मैंने कहा-बसंतिमुनिजी ! आपसे मैने संसार में अधिक वर्ष बिताये और खुद के जीवन की कर्म फिलोसोफी का अभ्यास भी किया । मुझे रोटी, कपडा और मकान की जीवन में कोई प्रोबलम नहीं है चेला साथी कर्म में नहीं है और यह भी रहने का ही है। अत: मेरी चिंता न करो मैंने बहुत सोच समझकर ही कदम उठाया है ।

आगे मुझे ऊंझा में श्रीअभयसागरजी म.सा. मिले । खगोल भूगोल की चर्चा वार्ता करी । अच्छे भाव से एक घंटा समय दिया और अगले वर्ष चातुर्मास बाद पालीताणा आने का निमंत्रण दिया । हम दोनों संत अहमदाबाद पहुँचे । जहाँ बसंतिमुनि धीरजमुनि स्थविरवास श्रीप्रेममुनि के लिये ठहर कर गये थे, उसी भाई ने विनंति करके ठहराया । श्रावकों के कई ग्रुप आये, बातें-चर्चा हुई । मैं गच्छ का प्रतिष्ठित संत था ।शाही बाग के श्रावक सिवाना बालोतरा पट्टी के थे ।जहाँ मैंने २-३ चातुर्मास

किये थे । फिर भी एकलविहार और गच्छ त्याग के प्रति लोगों की रंगबिरंगी सोच और वार्ता थी । आगम ज्ञान, विचक्षण बुद्धि और विवेक बुद्धि के कारण कोई दिक्कत संपर्क में नहीं आई । आखिर किसी ने मकान मालिक के भाई को भरमाकर दूसरे दिन उससे कहला दिया कि मकान मेरा है मुझे चौमासे में रहने आना है आप अन्यत्र अवसर देखें । कई लोग आये गये । एक भाई आत्मीयता से बोला हमारे नाकोडा पार्क में पधार जाना मैंने तीसरे माले पर नया फ्लेट लिया हैं मेरे फ्लेट के सामने वह खाली है, वहाँ ठहरें । तब तक मैं हमारा एक कौमन धर्मध्यान का फ्लेट है उसके चाबी की व्यवस्था करता हूँ । उसमें भी लोगों ने कई चालबाजियाँ चली, चाबी नहीं मिल रही थी । परंतु वह गढसिवाना का युवक भक्ति वाला एवं मेरी विशेषताओं से परिचित था, मेहनत कर कहीं से भी चाबी प्राप्त कर हमें उसमें ठहरा कर चातुर्मास की आज्ञा भी दे दी । पूर्व मकान मालिक सदा आता रहा उसके भाई के मकान के सिवाय भी उसके पास एक फ्लेट था विनंती चालु रखी । पर हमें स्वतंत्र ग्राउन्ड फ्लोर, शांति वाला, सोसायटी के कोर्नर का, गेट के पास मकान मिल चुका था । आसपास पचासों घर स्थानकवासी के एवं परिचित लोगों के और ज्ञानगच्छ के तथा अन्य भी थे । पूर्व मकान दाता भंवरलालजी दांती रात्रि में सदा आते रहे । मैं एक घंटा मौन खोल देता था । आखिर उसकी विनंती आदि संयोग से पर्युषण में मैं उसके मकान में चला गया । साथ का संत तपस्वी और विचित्र प्रकृति का था । वह उसी मकान में रहा । यों दोनों अलग अलग दूरी वाले मकानों मे रहे और चौमासे बाद वह अपने महाराष्ट्र तरफ विहार कर गया । आबुपर्वत से खेडब्रह्मा चौमासे जानेवाले संत ने चौमासे बाद अहमदाबाद तरफ विहार कर दिया ।

शाहीबाग में श्रीसरदारमुनिजी का चौमासा अपने गुढ श्रीचंपकमुनि के साथ बडे उपाश्रय में था । वे मुझ से आशान्वित थे । चार्तुमास अपने साथ रखना चाहने लगे। बात चली श्रावकों की मिटिंग चली । गुजराती मारवाडी मिक्स संघ था । गुजराती संघ ने गुढ के कहने से स्वीकृति दे दी । मारवाडी संघ के अध्यक्ष मंत्री थे वे भी मेरे गुणग्राही सिवाना बालोतरा के बुजुर्ग थे उन्होंने प्रस्ताव पास कर दिया । ज्ञान गच्छ के

२-४ युवक अड गये बाजी पलटी और कह दिया कि इनको यहाँ रखेंगे तो हम नहीं आयेंगे । बात खिंच गई प्रस्ताव रद्द हो गया । मिटिंग पूरी हो गई । मैंने नाकोडापार्क, शाहीबाग में ही चौमासा किया ।

चौमासे बाद नवरंगपुरा गया । वहाँ दरियापुरी गच्छ के संत थे। मैं भी वहाँ उनके साथ सात दिन रहा । वे चले गये, मैं अकेला वहाँ रहने लगा । संघ के दो व्यक्ति दूसरे दिन मुझे विहार कराने आये । १०-१२ मिनिट वार्तालाप-पूछताछ की फिर खडे होकर मंत्री भरतभाई बोले कि ये अध्यक्ष है, मै मंत्री हूँ हमारे संघ का कायदा है कि एकलविहारी को १-२ दिन से ज्यादा नहीं रहने दिया जाता । हम दोनों आपको विहार करने का कहने के लिये उपस्थित हुए थे । किंतु आपकी वार्ता से हमें ऐसा लगा कि हमारे संघ का कायदा आप पर लगाया नहीं जा सकता। हम आप से निवेदन करते हैं कि आपको जितने दिन रहना हो रहें । जाना हो तो १-२ दिन पहले बता देवें । यहाँ पगी है वह हमारा घर बता देगा। गोचरी का लाभ देना । और आपको दवा स्टेशनरी जो भी चाहिये हमें लाभ देना । मैं वहाँ सतावीस दिन रहा और श्रीबसंतिमुनिजी को बहुत याद करके कहने लगा कि देखो मैंने पहले ही पालनपुर में कह दिया था कि मुझे शिष्य का संयोग नहीं है बाकी मकान गौचरी पुस्तकें मिलने में कोई दिक्कत नहीं है । उसी पद्धति से आज मुझे २९ वर्ष हो रहे गुजरात मेरे लिये वरदान सिद्ध हुआ है जिसमें मैने भरपूर आगम साहित्य सेवा की। संत-सतियों को खूब पढाया और सबसे श्रेष्ठ यह कि दो वर्ष अजरामर लींबडी संप्रदाय के श्रीप्रकाशमुनिजी ने साथ में रखकर कच्छ में घुमा-घुमाकर अनेक सतियों को ज्ञानलाभ प्रदान कराया और खुद ने भी ३२ आगम ज्ञान चर्चा सहित पढे, समझे । फिर गोंडल संप्रादय के श्रीगिरीश मुनिजी मुझे राजकोट ८०० कि.मी. घुमाकर ले गये और ७८ साधु-साध्वी का सामुहिक चातुर्मास करवा कर नियमित ४ घंटे रोज चौमासे में अध्यापन का लाभ दिया। सोने में सुगंध यह कि उस चातुर्मास में आगम विवेचन प्रकाशन का पोग्राम बनाकर श्रीरतिगुढ ने मुझे संपादन कार्य सोंपकर आगम कार्य पूरा होने तक मारवाड नहीं जाने का वचन लिया । अत: मुझे राजकोट ही ढकना पडा जिससे १५ चौमासे निरंतर राजकोट में हुए। नवरंगपुरा में मेरे पच्चीस दिन हुए कि राममुनि पहुँच गये जो खेडब्रह्मा

का सफल चौमासा करके आये थे । उस सफलता के फल स्वरूप लोगों ने चार साल बाद मेरा भी चौमासा कराया, जब श्रीगौतममुनिजी सहित हम तीन संत थे । तो श्रीराममुनिजी मेरे से दिक्षा में बहुत छोटे थे उम्रमें बडे थे। हम नारायणपुरा आदि उपनगरों में घूमे । श्रीप्रकाशमुनिजी का प्रथम मिलन भी यहीं नारायणपुरा में चार साल बाद हुआ था जब मैं श्रीगौतममुनि के साथ था । उनको सैकडों जिज्ञासाएँ–प्रश्न थे हम प्रतिक्रमण कर बैठे रात्रि की एक बज गई । उन्हें बहुत संतोष समाधान आकर्षण हुआ । हम कुछ दिन वहाँ रहकर फिर अंत में चंपकनगर गये आगम मंदिर भी बीच में देखा । रूपेन्द्रकुमारजी पगारियाजी से भी मिले । वे महानिशीथ सूत्र का संपादन कर रहे थे । उनके कई अनुभव सुने । फिर में साबरमति आ गया और श्रीराममुनिजी ने महाराष्ट्र तरफ विहार कर दिया। **साबरमती में प्रवर्तक श्रीरूपमुनिजी आये जो पुना सम्मेलन** जा रहे थे । मैंने उनके लिये स्थानक खाली कर दिया और पडोश के कोई खाली घर में ठहरा यथासमय उनसे मिलने गया । प्रेम से बैठाया वार्तालाप के बाद श्री रूप मुनिजी ने कहा त्रिलोक ! तूँ कोई चिंता नहीं करना मैं तुझे एक मंत्र देता हूँ उसका एक वर्ष अमुक विधि से जाप करना तुमारा नाम पूरे हिन्दुस्तान में चमक जायेगा और श्रीप्रकाशमुनिजी तो अपने घर में ही रह जायेंगे । मैंने कहा महाराज साहेब मुझे ऐसा कुछ नहीं चाहिये, स्वस्थ रहूँ ऐसा कुछ दो । उन्होंने अपना सोचा लिखकर कागज पर बिना मांगे दिया सो दिया ही। आग्रह देख मैने उनका हस्तलिखित कागज ले लिया । २० जनवरी को जाप शुरू कर दिया । उसी दिन २०-१-८८ को **श्री कन्हैयालालजी म.सा. कमल ने अंबाजी से** मुझे बुलाने का पत्र लिखाया और ३–४ श्रावकों को अहमदाबाद के लिये रवाना किया । बस स्टेंड पर उन्हें मालूम हो गया कि मैने आबु पर्वत के लिये विहार कर दिया है तो श्रावक वापिस लौट गये और मेरा इन्तजार करने लगे । ज्यों ही मैं आबूरोड पहुँचा मुझे समाचार मिल गये कि आप आबू पर्वत नहीं जावें। आपको अंबाजी में म.सा.ने बुलाया है । मैं अंबाजी पहुँच गया। उन्होंने मुझे अनुयोग कार्य में संपादन संशोधन के लिये सहायक रूप में रख लिया । चरणानुयोग में संशोधन कार्य शरू कर दिया । मेरा मकान अपनी सुविधा अनुसार उनके मकान से १ कि.मी. उनसे दूर था। सुबह आठ बजे करीब

मैं वहाँ पहुँच जाता, दिनभर रहता शाम को अपने स्थान पर पहुँच जाता। सर्दी के दो महिने वहाँ रहकर हम आबू पवर्त आ गये। आबू रोड से आबू पवर्त पर पहुँचने का २८ कि.मी. मेरा एक विहार का रस्ता था । मैं कभी बीच में गोचरी टीपन नहीं लेता । फिर मुझे श्रीकन्हयालालजी म.सा. ने चार छेदसूत्र विवेचन सहित लिखने को दे दिये । चातुर्मास हमारा बाल निकेतन मे रहा । दूसरा चौमासा मेरे अकेले का सिरोही शांतिनगर में हुआ । तीसरा चौमासा मेरा अकेले का बालनिकेतन में रहा । महावीर केन्द्र में दो संत और १० महासतियों का था । ५–६ महासतियें और हम तीन संत दो टाइपिष्ट एक साथ घेरे में बैठ कर आठ घंटे आगमकार्य करते । तीसरे चौमासे में गुलाबपुरा से स्वाध्याय संघ के श्रावक आये उनके सुझाव का आगम सारांश का कार्य मुझे दिलाया गया । जो मैने पू. कन्हैयालालजी म.सा.की आज्ञा से शरू कर दिया । एक महिने में १० आगम का सारांश(दो मूल,चार अंग,चार छेद)लिख दिया । पुनः गुलाबपुरा के श्रावक आये ले गये । उन्होंने वह मेटर समिति में विचारणार्थ रखा । मासिक पत्र स्वाध्याय संदेश में देना था एवं स्वतंत्र पुस्तक भी छपानी थी किन्तु वह काम विचारणा से आगे नहीं बढा ।

गच्छ में से श्री गौतममुनिजी विनयमुनिजी तीसरी बार गच्छ छोडकर विजयनगर–गुलाबपुरा चौमासा किया । एक दीक्षा हुई फिर दूसरी दीक्षा हुई दोनों संतो के प्रकृति में मेल नहीं खाया । श्रीविनयमुनि दो संत वहीं आस-पास विचरे । श्रीगौतममुनिजी आउ अपने गाँव विचरण करने गये उनके परिवार वालों को अंदर की स्थिति मालुम पडी । वे बालोतरा तपस्वीराज श्रीप्रकाशमुनिजी की सेवा में गये । श्रीगौतममुनिजी भी पहुँचे । श्रीप्रकाशमुनिजी ने इन्कार कर दिया अब बारबार मैं वापिस नहीं रख सकता । तपस्वीराजजी ने समझाया कि श्रीत्रिलोकमुनि के पास जाओ वे ज्ञानी तुम व्याख्यानी सब हिलमिल के रहो । मुझे भी वे समाचार मिले थे । **रायपुर से पुखराजजी गोलेच्छा आये और हमारा मेलाप फालना** में कराया । वहाँ से हम विजयनगर गुलाबपुरा आये । विजयनगर के श्रावकों ने प्रयत्न और ४–५ बैठकें कर श्रीविनयमुनि को हमारे से मेलाप करा दिया । अब हम पांच संत हो गये । महाराष्ट्र मे श्रीराममुनि श्रीभंवर मुनि अकेले अकेले थे उन्हें भी समाचार कर दिये । हमारा सात संतो का

संगठन हुआ । कुल चार चातुर्मास हुए । हमारा चौमासा मसूदा हुआ। विजयनगर से हम गुलाबपुरा आये । सारांश का काम समिति ने पास नहीं किया था मैंने वापिस ले लिया । विहार कर पुष्कर पहुँचे जहाँ श्री कन्हैयालालजी म.सा. थे । श्रीगौतममुनिजी आस-पास विचरने गये । मैं श्रीकन्हैयालालजी म.सा. के पास आगम अनुयोग कार्य करने लगा।

सारांश का काम उन्हें सोंपना था परंतु उन्होंने इन्कार कर दिया कि हमारे पास इतनी राशि की सगवड भी नहीं और समय भी नहीं । वह **सारांश प्रकाशन मेरे जुम्मे रह गया ।** उन्होंने मुझे एक टाइप और एक टाइपिस्ट दे दिया जो उन्हें नापसंद था । मैंने उसे स्वीकार किया । अब पैसा संकलन, पुस्तक प्रकाशन टाइपिस्ट की व्यवस्था खर्च मेरे जिम्मे रहा । शेषकाल में चार पुस्तकें छप गई । २००० नकल का प्रावधान रखा । चातुर्मास सूचि बाबूलाल उज्जवल की हाथ लगी, उससे प्रचार शुरू किया क्यों कि उस में गाँव गाँव के एड्रेस मिल गये । १०० रू में ३२ पुस्तक के सेट का प्रचार पत्र पुस्तकों में डाल दिया । ग्राहक बनते गये १० पुस्तक का पैसा आ गया । चौमासा मसूदा में पूरा हुआ तब तक १० पुस्तकें छप गई । यह मेरा २४वां चातुर्मास था । १९ गच्छ में +१ अहमदाबाद में + ४ अनुयोग के कार्य में यों एकलविहार का पाँचवाँ श्रीगौतममुनिजी के संग पहला चौमासा और श्रीकन्हैयालाल म.सा.के आगम काम के सहयोग का चौथा चौमासा था। उसके बाद पाँचवा खेडब्रह्मा, छट्ठा आबुपर्वत अकेले का, सातवाँ चातुर्मास श्रीकन्हैयालालजी म.सा., गौतममुनि हम सभी का मदनगंज हुआ । यों सात चातुर्मास और आठ शेषकाल में चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग का कार्य पूर्ण हुआ । समाप्ति हरमाडा में हुई जो मेरे टाइपिस्ट का गाँव था। श्रीगौतममुनिजी के हमारे मिलन मिलाप का पाँचवा चातुर्मास माणसा में रहा । यों मेरे गच्छ छोडने के ९ चातुर्मास पूरे हुए । सारांश प्रकाशन कार्य का समापन भी माणसा में कर दिया ।

अंत मे आचार्यश्री ने मेरे प्रायश्चित्तीकरण का अभिवादन किया और कहा कि फिर कभी जीवन में मौका मिले तो ३२आगम को प्रश्नोत्तर शैली में संपादन करना । दो साल लींबडी अजरामर संप्रदाय में पढाने के बाद सुरेन्द्रनगर में श्री प्रकाशमुनिजी की वही प्रेरणा रही कि आपके

साथ प्रश्नोतर करने में जीवन का बडा आनंद आता है। आप अब प्रश्नोतर की आगम पुस्तके लिखें, मैं सहयोगी बनूंगा । चातुर्मास उठने तक दो प्रश्नोतर भाग विविध विषय के निकालकर वितरित कर दिये गये । उसकी गुजराती आवृति भी कर दी गई । फिर राजकोट में आचारांग प्रश्नोतर का कार्य चला । उसके बाद गुढप्राण आगम बतीसी का काम प्रारंभ करने से वह काम सात वर्ष ढक गया । जिसे आठवें वर्ष में फिर प्रारंभ किया ।

श्रीकन्हैयालालजी म.सा. तथा उनके शिष्य श्रीविनयमुनिजी ने श्री गौतममुनिजी को फुसलाना प्रारंभ किया एवं सफल रहे, वे श्रमणसंघ में मिलने लगे । मैंने भी उनका साथ कायम रखने हेतु श्रमणसंघ स्वीकार किया । आगमकार्य पूर्ण करने पर आचार्य देवेन्द्रमुनि मदनगंज में मिले तब मैं श्रमणसंघ में था । मैंने प्रकाशनकार्य समेटना तय किया प्रायश्चित्त आलोचना शुद्धि कर दोष मुक्त हुआ । अनेक संप्रदायों में जाकर संत सतियों को पढाने का प्रावधान प्रचारित कर दिया । अनेक जगह से बुलावे विनती पत्र आये । सर्व प्रथम कच्छ का अजरामर संघ का बुलावा श्री प्रकाशमुनिजी का स्वीकार किया और आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी की लिखित आज्ञा मंगाकर सन १९९५ के फरवरी में अकेला कच्छ पहुँचा । उस समय मेरी उम्र ४८ वर्ष की थी । तब मैंने पाली से लाकडिया(कच्छ) तक २० दिन में ४५० कि.मी. का विहार किया था ।

विशिष्ट घटनाएँ : ज्ञातव्य -

(१) आबू पर्वत वर्धमान महावीर केन्द्र में एक बार रात्रि में शरीर के कारण से उठा, परठने गया, पंगथिया चूक जाने से गिर पडा । अंधेरा था चार बजी थी पाँव में मोच आई । सूजन हो गई । शिवांबु प्रयोग कर गीला कपडा बांध दिया । एक सप्ताह चलने में तकलीफ रही । भोजनशाला से चावल का मांड लाकर सेक करता । २१ दिन ठीक होने में लगे किंतु किसी भी डॉक्टर, वैद्य, हकीम, का संकल्प नहीं किया, धीरज रखा । दो संत १० महासतीजी साथ में आगम कार्य करने वाले थे उनका भी सहयोग नहीं लिया । यह एकलविहार के बाद प्रथम परीक्षा की घडियाँ थी ।

(२)लक्की झील के किनारे मंदिर में कभी रहता था । एक बार रात्रि में १२ बजे छत्त पर जोर से धम्म सी आवाज आई मैं बाहर आकर बोला कोई भी हो तो सामने आकर बात करें ऐसा बोलकर परठ कर सो गया। (३) एकबार शाम को गोचरी निकला उस वर्ष वर्षा नहीं हो रही थी । कुछ अनार्य(अनोपमंडल के) लोग घेर कर पूछने लगे– पानी कहाँ, पानी कहाँ ? धीरे-धीरे पंद्रह बीस भाई इकट्ठे हो गये । जैनों की दुकानें कुछ दूर थी, वे लोग दूर से देखते रहे, नजीक नहीं आये । मैंने १५–२० मिनिट उन्हें तरकीब से समझाया खुश हो गये । फिर हमेशा मिलने पर प्रणाम करने लगे ।

उन्हें मैने निडर होकर यों समझाया– देखो भाई ! मानव और वैज्ञानिक जो धारे वह सब कुछ कर सकते हैं किंतु कुदरत किसी के हाथ में नहीं है । यदि जैन साधुओं के हाथ में कुदरत हो जाय तो जैन साधु तो पूरे विश्व में अपार कढणा के भंडार होते हैं।पानी तो सभी को चाहिये, तो जैन साधु सारे विश्व में वृष्टि का चमत्कार करके सब को सुखी कर के पूरे विश्व को जैनी बना लेवे । साधु तो कितनी कष्ट साधनाएँ करने के लिये घर छोडते है ? कितना धर्म का उपदेश देने गाँव गाँव पैदल फिरते ? वे जनता को दुखी करने का सोच भी नहीं सकते । वे तो सब जीवों का कल्याण हो, सुखी हो ऐसा परम मंत्र लिये घूमते हैं । वे ऐसी कुबुद्धि कभी नहीं कर सकते है कि लोगों को दुखी करें और जैन धर्म के विरोधी बनाकर उनके ही हाथ से कुमोत मरे । ऐसे सडे दिमांग के लोग इतनी कष्टमय साधना नहीं कर सकते । जैन साधुओं की साधना के एक एक नियम विचित्र और मानव को अहोभाव पैदा करे जैसे होते हैं । जीव दया के लिये वे कभी वनस्पति को तोडते तो क्या छूते भी नहीं । पानी में मजा लेना तो क्या पानी का किचिंत भी वैस्टेज नहीं करते, कभी स्नान भी नहीं करते। पानी की एक बूंद को छूने मे भी पाप समझते हैं । खुले पाँव पूरे हिंदुस्तान में पैदल घूमकर धर्मप्रचार करते। ब्रह्मचर्य पालते शादी नहीं करते । कोई मनोरंजन नहीं करते । रात में पानी भी नहीं पीते । गर्मी सर्दी के कष्ट सहन करते । इतना कष्ट सहन कर लोगों को वश में करना छोड पानी को रोक कर लोगों को दुखी करके उनके क्रोध के भागी बने। इतने मूर्ख तुम जैन साधु को मत समझो । वे तो दुनिया के अच्छे से अच्छे,

त्यागी से त्यागी, और दयालु से दयालु लोग ही घर छोडकर साधना करने, आत्म कल्याण करने और लोगों को भी धर्मी बनाकर परमात्मा बनने का मार्ग सरल बना कर बताते हैं । अतः भाईयों! आप लोग अपनी सोच को समझ कर बदलो । निरर्थक जैन साधुओं पर भ्रम करके पाप करके अपना भविष्य मत बिगाडो । दुनिया में समझदार लोग वणिक होते हैं। वै जैन साधुओं को गुढ मानते, भक्ति करते है; वे तो बहुत बुद्धिमान होते हैं, वे गलत काम करने वालों को कभी गुढ नहीं मान सकते, भक्तिभाव इतना नहीं कर सकते । चलो, जाओ अच्छे काम करो, अच्छा सोचो, तो पुण्य बढेगा, तो पानी भी मिलेगा। कुदरत भी हम लोगों के पुण्य–पाप के आधार से बदलती रहती है। तभी भूकंप, सुनामी होते हैं और जमाना अच्छा भी सब लोगों के पुण्य से होता है उससे ही कलि-युग और सतयुग बनते हैं। युग को अच्छा खराब करना मानव के कर्तव्यों पर निर्भर है । ३०–४० लोग अनाडी इकठे हो गये थे, घेर कर जवाब मांग रहे थे । वे सारे लोग नतमस्तक हो गये । शाम का समय था, मैं शीघ्र दूध लेकर आ गया। रात्रि में ही संतों सतियों को खबर पड गई कि तिलोकमुनि को अनोप मंडल ने घेर लिया था। फिर क्या हुआ कोई जैनी नजीक नहीं आया था वाया वाया परंपरा से सुने । दूसरे दिन मैं आगम कार्य के समय आया तब सारी हकीकत सुनाई (४) एक बार श्री कन्हैया लालजी म.सा.ने एक विषय को तर्क–प्रमाण सहित समझना चाहा । वहाँ ग्रंथ साहित्य का अपार संग्रह वे अपने कमरें में चौतरफ रखते थे। मैंने कितनी ही पुस्तकें प्रमाण उद्धरण निकाल कर समझाये ।उसमें खडे–खडे करीब ३ घंटे लग गये। न उनको कोई थकान थी न मुझे, दोनों का उत्साह लगन देखते ही बनती थी । वह मेरे एकलविहार के प्रथम वर्ष का चौथा पाँचवाँ महिना था । उन्होंने मुझे अपने साथ रखने का चाहते हुए भी ज्ञान गच्छ के होने के भय से नहीं कहा। (५) अहमदाबाद चौमासे के बाद उन्होंने हिम्मत कर मुझे बुला लिया । अनुयोग के काम सिवाय जब छेद सूत्र का अनुवाद विवेचन लेखन दिया। एक महिना हुआ । एक दिन में सुबह उनके पास अपने समय पर काम करने पहुँचा। तो उन्होंने कहा– मेरे मन में एक प्रश्न घूम रहा है वह मैं तुम्हें पूछुँ ? मैने कहा–नहीं आप मत पूछें, मैं ही अपने मन का एक विचार आपको कह दूँ आपका उत्तर

हो जायेगा । उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और कहा बोलो, ऐसा नहीं होगा। मैंने ज्यों ही अपने मन की विचारणा कही तो वे तुरंत बोले कि यही मुझे पूछना था । यह अम्बाजी की बात थी। (६) एक बार मैंने कहा कि मैं आगम कार्य तो करता हूँ परंतु संयम तथा गवेषणा के कारण आबूपर्वत की १२५ इन्च १५० इंच वर्षा में यहाँ नहीं रह सकता हूँ तो उन्होंने कहा– सिरोही जाओगे तो पूछवा लेता हूँ । सिरोही पूरा जिला मूर्ति पूजकों का है, स्थानकवासी का कुछ भी अस्तित्व हो तो सरकारी नौकरी वाले हो सके । उपनगर के प्रमुख मू.पू.श्रावक पटनीजी ने उत्तर दिया कि मैं चार महिना मकान दे सकता हूँ । बाकी गोचरी, पानी, पढाई सुविधा, दर्शनार्थी आदि कोई मेरी जुम्मेदारी नहीं । मैने मंजूर किया । चौमासा हो गया । धोवण आदि के घर जमाये, खोज कर सारी व्यवस्था जमाली । पटनीजी का घर तो भक्ति वाला था ही ।

एक बार मेरी दो बहेने जोधपुर से सुबह निकली चार घंटा आना, ४ घंटा जाना, ५ घंटे सेवा करना, रात को घर। ऐसे ही एक मामा मद्रास से आये । गाँव में धर्मशाला में ठहरे । वहीं भोजनशाला का उपयोग कर दिन भर सेवा सत्संग कर चले गये । वहाँ ४ महिने मैंने निशीथ सूत्र विवेचन लिखा । इस कार्य के निमित्त मेरे चारछेद सूत्रों के मौलिक भाष्य चूर्णियों आदि का गहरा अध्ययन हुआ।पटनीजी ने पर्यूषण में कल्पसूत्र सुनाने का कहा।मैंने सहर्ष स्वीकारा कि मैं पुण्यविजयजी की पुस्तक से पढकर अर्थ समजाउँगा और कुछ नहीं पढूँगा तथा उस समय कोई धूप दीप आडंबर नहीं करेगा । तो पटनीजी ने मंजूर किया । आगम पढना समझाना तो मेरा खास विषय था । पटनीजी और सब जनता खुश थी। प्रश्नों का जवाब में व्यक्ति और क्षेत्र देखकर विवेक से देता था । अपने लिये विरोधाभास कभी खडा नहीं करता । सिरोही का शांतिनगर उपनगर रास्ते का क्षेत्र था।चौमासे बाद मैं आबूपर्वत देलवाडा रहने आया । सिरोही से होकर सेकडों साधु आबु पर्वत आना जाना करते । पटनीजी उनके पास मेरी अत्यंत प्रशंसा करते। माउंट आबू आकर साधु पूछ पूछकर मेरे पास आने लगे । ज्ञान सत्संग में कई बार उन्हें मुँहपत्ति बांधने को देकर वार्ता करता तो संत निडर होकर मेरे सामने मुँहपत्ति बांधकर वार्ता करते । ज्ञानचर्चा में कभी तीन मम्मे (मंदिर-मूर्ति, मुँहपत्ति) नहीं छेडता, नहीं चलाता । देलवाडा के ट्रस्टी

मैनेजर भी मेरे प्रति श्रद्धान्वित और आदर भाव रखते । वहाँ एक वल्लभ पुस्तकालय था उसमें किसी साधु को कभी ठहरने नहीं दिया जाता । किंतु मुझे महिनों वहाँ रहने को मिलता । मैनेजर ने मेरे कहने से दो आदमी रखकर मेरी देखरेख मेहनत से पूरी लायब्रेरी की व्यवस्था संकलना सुंदर बना ली । मुझे लाइब्रेरी का अनुभव भी था क्यों कि दीक्षा पूर्व ३ वर्ष १६००० पुस्तकों वाले भंडार में बीकानेर में नौकरी करी थी । वहाँ देलवाडा में पुराना और अच्छा साहित्य था । मैने वहाँ महत्वशील ग्रंथों का अध्ययन भी किया, लिखित संकलन भी किया, जो बाद में साहित्य प्रकाशन में खूब काम आया । (६) अहमदाबाद की अेल.डी. लाईब्रेरी में अंडर ग्राउन्ड में ५०००० छपी और ५०००० हस्त प्रतों का संकलन आकर्षक सुविधा पद्धति से है मैं नवरंगपुरा से जाकर ८–९ घंटे वहाँ इतिहास की मुख्यता से अध्ययन करता । इसी बात से खुश हो कर नवरंगपुरा के प्रमुखों ने मुझे उपाश्रय में अकेले रहने दिया। सुबह की गोचरी में पाँच–सात घरों से दूध खाखरे जो मिला लेकर दूध पीकर शेष आहर अेल.डी.में साग–पानी नजीक से लाकर दुपहर में दिन में कर लेता। शाम को यथासमय उपाश्रय में पहुँचकर प्रतिलेखन कर पानी चुका लेता । यों एकलविहार के प्रथम वर्ष में मैंने अध्ययन लेखन संकलनरूप अपार ज्ञानार्जन किया । (७) नारायणपुरा की सत्संग चर्चा एवं सरलता नम्रता से श्री प्रकाशमुनिजी बहुत प्रभावित थे । फल स्वरूप उन्होंने मुझे कच्छ बुलाकर खूब ज्ञान दलाली का लाभ लिया और मुझे भी ज्ञान आराधना का चांस दिया उस समय श्री गौतममुनिजी भी साथ में थे एकलविहार का सातवाँ वर्ष था। (८) भुज में परिपूर्ण ठंडी में भी मैं महासती की मुख्यता से ६ घंटे प्रज्ञापनासूत्र की वाचनी देता एक महीने में उसे पूरा किया ।

प्रकाशमुनिजी की विशेषता : लोच में इनकी हस्तकला अद्‌भुत थी। इनकी शानी का सफल लोच करने वाला पूरे हिंदुस्तान में नहीं मिल सकता । नवदीक्षित युवान का लोच १५–२० मिनिट में और कोई खास कष्ट बिना कर देते । उनके अनेक लोच मैंने देखे रिकार्ड सभर उनकी यह कला लगती । स्पीड और हाथ की लघुता दोनों थी । मुझे बुलाकर उन्होंने स्वत: पहले से ही मेवा-फ्रूट का त्याग रखा । गुजरात के संत होते

हुए भी वे कभी दुपहर से पहले गौचरी नहीं वापरते, यह नियम दीक्षा ली जबसे आज तक भी उनका चालु है । उनके पास एक परिवार के चार सदस्यों ने एक साथ दीक्षा ली जिसमें पिताश्री पंथकमुनिजी दीक्षा ली जब से चौविहार उपवास वर्षीतप निरंतर(१४वर्ष से) कर रहे हैं । पोरषी बिना पारणा कभी नहीं करते । उनके सुपुत्र श्रीनैतिकमुनि भी तपस्वी, ज्ञानी, बुद्धिमान है तथा कभी पोरिषी पहले वापरते नहीं । सुपुत्री साध्वीश्री मुक्तिशिला ने बत्तीस वर्ष की उम्र तक में ३२ शास्त्र कंठस्थ करने का संकल्प किया एवं प्रवर्तन भी चालु हैं।अब मैं श्रावक जीवन में भी श्री प्रकाशमुनि के शिष्यों को पढाने जाता रहता हूँ , २०१३के थानगढ चौमासे में राजकोट से अधिकतम अप-डाउन कर पढाने गया ।(९) एकलविहार का **१०वाँ और दीक्षा का २९वाँ चौमासा प्रागपुर कच्छ में किया था।** जहाँ से प्रतिवर्ष मौन अठाई भी प्रारंभ की। जिसमें आठ ही दिन पेट में गेस दर्द रहा । एक बार वहाँ ताव भी पीछे लग गया तो १५ दिन उपवास बेले तेले आदि किये । परंतु डॉक्टर की चाहना नहीं की । अंत में पीलिया हो जाने पर प्राकृतिक चिकित्सक स्थानकवासी दुलारीबेन ने मुंद्रा से आकर चिकित्सा करी । उसका इतना अनुभव था कि उसने मुझे कह दिया– आप तेला न करें, इससे यह ताव नहीं जायेगा, भले आप अठाई करलें तो भी ताव नहीं जायेगा । मेरी तप के प्रति अगाढ श्रद्धा थी । ना कहने पर भी तेला किया । मेरे जीवन का एक वह समय था कि मेरी तप साधनारूप तेला भी विफल गया । आखिर उस दुलारीबेन ने परोपकार भाव से सात दिन में ठीक कर विहार योग्य बना दिया । १ महीना उसकी सलाह मानी । प्राकृतिक विधि भी ध्यान मे ली ।(१०) फिर भी सात वर्ष बाद में एक बार राजकोट वैशालीनगर में ताव को चार उपवास से पूर्णत: निकाला और सात दिन आहार कर संवत्सरी के दिन से फिर अठाई करी । यों मैने एकलविहार को तप और ज्ञान की अपार आस्था उत्साह के साथ सफल किया, क्यों कि गच्छ में १३ वर्ष एकलविहार का अभ्यास किया था । गच्छ में भी ताव आने पर कई बार तप से ही उसको दूर किया था।

पीलिया होने पर दुलारीबेन कथित प्राकृतिक आहार विधि इस प्रकार है– (१) गुड का पानी एक गिलास (२) शक्कर(मिश्री) का पानी एक गिलास (३) दूधी का जूस (४) मूंग का पानी (५) मोसंबी

जूस (६) सफरजन; ये छ वस्तु दो–दो बार लेना। इसके सिवाय कुछ नहीं खाना। सुदर्शन घन बट्टी तीन बार दो दो गोली । **समय से यथा–** सुबह ६ बजे गुड का पानी, ७ बजे शक्कर का पानी, ८ बजे मूंग का पानी क्रस किया हुआ । ९ बजे मोसंबी जूस, १० बजे सफरजन, ११ बजे दूधी का जूस, १२ बजे गुड का पानी, १ बजे शक्कर का पानी, २ बजे मौसंबी, ३ बजे सफरजन, ४ बजे दूधी का पानी, ५ बजे मूंग का पानी । ये १–१ घंटा से थोडी मात्रा में लेना, सात दिन का कल्प है । (११) एक बार गच्छ में बालोतरा में पू.तपस्वीराजजी एवं श्रीप्रकाशमुनिजी तथा कुल ग्यारह संत और १५ महासतियें थी । एक दिन मुझे ९ बजे लोहीठाण की दस्तें चालु हो गई । आहार त्याग करना चाहा । किंतु आज्ञा बेल का मुरब्बा लेने की रही । चार बजे तक रोग बढता गया। दुपहर की वाचणी पूरी होते ही मैं सभी के सामने खडा हुआ श्रीतपस्वीराजजी से कहा– मुझे आहार त्याग करावें।आनाकानी अर्थात् मनाई हुई । मैंने उसी समय सभी के सामने– पूज्य गुढदेव की आज्ञा, भगवान की साक्षी से मुझे रोग नहीं मिटे तब तक तीनों आहार एवं दवा का त्याग, **अप्पाणं वोसिरे** कर दिया । सभी आश्चर्यान्वित थे । परंतु कोई नाराज नहीं हुए । क्यों कि गच्छ में त्याग का महत्त्व और आदर भी था। रात को ताव भी हो गया। दूसरे दिन शाम को ५ बजे तक दस्तें खून की चली । फिर दूसरी रात भी ताव चला, तो भी मेरे परिणामों में कोई चल–विचलता नहीं आई । क्यों कि अंतरमन से एकलविहार की तैयारी के अभ्यास वाले वे वर्ष बीत रहे थे ।(१२) आगम सारांश कार्य प्रारंभ करते समय मैंने पाँच वर्ष का संकल्प प्रावधान बनाया, वैसे ही पूर्ण किया । फिर अध्यापन कार्य १२ वर्ष(४८ से ६० वर्ष की उम्र तक) का बनाया जो तीन वर्ष चला और बाद में ३२ आगम गुजराती विवेचन प्रकाशन का प्रावधान सामने आया । मुझे पूछा गया कितना समय और कितना खर्च होगा । मैंने हाजर जवाब दिया– १०वर्ष एवं एक करोड का खर्च है । सतीयों ने कहा– हमने कइयों से गणित करवाई ,४० लाख से ज्यादा किसी ने नहीं बताया । मैंने बताया आप २–३ वर्ष में पूरा करना चाहते अत: इतना ही होता । मैंने १०वर्ष का काम माना है तो १० वर्ष में करोड होना राइट है । वे बोले दस वर्ष हम सब यहाँ कैसे बैठेंगे ? किधर भी दूर मुम्बई आदि जाना

रहेगा । मैने कहा यह आगम काम है सामान्य पुस्तक नहीं । उतावल इसमें नही चलेगी । वास्तव में समापन तक करीब ९ वर्ष पूरे दसवाँ वर्ष प्रवेश हुआ और सवा करोड करीब खर्च हुआ । चौथे वर्ष हमारा आगम का एक कर्मचारी श्रीजयंतिमुनि के दशनार्थ पेटरबार गया । वहाँ बात चली तो उसने कहा कि ४० लाख का खर्च है तो श्रीजयंतिमुनिजी तुरंत बोल गये कि यह इतना सुंदर श्रेष्ठ काम एक करोड के बिना नहीं होगा। पुस्तक संख्या भी मैंने प्रारंभ से ३५ कायम करी थी उसी प्रावधान से अंत तक ३५ वोल्यूम ही तैयार किये । यह सारा संचालन मेरी देख रेख में चला। जिसमें प्रारंभ में २-४ महिने कर्मचारी पलटे फिर आखिर तक(९वर्ष तक)मेरे रखे कर्मचारी स्थायी रहे।इस आगम विवेचन कार्य में ९ व्यक्ति प्रुफ देखते थे जिसमें साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका चारों का योग था। इस गुढप्राण आगम प्रकाशन के प्रमुख चंद्रकांत शेठ स्वयं सुबह ४ बजे उठकर २ घंटे करीब प्रुफ देखते, सुझाव उटंकित करके भेजते । यह क्रम २३ भाग तक चला फिर उनका क्रम छूट गया । सात वर्ष बाद और ३१ आगम पुस्तकें होने के बाद किसी कारणवश इस आगम कार्य की सेवा से मेरी मुक्ति हो गई । फिर होशियार बनी, तैयार अनुभवी बनी महासतियों ने उस कार्य को पूर्ण किया । मैंने अपना **३२ आगम प्रश्नोत्तर** का सात वर्ष पहले छूटा हुआ कार्य हाथ में लिया जिसे १०भागों में पूर्ण किया । ३२ **आगम मूल पाठ गुजराती लिपि में ९ भागों में** पूर्ण किया । यों मुझे यहाँ **राजकोट में आये करीब (१९९७ से २०११ तक) पंद्रहवाँ** वर्ष प्रारंभ हुआ । १४ चातुर्मास पूरे किये पंद्रहवें चार्तुमास का प्रथम दिन ही हुआ तब में घर जाने के लिये चल दिया ।

श्रावक जीवन का या दीक्षा छोडकर घर जाने का प्रसंग : एकल विहार का पचीसवाँ, दीक्षा का ४४वाँ और राजकोट का १४वाँ चार्तुमास २०१० का प्रारंभ होने का था । ज्ञानगच्छ के कुछ श्रावकों ने मेरे से संपर्क शुढ किया । ज्ञानगच्छ की स्थिति अशांत बनती जा रही थी । उसका कारण था कि श्रीप्रकाशमुनिजी ने सत्ता लेने के बाद थोडीसी ही मनमानी शुढ की थी किंतु श्रीतपस्वीराज को हैरान कर दीक्षा रोकना, सतियों की फिजूल पंचायत करना, प्राय बंद कर दिया था । जिससे गच्छ की शांति समाधि प्रोग्रेस बराबर चल रहा था । श्री तपस्वी गुढदेव का, शासन पर

पुण्य प्रभाव भी रहा था। उनके जीवन के अंतकाल के निकट आने पर **श्री प्रकाश मुनिजी की बुद्धि ने पुनः पलटा खाया । दीक्षा रोकना और सतियों की पंचायत करना शुरू किया ।** अपनी बुद्धि से संप्रदाय और जिनशासन की अच्छाई करने का उनका लक्ष्य होते हुए भी समरथ गुढ के स्वभाव से चले हुए गच्छ की स्थिति का विचार नहीं किया ।श्रीसमरथ गुढ ने गच्छ को, अन्य की समाधि का ध्यान रखकर चलाया था, सत्ता एवं तानाशाही कभी नहीं चलाई थी । **स्वयं श्रीप्रकाशमुनिजी जानते थे कि कभी गुढ के अनुशासन, आज्ञा से वे एक चौमासा भी कहीं गये नहीं,** गुढ को हैरान होना पडता तो भी गुढ ने कभी उनसे या किसी से नाराजगी का रूख नहीं अपनाया। खुद को कितनी भी अंदर ही अंदर परेशानी होवे तो भी **निभना निभाना ही गुढ का ध्रुव सिद्धांत था। ऐसे गुढ के सांचे में ढले संत-सतीजी का ख्याल नहीं रखकर अपने पक्षबल सत्तामद तथा तानाशाही की प्रकृति की अजमाईश करने की होशियारी फिर शुढ कर दी ।** वही पुरानी बात कि सतियों को एक संगठन में हकुमत में चलाना एवं नहीं मानने स्वीकारने वाली सतियों के प्रति रंज, रोष, अहितभाव रखकर और उनकी दीक्षाएँ अन्याय के तरीकों से रोककर, **अंध भक्तों के जोर से ४० दीक्षार्थी बहिनों संबंधी अंतरायकर्म बांधना, शुरू कर दिया । जिसके फलस्वरूप करीब १० दीक्षार्थी बहिनों की, परिवार वालों को शादी करनी पडी,** क्यों कि कितनी उम्र तक ढके । परंतु प्रकाशमुनि को तो शिर्फ अपनी बात और शान की पडी थी, अन्य सब तरफ से आंखे मीच रखी थी । जिसमें श्रीकंचनकुंवरजी महासतीजी को हैरान करना शरू किया । जिसने कि अपनी योग्यता से गच्छ की शान छत्तीसगढ और महाराष्ट्र में रख कर चार से १२५ साध्वी की संपदावाली तथा ४० वैरागन की अधिष्ठाता बनी थी।उनके लिये सामान्य सी बातों से **नाकों दम** कर दिया । झूठ-कपट, होशियारी, तानाशाही और आगम विढद्ध तथा समर्थगुढ लिखित आज्ञा-सूचना विढद्ध मनमानी शुरू की । **किं कर्तव्य विमूढ** बने लोगों ने विरोध में **रतलाम चौमासे में ५०० व्यक्तियों को आजीवन अनशन करने हेतु दस्तक भी करवा लिये थे ।** सरकार से रतलाम में जमीन आदि की स्वीकृति भी हो गई थी । मुझे इन सब बातों के पत्रों की नकले सहित जानकारी श्रावकों ने देकर

यह चाहा कि अब आप ही गच्छ का कुछ भला करना हो तो कर लो, अन्यथा गच्छ पर विनाश मंडरा रहा है । मैं अकेला शांति से आगम कार्यों में राजकोट में एकांतवास में था । मेरे पास गच्छ की यह किंचित भी रिपोर्ट नहीं थी किंतु रतलाम चौमासे की भवितव्यता को देख हेरान श्रावक राजकोट तक पहुँचने लगे । २०१० के जून महिने में मुझे गच्छ का यह संशोधन कार्य हाथ में लेना पडा । श्री प्रकाशमुनिजी और गच्छ प्रमुख श्रावकों को सावधान करने हेतु पत्र भेजे । कुछ भी नहीं सुधार देखा तो पुस्तक का प्रारूप भेजकर प्रकाशन का प्रावधान(१०००० या ५०००) भी बताया । किंतु उपेक्षा ही उपेक्षा, जिद्द ही जिद्द रही। आखिर वह पुस्तक मुझे छपाकर सितंबर २०१० तक पूरे हिंदुस्तान में वितरण करनी पडी । फिर भी कुत्ते की पूँछ कभी सीधी होना असंभव । ऐसे असंभव कार्य को मैंने संभव करने का प्रयत्न शिर्फ लोगों के दुःख में सहानुभूति दिखाना जरूरी समझकर की थी । क्यों कि श्रीप्रकाशमुनिजी की खोटे जिद्द की प्रकृति जन्मजात थी वह मुझे मालुम ही था । उन्होंने कभी समर्थ गुढ की भी नहीं सुनी । तीनबार डब्बे बांधकर अकेले विहार करके जिद्द से चले गये थे । एक महीना गुढ से आहार-पानी अलग किया था । तपस्वी गुढदेव को बाप बेटे जाने की धमकियाँ देना उनका जगजाहिर था । उसी जिद्द में दो वर्ष गच्छ से संभोग तोडकर रहे थे । जिसे जोडने का काम मैने ही किया था, इन्हें पुनः शरताज मैने ही दिलाया था । फिर भी सत्ता मिलते ही उसी दिन अपनी जिद्द से पात्र-प्रतिलेखन की एक बार की आज्ञा बेशर्मीपूर्वक मेरे सामने विशिष्ट नजर से देखते हुए आगम विपरीत लगा दी थी । ऐसा सब जानते हुए भी मैने फरसनानुसार परम दुःखी बने लोगों के संतोष हेतु उपक्रम किया था । उसे प्रकाशगुढ ने लाचारी से देखा, सहन किया, क्यों कि मेरे हाथ में कलम थी और वे तो संप्रदाय के नियम में दिखाउ बंधे हुए थे । क्यों कि खोटी पंचायत के लिये ढेर सारे विचित्र पत्र लिखाते ही थे ।

रतलाम चौमासे में ज्ञानगच्छ नहीं टूटा और **पुस्तक तथा पत्रों से विपक्ष को खूब मझा आया उनका रोष-दुख संतोष-प्रसन्नता में बदल गया । ५०० लोगों का आजीवन अनशन का माहोल मेरे पत्र प्रारंभ होते ही जुलाई मास में समाप्त होने लगा था कि अब प्रकाशगुढ को जो करना**

हो वो करे । गच्छ तोडे, सतियों को निकाले; वह सब लोगों के मन स्वीकार करने लगे कि ऐसे **जिद्दी और तानाशाह गुढ से छूट पडने में दुख की जगह आनंद ही है । चौमासा उठने पर प्रकाशगुढ ने गच्छ के टुकडे होने का कार्य कर ही दिया ।** संत निकले, सतियों को निकाला, मनमानी भले कर ली पर दुनियाँ का वातावरण बहुत बिगडा । उन्हें चौमासा मिलना और शेषकाल विचरना भी भारी पड गया । अंदर ही अंदर श्रावक और संतसती प्रकाश गच्छ के मेरे पर ढष्ट से थे । मेरा कुछ नुकशान करने की फिराक में थे । मैं भी खेद पश्चात्ताप युक्त क्षमापनापत्र लिखने के विचार में ही था क्यों कि मुझे तो अपनी आराधना का खटका था ही । उम्र भी समाप्ति पर आ पहुँची थी । इतने में मेरा सगा भाई आशकरण राजकोट आ पहुँचा और उसने भी चाहा कि मैं क्षमापना पत्र लिख दूँ । मैं तो तैयार ही था एक पृष्ट का लेटरपेड पर क्षमापना भाव लिख दिया। भाई खुश था । उसे श्रीप्रकाशमुनि के दर्शनार्थ जाना ही था। पत्र पहुँचा दिया और कहा-आप भी क्षमापना पत्र अपनी तरफ से लिख दें तो अच्छा हो जायेगा, मैं पहुँचा दूँगा।तो बोले कि हमारे ऐसा कुछ लिखाने का रिवाज नहीं हैं आप मौखिक क्षमापना कह देना।

मुँह में राम बगलमे छुरी की उक्ति चल रही थी, एक श्रावक एक मुसलमान स्त्री को लेकर पहुँचा, कहा कि इस बहिन के मार्फत मैं श्रीतिलोकमुनि को घर भेगा कर सकता हूँ उत्तर मिला हम इसमें क्या करें तुम जानो । यह वहाँ बैठे एक ज्ञानगच्छ के श्रावक भक्त ने सुना। उसका कोई परहेज नहीं रखते थे क्यों कि रतलाम चौमासे में उसने परम भक्ति का व्यवहार रखा था, गच्छ का वह विशिष्ट श्रावक था । किंतु उठापटक करते करते जब श्रीप्रकाशमुनिजी ने श्रीकंचनकुंवरजी महासती को आज्ञाबाहर घोषित कर दिया तो किन्ही पारिवारिक कारणों से विभक्त संघ में श्रीकंचनकुंवरजी के श्रावकों में उसके रहने का नंबर लगा । अंदर की बात कभी भी फूटी और वाया वाया मेरे तक पहुँच गई। तब तक मैं उस तंत्र प्रयोग के ५ महिने भुगत चुका था । पाँच जनवरी को गोचरी में एक घर में सीढिया चढते-चढते आंखो आडी अंधारी आई, दिनभर मैं हैरान रहा । आखिर कोई रोग डॉक्टर को पकडने में नहीं आया । अकेला मैं रातें तडफ-तडफ कर निकालने

लगा। खुराक घटती गई क्यों कि तकलीफ पेट में थी । १५ किलो वजन घट चुका था । हैरान परेशान होते हुए भी धैर्य से अकेला समय पास कर रहा था । आगम प्रश्नोत्तर २०१३ में पूर्ण करना था । **उक्त तंत्र की बात ५ जनवरी २०११की थी ।** तांत्रिक प्रयोग की सूचना मिलने पर मैने तत्काल निर्णय कर लिया कि अब समय बीत गया है कोई प्रतिकार रूप उपाय नहीं हो सकता है । **प्रत्याघात के असर को फीका करने का एक ही तरीका शेष रहा है कि अब देश और वेश छोडने से ही इस दिक्कत का अंत आ सकता है ।** निर्णय पक्का रहा, सब संयोग मिले, आगम कार्य अधूरे भी समेटे । ११ जुलाई २०११ को गुजराती साहित्य ट्रक भर के श्री प्रकाशमुनिजी अजरामर संप्रदाय को भचाऊ-कच्छ पहुँचाया ।१२ जुलाई को हिंदी साहित्य ट्रक भर कर सूरत रवाना किया और मुझे उसी दिन रात्रि ११ बजे श्री विमलकुमारजी नवलखा अपने दो पुत्रों के साथ गाडी लेकर सूरत से मेरे सहयोगार्थ आये थे उनके साथ चला। **मेरे फ्लेट के जैन अजैन सभी की सहानुभूति मेरे उपर थी, अश्रुभरी आंखो से सभी को मेरी परिस्थिति का अपार दुख था, आशीर्वचन थे, शुभकामना थी। वे लोग दस बजे उपाश्रय में लोग आ पहुँचे ११ बजे गाडी के पास बाहर खडे थे।** आखिर श्री विमलकुमारजी नवलखा ने, जो मेरे परम उपकारी मित्र ऐसी दिक्कत की घडी में आ खडे होने वाले पूर्ण हिम्मत दिलाने वाले सूझबूझ पूर्वक मेरी उलझन को पार कर, गाडी रवाना की ।

सुबह ६ बजे हम सूरत उनके घर पहुँच गये । दो महीने मैं उनके घर रहा । फिर कर्मोदय वश सारे परिवार का व्यवहार बदल जाने पर एवं परम उपकारी होने से ऊफ भी नहीं करते हुए राजनांदगाँव से मेरा भतीजा, भाई आशकरण का लडका मुझे लेने आ गया था । मैं सितंबर २० तारीख को राजनांदगाँव पहुँच गया था । भाई के परिवार में १० सदस्य एक ही चोके से रहने वाले थे ग्यारहवाँ मैं था। मकान ५० x १२५ फुट का था । मुझे एक कमरा स्वतंत्र रहने सोने का मिला जिसमें मेरा दीक्षा पूर्व का फोटो था और एक दादा पडदादा जो देव हुए उनका फोटो था। रसोई घर, डाईनिंग टेबल के नजदीक वह मेरा कमरा ग्राउन्ड फ्लोर में था । एक भतीजा सपरिवार फस्ट फ्लोर में था बाकी सभी ग्राउन्ड फ्लोर में थे । फेक्ट्री के लेन देन का एक ओफिस भी घर में ग्राउन्ड फ्लोर में

था । स्वतंत्र होते हुए भी मेरे कमरे में १० ही सदस्यों का आवागमन था। भाई अपने विशिष्ट तेजुरी के काम हेतु, भाभी अपने विशिष्ट कपडों हेतु, दोनों भतीजों के ड्रेस का एक कबाट था जिसके लिये दोनों का आना होता था और दोनों श्रीमतीयों को उन कपडों की सजावट व्यवस्था रखने तथा घर खर्च के साधन संग्रह हेतु और भाई के चार पोत्रों को कोम्प्युटर में रमत-गमत तथा अपने बेग रखने लेने आना होता । इस प्रकार के आवागमन से मेरा मनोरंजन हो जाना, बोर नहीं होना, अकेले नहीं पडना स्वाभाविक था । वेदना ज्यादा होने से परेशानी के समय को पास करने के लिये मैं टी.वी. होल में भी बैठता एवं २-४ दैनिक पत्र देखते हुए समय पास करता तथा २-४ सामायिक भी सुबह शाम में कर लेता था । महिने में प्रायः १ उपवास भी करता ।

१-२ महिना भाई आदि का पूरा सन्मान अहोभाव रहा । फिर तो थोडा सन्मान, थोडा टोकना, थोडा तिरस्कार, थोडा लोगों और मेरे सामने निंदा इन्सल्ट; बहुत कुछ चलने लगा । फिर भाव और व्यवहार में भी परहेज, पीठ पीछे निंदाचर्चा होती । यह सब १०-२० प्रतिशत रहा एवं ८० प्रतिशत मानवता का व्यवहार चलता। मैं तो शरीर की परेशानी से लाचार था । सब कुछ देखते समझते भी ऊफ भी करना अधिक गुना समझ कर, समझा नासमझा सा करके रहने लगा । भाई के घर सुसंयोगवश एक वैद्य चातुर्मास में संतों के दशनार्थ आया । उसकी संतो के पास हो रही बातों से मेरा भाई आशकरण पहिचान गया कि यह कोई वैद्य है पूछ कर उसे घर ले आया । मेरी नाडी देखते ही वह नाडी वैद्य निदान कर सका । क्यों कि वह कुशल नाडी अनुभवी, १२ व्रतधारी, स्थानकवासी ज्ञान गच्छीय श्रावक, बुजुर्ग ६३ वर्ष का, आवर(भवानी मंडी क्षेत्र)मालवा का था । निदान अपने लेटर पेड पर लिख कर दवा लिख दी । ५-१० दवा का मिश्रण कर चूर्ण लेना था । **रोग का नाम लिखा- पित्तज हृतशांस (पित्त प्रकोप से हार्ट और सांस) तथा बद्ध प्रकोष्ट व्योम वात प्रकोप जन्य (पेट जकडबंध रहता उलटगति वाली विचित्र वायु से)** ये दो निदान पढकर समझकर मेरी सारी दर्दवेदना का उसमें समावेश देखकर मुझे अत्यंत श्रद्धा जमी । जिससे मैंने उसकी दवा निरंतर बिना किसी विल्कप के पूर्ण श्रद्धा से चालु रखी । वैद्य दवा लिखकर २०-३० मिनट में चला

भी गया फिर दो साल तक नहीं मिला।फिर दो साल तक नहीं मिला। मेरा भाई के घर दूसरा महिना प्रारंभ हुआ था। दवा बजार से तैयार होकर आ गई । चालु कर दी ।९ महिने में ७० प्रतिशत अच्छा लगने लगा । भाई के घर कुल १० महिना रहकर कोई भी बहसबाजी किये बिना, विवेक व बुद्धिमानी से रस्ता निकालकर भाई की इच्छा मंजूरी पूर्वक तथा बडी बहन रायपुरवाली एवं मुम्बई वाले सबसे छोटे भाई की अंतरंग सलाह पूर्वक मैंने राजकोट से अपना सेवक बुलाकर राजकोट आ गया। यों मैंने १२-७-२०११को राजकोट एवं दीक्षा छोडी थी और अब २९-७-२०१२ को वापिस राजकोट आ गया । पूर्व में १० वर्ष रहे वैशाली नगर के चंद्रप्रभु उपाश्रय में ही अब श्रावक जीवन में रहने लगा । खाना सोना उसी फ्लेट में जोशी भाई के घर करता, जो घर उसे मैंने ही पडोश में आधे अपने खर्चे से सेवार्थ दिलाया था । वहाँ संवत्सरी का उपवास किया तो ठीक रहा।

पारणे के दिन महासतीजी को धीढभाई की मदद से पढाना प्रारंभ किया । वह अध्यापन करीब चार महिना चला तब मुझे बिमार हुए (५जनवरी २०११से ५ जनवरी २०१३ तक)दो वर्ष पूरे हुए थे । ५ जनवरी-२०१३ के दिन २ बजे से ४ बजे तक पढाने आया था । साडे तीन बजे के बाद पढाते-पढाते पेट में तीव्र वेदना उठी, मुँह से पानी छूटने लगा, पोने चार बजे जीव गभराया, छतपर जाकर उल्टी करी, धीढभाई साथ में थे, सेवा करके घर पहुँचाया और चले गये। मैंने आहार औषध का त्याग कर दिया, उल्टी एवं दस्ते प्रबल वेदना से १६ घंटे चली(शामके ४ बझे से सुबह ८ बझे तक)।मैं समझ गया कि उपद्रव का अंत आया है । भगवान महावीर स्वामी के लोहीठाण और बिजोरापाक का प्रकरण स्मृति में था । सुबह आठ बजे अंतिम दस्त के बाद बजार से दही लाकर हल्दी के साथ सेवन किया । रोग गया, पेट में शांति होने लगी, दो महिना बहुत कमजोरी रही । निकट होमियोपेथिक चिकित्सक फ्री सेवा करने वाले शिरीषभाई की सलाह से दो महीने निकाला तब तक मैं उपाश्रय छोडकर किराये के मकान में १७ फरवरी को आ गया था । (जोशीभाई का व्यवहार भी उसकी लडकी की स्वार्थपूर्ण बातों में आकर बदल जाने से।लडकी को उस खोटी सलाह का फल मिला कि थोडे समय में ही पति के निकाल देने से पिता के घर

में आकर नौकरी करनी पडी) तारीख २०-०२-२०१३ को मैं वजनकांटा खरीद कर लाया तब मेरा वजन ५० किलो था । मेरे उपकारी नाडीवैद्य की दवा कूरीयर से आ जाती थी उसे चालु रखा । १ वर्ष में मेरा वजन ७ किलो बढा लिया गया । खानपान विवेक मैंने अपने अनुभव के योग्य निर्णय से रखा । अब मैं ट्रेन से बाहर गाँव पढाने भी जाने लगा ।

मिलनदर्शन : तबियत १०० प्रतिशत अच्छी जानकर सब भाई बहनों से मिलने और ज्ञानगच्छ के प्रमुख संत सतीजी के दर्शन क्षमायाचना तथा दीक्षा संथारे की सूचना करने क्रमशः निकल पडा । जिसमें श्री उत्तममुनिजी के मुंबइ में, श्रीप्रकाशमुनिजी के राजनांदगाँव में, साध्वी श्रीभँवरकुँवरजी के पाली में तथा श्रीकंचनकुँवरजी महासतीजी की शिष्याओं के मालेगाँव में दर्शन किये। श्रीशालीभद्रमुनिजीके जोधपुर दर्शन किये । राजनांदगाँव, रायपुर, दुर्ग, भिलाई, जोधपुर आदि भाई बहिनों से मिलकर होली तक राजकोट आ गया । संत सतीजी को पढाने के लिए मुम्बई तक जाना चालु हुआ। फिर ऐरोप्लेन यात्रा भी चालु हो गई । जिसमें मद्रास पाँच दिन के लिये और मुंबई दो दिन के लिये गया। दो वर्ष में अब(जनवरी २०१५ में)मेरा वजन कुल १५ किलो वापिस बढ चुका था । मैं ११० प्रतिशत अब पूर्ण स्वस्थ बन गया।रेल यात्रा से मुंबई, जलगाँव, इन्दौर श्रमणसंघ के संमेलन में जाना हुआ । जहाँ ४०० उपर संतसतीजी आये थे । १२ दिन वहाँ रहा । स्वस्थ हो जाने पर मैंने २०१३ में पुनः आगम प्रकाशन कार्य भी किराये के मकान में शुरू कर दिया । प्रश्नोत्तर की १० हिन्दी की, १० गुजराती की पुस्तकें तो सूरत, राजनांदगाँव रहते हुए पूर्ण हो चुकी थी । यहाँ मैंने **आगम निबंधमाला भाग-१ से ५ में करीब ४५० निबंधों का संकलन हिन्दी तथा गुजराती दोनों एडिशन में पूर्ण किया।** एक पुस्तक **आगम परिचय** की अनेक जानकारियों से युक्त हिन्दी गुजराती दोनों एडिशन में प्रकाशित करी।इसी बीच एकलविहार से मुक्ति और संवत्सरी विचारणा की एक बुक हिन्दी में तथा गुजराती में अलग-अलग निकाली।मूर्तिपूजकों के मत्थे खाज आनी शुरू हुई, आगम सिद्ध मूर्तिपूजा पुस्तक रूप अशद् प्रचार का-**ईंट का जवाब पथ्थर से** देने में **जैसी दे वैसी मिले कुए की गुंजार** नामक पुस्तक हिम्मत से प्रकाशित कर तत्काल वितरण प्रारंभ कर दिया। मूर्तिपूजकों को अपनी

करतूतों का प्रतिफल मिले इस हेतु यह पुस्तक हमने अपना परिचय नहीं देते हुए प्रसारित की है । डर से नहीं किन्तु उस्तादों को उस्तादी का फल हैरानी में मिले इसलिये । ६०० पुस्तकों का वितरण ३०-६-२०१५ तक हो चुका है । इसके पूर्व सन २०९० में भी मूर्तिपूजकों को सचोट जवाब ३२ पृष्ठ की पुस्तक से दिया था । उसे मदनगंज चौमासे में उपाध्याय कन्हैयालालजी कमल म.सा. के सहयोग से प्रचारित की थी । अब मैं आत्मकथा लिख रहा हूँ । १-७-२०१५ को यहाँ तक पहुँचा हूँ । १५ जुलाई तक इस प्रकाशन कार्य से तथा अगला और अंतिम प्रकाशन पुष्प-११६ में मैं मेरे समस्त साहित्य विषयों की अनुक्रमणिका तैयार कर, प्रकाशित करके प्रकाशन कार्य से संपूर्ण निवृत्त होकर अहमदाबाद शिफ्ट होने जा रहा हूँ । जहाँ नवरंगपुरा में वहाँ के अध्यक्ष विरक्तात्मा प्रवचन प्रभावक श्री भरतभाई शाह ने मुझे फ्लेट सेवार्थ दिया है और वे स्वयं दो घंटे रोजाना वाँचना लेने का भाव रखते हैं । जो उपक्रम मई में चालू कर दिया गया ।

अध्यापन प्रावधानकी प्रगति : श्री प्रकाशमुनिजी के गुजरात में थान चौमासे में (राजकोट से ७० किलोमीटर) जाकर जीवाभिगममसूत्र जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, ज्योतिषराजप्रज्ञप्ति, प्रज्ञापनासूत्र तथा समुथानसूत्र वाँचणी थोकडे आदि चार महिना राजकोट से अपडाउन करके करीब ४० बार गया । चातर्मास बाद सुरेन्द्रनगर भी १० दिन गया । उसके बाद एक वर्ष करीब अहमदाबाद महीने में १५ दिन औषतन रहकर(बाकी राजकोट में) शांत-क्रांति संघ के मुनि पुंगव श्री प्रेममुनिजी म.सा. ठाणा ४ के साथ शेषकाल में और चौमासे में मणीनगर अध्यापन एवं ज्ञान चर्चा का लाभ आदानप्रदान हुआ । उन्हीं के संयोग से मद्रास-५ दिन के लिये आचार्यश्री विजयराजजी म.सा. की सेवा में गया। जहाँ खुद आचार्यश्रीने तथा संतसती एवं दीक्षार्थी बहिन ने लाभ लिया । फिर गुजरात युनिवर्सिटी अहमदाबाद रिसर्च सेंटर तथा मुम्बई-घाटकोपर, मुलुंड, चींचपोकली भी निमंत्रण से रिसर्च सेंटरो में गया । जहाँ २-४ घंटों का पोग्राम रहता । फिर पत्र द्वारा भावनगर से दरियापुरी संप्रदायगत संतों की जिज्ञासा आने पर वहाँ जाना हुआ तथा बरवाला संप्रदाय के श्री सरदारमुनिजी म.सा. व उनके संतों ने भी तीन दिन के रोकाण में लाभ लिया। वहाँ एक दिन संतों ने मांग करी कि

हमें पूरे दिन में संपूर्ण निशीथ सूत्र समझावें । मैंने सुबह ८ से शाम के ५ बजे तक का समय मांगा । संतो ने गौचरी-आहार के सिवाय पूरा समय निकाला । मैंने २० ही उद्देशे एक दिन में लगातार धारणा, पोइंट, विशिष्टताओं सहित समझाये, जो यथासमय ५ बजे पूर्ण हो गये। इसी के दौरान गुढ आज्ञापूर्वक एक संत हितेषमुनि(१३वर्ष की दीक्षापर्याय) दिसंबर १८ को मेरे पास राजकोट एक वर्ष पढने मात्र के उद्देश्य से आये। छ-सात महिने में उन्होंने प्रायः मौनपूर्वक टाइम बचाकर अध्ययन किया। मनचाहा अपार संतोष होकर उनका अध्ययन पूर्णता पर पहुँचा। जिसमें उन्हें आचारांग सूत्र प्रथम श्रुतस्कंध और भगवती सूत्र आदि कठिन शास्त्र का मूल पाठ से अर्थ समझ में आने लगा ।

मैं २०१५ के मार्च में इन्दौर के साधु-सम्मेलन में १२ दिन के लिये गया । वहाँ संत, सती, श्रावकों ने ज्ञानचर्चा का लाभ लिया । जहाँ मैं सुबह साडे सात बजे से रात्रि ९ बजे तक एक्टिव रहता था इसके उपरांत २०-२२ संत-सतीजी की चातुर्मास में बुलाने की तीव्र इच्छा रही उनका निमंत्रण मैं सशर्त लेकर आया । **शर्त**- मैं मेरे साहित्य की १६ पुस्तक फ्री भेजूँगा उसे पढकर प्रश्न संकलन कर बुलावेंगे तो आउँगा ।

अभी यह मेरा ज्ञान प्रदान प्रावधान दिसंबर-जनवरी तक चलता रहेगा । जिसमें अधिक समय अहमदाबाद में रहूँगा उसमें २०१५ के चातुर्मास मणीनगर, नवावाडज(चंपकनगर), नवरंगपुरा, पालडी आदि के संत सतीजी को समय दिया जायेगा । इसके अतिरिक्त सुरेन्द्रनगर, राजकोट भी यथाप्रसंग जाना रहेगा और जो भी बाहरगाँव के ढचिपूर्ण भावुक संत-सती, श्रावक-श्राविका शर्त मंजूर कर अध्ययन कर बुलायेंगे वहाँ भी जाने का प्रयत्न रहेगा । अंतिम दो महिने अर्थात् दिसंबर जनवरी लींबडी अजरामर संप्रदाय के श्री प्रकाशमुनिजी के शिष्य-शिष्याओं के लिये सशर्त(१६ पुस्तकें दो बार पढने पर) मुंबई जाने का पोग्राम रखा है । २०१६ के १५ फरवरी से १५ जनवरी २०१७ तक मौन संलेखना साधना और फिर दीक्षा संथारा का संकल्प रखा है । संलेखना के समय चार विगय त्याग,एक विगय सकारण आगार तथा स्वाध्याय, सामायिक, मौन करना । पहले का कंठस्थ ज्ञान वापिस उपस्थित करना । इस ११ महीनों में प्रायः आयंबिल करने का संकल्प रखा है । फिर एक महिना दीक्षा की तैयारी करके पाँच उपवास मे दीक्षा का पचक्खाण करके

बने । सभी के व्यवहार से हैरानी परेशानी और प्रतिकूल व्यवहार असदाचरण पाकर भगवान की मौजुदगी के प्रवर्तमान शासन में उन्हें अकेले विचरण करना पडा और व्याख्या परंपरा अनुसार वे उसी भव से मुक्तिगामी बने । जीवन के पुण्यांशों का ऐसा विरोधाभास चौथे आरे की मुक्तिगामी आत्मा में हो सकता है। इसी तरह इस आत्मकथागत व्यक्ति के व्यक्तित्व में भी देखने को मिलता है । ज्ञान विकाश संयोग में सर्वत्र प्रायः सफलता रूप पोजेटिव पोइंट एवं निकट संयोग प्रायः नेगेटिव पोइंट वाले स्व उपार्जित विचित्र कर्मसंयोग से जीवन में बने हैं ।

(१) ज्ञान संयोग : स्कूल की पढाई में अच्छे कजिन भाईयों (अमृतजी, गुमानजी) का साथ दुर्ग, रायपुर में; वैराग्य भावित ज्ञान में– सुखलालजी गोलेछा(रामलालजी गोलेछा के भाई), मदन चन्दजी गोलेछा(पडोशी), चंपालालजी गोलेछा(उत्तममुनिजी के संसारी पिता) एवं ज्ञानगच्छ के आदर्श संत पूज्य समर्थगुढ एवं चंपकगुढ का संयोग। बीकानेर में सेठिया संस्था के पंडितों का संयोग भरपूर अध्ययन संस्कृत, प्राकृत, न्याय, आगम, थोकडे । प्रथम चातुर्मास में अध्यापन सहयोग के अभाव से आज्ञापूर्वक स्वतः अध्ययन का मार्ग खुल जाने से बेरोकटोक अध्ययन । प्रथम चातुर्मास में थोकडों का तथा गम्मा का अध्यापन एवं युवकों से रात्रि में सफल ज्ञानचर्चा । श्री समर्थगुढ कृपा से विहार में छेदसूत्र वाचणी । फिर महासतियों संतों ग्रंथालयों के संचालकों का अपार सहयोग। चौथे चौमासे से १९वें चौमासे तक सर्वत्र अभिधान राजेन्द्रकोश संयोग । गच्छ में महासतियों को वाचना प्रदान संयोग । संतों में अमृतमुनि पारसमुनि को तैयार करने का संयोग।गच्छ त्याग के बाद एकलविहार में अनुयोग कार्य संयोग, ब्यावर से प्रकाशित छेदसूत्र विवेचन लेखन।फिर स्वनिर्भर आगम सारांश ३२ पुष्प एवं आठ सजिल्द भाग यों साहित्य सर्जन यात्रा में ११६ पुस्तक संपादन प्रकाशन । कच्छ में अध्यापन, राजकोट

उसके बाद आजीवन तिविहार एवं चौविहार संथारा पचक्खाण करना है ।

क्षमायाचना– इस जीवन में लेखन कार्य में जिनके साथ कटु व्यवहार हुआ हो उसकी हार्दिक क्षमा याचना । खासकर मूर्तिपूजक जैन मित्रों से तथा ज्ञानगच्छ के शिरताज श्री प्रकाशमुनिजी से तथा उनके भक्तगण समस्त साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका से हार्दिक क्षमायाचना अंतःकरण पूर्वक । तथा इस पुस्तक में सत्य उजागर प्रसंग से जिनके भी हृदय को ठेस लगेगी उनसे भी पूर्व ही क्षमायाचना करता हूँ । आशा है सभी क्षमा प्रदान कर अपनी आत्मा का हित साधन करते हुए मेरी आत्मा पर कृपा दृष्टि बनायेंगे । वैर-झैर त्यागना यह मानवभव और जिनवाणी मिलने का श्रेष्ठ लाभ है । अनंत सिद्धों एवं पंचपरमेष्ठी भगवंतो को सभक्ति भाव वंदन । इति भूलचूक मिच्छामि दुक्कडं । प्रकाशन यात्रा में यह व्यक्तिगत ११५ वीं पुस्तक है ११६ वीं पुस्तक में स्व संपादित खास साहित्य की विषयानु क्रमणिका तथा अकारादि अनुक्रमाणिका बनाने का प्रावधान है । २०१५ के जुलाई अंत तक प्रकाशनकार्य से निवृत्ति एवं नवेम्बर २०१५ तक सप्लाई कार्य से निवृत्ति का विचार है । संलेखना पीरियड में मोबाईल प्रयोग नहीं रहेगा(११ महिना) । मौन में लिखित जवाब देना खुला रहेगा । पत्राचार भी यथा प्रसंग रहेगा । इति शुभम् ।

आत्मकथा सार

इस कर्मसंसार में व्यक्ति के जीवन में प्रायः पोजीटीव पोइंट और नेगेटीव पोइंट दोनों का अस्तित्व होता है । यथा– आगम उत्तराध्ययन वर्णित गर्गाचार्य ५०० शिष्यों की संपदा, तीर्थंकर महावीर स्वामी की हाजरी में आचार्य पद विभूषित, आगमिक स्थविर और गणधर पद विभूषित थे । मृदु मार्दव गुण संपन्न, गंभीर, सुसमाधिवन्त, महात्मा, शीलसंपन्न आत्मा इस पृथ्वी पर विचरण करने लगे। इतने सारे विशेष आगमोक्त गुणों के धारक थे तथापि ५०० शिष्यों में से वे एक भी शिष्य को अपने इच्छित स्वभावस्थ नहीं बना सके । सभी शिष्यों से अनाराधित

में अध्यापन १९९७के चार्तुमास में ७० साधु-साध्वी की उपस्थिति में आगम वाचना अपूर्व श्रद्धाभक्ति एवं अनुशासन पूर्ण वातावरण से । फिर गुढप्राण आगम बतीसी विवेचन के ३५आगमग्रंथ प्रकाशन का संचालन संपादन संयोग। श्रावक जीवन होते हुए भी संत-सतीजी द्वारा निमंत्रण देकर सन्मान पूर्वक ग्राम-नगरों में बुलाकर ज्ञान लाभ संयोग । यों अनेक ज्ञानविकास के एवं आराधना के पोजेटिव पोइंट जीवन में रहे ।

(२) साथी असद्भाव संयोग : प्रथम चातुर्मास में श्रीसमर्थगुढ सेवा सानिध्य अंतराय ।सातवें चौमासे का कमर दर्द में विकट विहार, रोशनमुनि का संयोग एवं असफलता। फिर श्रीहुकममुनि के साथ मालव विहार असफल, श्रीगिरधारीमुनि संग मंदसौर चौमासा बहुत सफल किंतु संत विमुखता । फिर श्रीराममुनि संग छत्तीसगढ जाते हैरानी, छत्तीसगढ रायपुर में श्रीमथुरामुनि का निष्ठुर व्यवहार संयोग, मारवाड आते श्रीराजेशमुनि को बैतूल में हैरानी। मारवाड विहार में धोवण से श्रीमहात्माजी हैरान, प्रकाशगुढ छत्तीसगढ के पत्र से अंतर्मन में विमुख और तपस्वीगुढ की उनकी हुज्जत में मेरी सही सलाह के नापसंद होने से ढष्टता। पात्र दो बार या एक बार प्रतिलेखन की सैद्धांतिक रसाकसी अर्थात् मेरी सत्ता चली तो दो बार और उनकी सत्ता आई तो एक बार । उनके गच्छ त्याग से मेरी जवाबदारी । फिर श्रावकों की गच्छ छोडने वाले के साथ घुसपेठ से हैरानी एवं गच्छ हित में सूझ बूझ। फिर मेरा एकलविहार । उसमें असाताकारी घटनाएँ । अनुयोग कार्य ७ साल करने के बाद में श्रीगौतममुनि को फुसलाने से उनके साथ विग्रह। गुढप्राण आगम सेवा में भी सात साल बाद अर्थ अनैतिकता की वजह से विग्रह। फिर प्रकाश-कंचन हुज्जत में खोटी होशियारी के फलस्वरूप मेरा तांत्रिक फसावट में आना । फिर दीक्षा त्याग और श्रावक जीवन । श्रावक जीवन में भी तीन जगह असद्भाव

(सूरत, राजनांदगाँव,राजकोट)आखिर अकेले किराये के मकान में शांति पूर्ण ४ वर्ष का जीवन ।रावटी-जोधपुर के साधक जौहरीमलजी पारख के वाक्य- **एकलविहार आपके लिये वरदान सिद्ध होगा और संग साथ आपको पीछे खींचेगा,** यह वचन पूर्ण सत्य सिद्ध हुए ।मैंने साथी असद्भाव संयोग में भी **सदा जागरूकता रखी कि गुढ रत्नाधिक किसी की भी कभी किंचित भी आसातना नहीं करना**, यह जीवन का श्रेष्ठ एवं आगमिक लक्ष्य सदा बना रहा जिसका गच्छ त्याग तक भी ईमानदारी पूर्वक पूर्ण पालन रहा । कैसा भी व्यवहार संयोग मिला तो भी ऊफ तक नहीं किया ।

(३) कर्मचारी संयोग : यह सहयोग सदा इच्छित और शांतिकारी और स्थायित्व वाला प्रायः सदा मिलता रहा । कर्मचारियों के सुसंयोग से ही कुल ११६ पुस्तकें स्वसाहित्य प्रकाशन । गुढप्राण के ४५ आगमग्रंथों का संचालन-संपादन । अनुयोग सेवा सात वर्ष तथा श्रावकजीवन के ढाई वर्ष में ६+६+३+२=१७ पुस्तक का प्रकाशन, कंपोज, मुद्रण, पेकिंग, सप्लाई आदि कर्मचारी के सहयोग से ही सफल । किराये के मकान मालिक श्री गोविंदभाई का अतिसुंदर संयोग ।ढाई वर्ष निरंतर आदर, सेवाभाव, इच्छित खाना बनाकर देना आदि यथायोग्य समय पूर्ण सेवा सहयोग। अहमदाबाद नवरंगपुरा में भरतभाई शाह द्वारा मकान सहयोग । यह सब पोजेटिव पोइंट रहे ।

यों विचित्र जीवन सें कर्मसिद्धांत को समझकर जीवन में अपूर्व धैर्य बुद्धि, विवेक विचक्षणता सें गतिमान एवं प्रगतिमान होने वाला साधक तथा कभी भी हताश नहीं होने वाला उत्साह के साथ एक दिन ध्येय अनुसार मुक्तिगामी बन सकता है ।

जैनागम नवनीत सारांश पुस्तकों के प्रति अभिमत

–कविरत्न श्री चंदनमुनि पंजाबी

गीदडवाहा मंडी से प्राप्त गुणषष्टक

खंड एक से लेकर के, आठों ही हमने पाया है ।
जैनागम नवनीत देख कर, मन न मोद समाया है ॥१॥

पंडित रत्न तिलोक मुनिवर, इसके लेखक भारे हैं ।
जैन जगत के तेज सितारे, जिनको कहते सारे हैं ॥२॥

उनकी कलम कला की, जितनी करो प्रशंसा थोडी है ।
इनको श्रेष्ठ बनाने में कुछ, कसर न इनने छोडी है ॥३॥

जिन्हें देख कर जिन्हें श्रवण कर, कमल हृदय के खिलते हैं।
जैनागम विद्वान गहनतर, उनसे कम ही मिलते हैं ॥४॥

हमें हर्ष है स्थानकवासी, जैन जगत में इनको देख ।
कहने में संकोच नहीं कुछ, अपनी उपमा है वे एक ॥५॥

गीदडवाहा मंडी में जो, पंजाबी मुनि चन्दन है ।
उनका इनके इन ग्रंथों का, शत शत अभिनन्दन है ॥६॥

ooooo

परम आदरणीय आसु कवि श्री चंदनमुनिजी म.सा. अनेक वर्षों से गीदडवाहा मंडी पंजाब में ठाणापति विराजमान थे । चार्तुमास सूचि के आधार से अनेक संतों को स्वाध्यायार्थ पुस्तकें भेजी गई फलतः अनेक पत्र स्वतः आये । धर्म जगत के लोग बहुत खुश हुए । उनके पत्रों का संलकन आगे देखें ।

ooooo

जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर पुस्तकों का अभिमताष्टक

आसु–कवि श्री चंदनमुनि पंजाबी

पुस्तक क्या है ? ज्ञान–खजाना !
आगम–विज्ञों ने यह माना !

जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर, पुस्तक प्यारी–प्यारी है ।
एक तरह से अगर कहें हम, केसर की ही क्यारी है ॥१॥

प्रश्नोत्तर शैली का प्यारा, सुगम मार्ग अपनाया है ।
आगम के गम्भीर विषय को, बडा सरस समझाया है ॥२॥

चिन्तन और पठन–पाठन से, पूरा जिनका है सम्बन्ध ।
विषय अनेकों आये इसमें, देने वाले परमानन्द ॥३॥

आगम का अभ्यासी इसको, अगर पढेगा ध्यान लगा ।
सहज–सहज ही बहुत–बहुत कुछ, हाथ सकेगा उसके आ ॥४॥

भला जगत का करने को जिन, सुलझी कलम चलाई है ।
लेखक विज्ञ 'तिलोक मुनीश्वर' जी' को लाख बधाई है ॥५॥

जैनागम–मर्मज्ञ आपकी, महिमा का न कोई अन्त ।
कलम कलाधर आज आप–से, विरले ही हैं दिखते सन्त ॥६॥

जहाँ शिष्य को गुढवर ज्ञानी, गहरा–गहरा देते ज्ञान ।
तेज तिरंगे पृष्ट आवरण, की भी अद्‌भुत ही है शान ॥७॥

विषय जटिल है फिर भी हर इक, बात बहुत समझाई है ।
'चन्दन मुनि' पंजाबी को ये, पुस्तकें भारी भाई है ॥८॥

ooooo

आगम मनीषी मुनिराजश्री का भूत–भावि जीवन विवरण रूप में आत्मकथा (उम्र १२ से ७० वर्ष तक का) पुस्तक प्रस्तुत है ।

ooooo

पाठकों के श्रद्धा पत्र

संत-सतीजी विभाग :-

२. साध्वी द्वय के भाव :- अत्यंत मेहनत एवं बहुमूल्य समय लगाकर आप श्री ने जैन शासन एवं नई पीढ़ी तथा नवागंतुक संत-साध्वियों पर जो उपकार किया है उसकी दूसरी मिसाल मिलना मुश्किल है ।

अत्र विराजित परम विदुषी साध्वी श्री स्नेह प्रभा जी म॰सा॰ एवं साधनाशील पूज्य श्री नूतन प्रभा जी म॰सा॰ ने समस्त खण्डों का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया है। आप श्री जी की गहन विषय को सरल बनाकर समझाने की शैली एवं सत्य बात को स्पष्टता के साथ तथ्यों की गहराई तक पहुँच कर पाठकों को वस्तु स्थिति से अवगत कराने की तडप ने साध्वी द्वय को न केवल प्रभावित वरन् मुग्ध किया है ।

सच्चे अर्थ में आप श्री को जैन जगत का उपाध्याय कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।-**बलबीर चन्द जैन,जैन साधना केंद्र, भून्तर,जिला-कुल्लू (हि.प्र.)**

३. आचार्य सम्राट श्री आनन्दऋषिजी म॰सा॰ :- आपके द्वारा भेजी हुई पुस्तकें प्राप्त हुई एतदर्थ धन्यवाद । मुनि श्री जी का प्रयास स्तुत्य है। ये पुस्तकें काफी उपयोगी सिद्ध हो रही है ।-**जवाहर नाहर, अहमदनगर**

४. आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म॰सा॰ :- आपने सामान्य पाठकों के लिये बहुत ही सुन्दर प्रयास किया है । विषय के अनुरूप यदि भाषा में प्रवाह होता तो सोने में सुगंध हो जाती ।-**मारवाड़ सादड़ी ।**

५. आचार्य श्री तुलसी :- गणाधिपति पूज्य गुढदेव श्री ने फरमाया कि स्वाध्याय करने वाले लोगों के लिये आपका प्रयास लाभदायक है । आगमिक सत्यों को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करना बहुत जरूरी है । **-तढण बेनर्जी, दिल्ली- २६-१०-९४ ।**

६. उपा॰श्री विशालमुनि जी म॰सा॰ :- आगम मनीषी श्री तिलोकमुनि जी म.सा. आगम साहित्य जगत के मूर्धन्य विद्वान संत है आपका जीवन आगम सरस्वती की उपासना में समर्पित हुआ है ।

आपने सम्पूर्ण जैनागम साहित्य को जनता की भाषा में जनता तक पहुँचा कर नये इतिहास का मार्ग प्रशस्त किया है । आगम सारांश

३२ पुष्पों के माध्यम से एवं जैनागम नवनीत के माध्यम से पूज्य मुनि प्रवर तिलोक मुनि जी ने स्वाध्याय प्रेमी जनों को जो उपलब्धियाँ प्रस्तुत की है यह सदैव अविस्मरणीय उपकार रहेगा । हजारों लाखों व्यक्ति आगम ज्ञान के अमृत से अपने आपको आप्लावित कर सकेंगे ।

हम पूज्य मुनि प्रवर तिलोकमुनि जी को हार्दिक बधाइयाँ देते हैं । यह आपकी सेवा पाकर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई । इन ग्रन्थों की संत मुनिराजों को सहज आवश्यकता रहती है । ये ग्रन्थ लघु मुनिराजों के लिये तो पके पकाये अमृत फल के समान है ।

आपने बडी उदारता से यह आगम साहित्य का अमृत रस दिल खोल कर बांटा है । हम आपको सुंदर भविष्य की हार्दिक मंगल कामनाएँ सद्भावनाएं प्रदान करते हैं । तपस्वी रत्न श्री सुमतिप्रकाशजी म॰सा॰ ने आपको धर्म संदेश फरमाया है । **-औरंगाबाद- २०-१०-१९९४।**

७. आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म॰सा॰ :- श्रद्धेय पं॰र॰ श्री तिलोकमुनि जी म॰सा॰ ने बहुत अधिक कठिन परिश्रम करके पुस्तकें लिखी इसके लिये जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा।हमारी ओर से शत शत साधुवाद । पुस्तकें बहुत ही उपयोगी है काम में आती रहती है । आपका परिश्रम सफल हुआ । **-भंडारी सरदारचन्द जी, जोधपुर ।**

८. आचार्य श्री पद्मसागरजी म॰सा॰ :- पुस्तकें मिली । तदर्थ धन्यवाद । जैन दर्शन के परिचय के लिये पुस्तकें उपयोगी है । संपादन कार्य सुंदर है । **-दिल्ली-२१-१०-९४ ।**

९. उपा॰ कवि श्री अमरमुनिजी म॰सा॰ :- आपने अलग अलग शास्त्रों का सार संकलन किया है उसका खूब प्रचार प्रसार हो, लोगों में स्वाध्याय के प्रति जागृति आवे, यह उपक्रम अच्छा है ।-**साध्वी सुमति, वीरायतन-११-९-९० ।**

१०. बंधु त्रिपुटी संत :- आप जो शास्त्र सेवा कर रहे हैं उसकी अंत: करण से अनुमोदना करते हैं । आगम सारांश ग्रंथमाला के हम सदस्य बने हैं और समय समय पर ग्रंथ मिल रहे हैं, धन्यवाद । सौजन्यादि गुण विभूषित सरल स्वभावी विद्वद्वर्य मुनिराज श्री तिलोक मुनि जी की सेवा में बंधु त्रिपुटी की सादर वंदना । **-शांति निकेतन, तीथल ।**

११. उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' :– आगमों की संक्षिप्त सारांश की पुस्तकें लोकप्रिय हुई है। जिसने भी पढ़ी है उसी ने सराही है। साधारण लोगों में श्रुत की प्रभावना करना परम कर्त्तव्य है । एक हजार प्रतियाँ तो कम से कम होनी ही चाहिये । अब तक प्रकाशित आगमों की एक-एक प्रति मेरे उपयोग के लिये भेजने का लक्ष्य रखेंगे । महावीर कल्याण केन्द्र मदनगंज में सुरक्षित स्थान है । स्टोक वहाँ रखा जा सकता है एवं जब चाहें मंगवा सकेंगे ।–**पीह–७–८–९० । (यथा समय १२५ पूर्ण सेट की दलाली अर्थ सहयोग कर फ्री वितरण करवाये)**

१२. राष्ट्र संत श्री गणेशमुनिजी शास्त्री :– नव ज्ञान गच्छ के प्रमुख मनीषी पं॰ रत्न श्री तिलोकमुनिजी म॰सा॰ महान सेवा का लाभ ले रहे हैं । आगम के महान ज्ञाता व कलम कलाधर मुनिश्री का आगम नवनीत माला प्रकाशन का प्रयास अपने आप में अपूर्व देन है । जिसका संघ समाज सदियों तक मार्ग दर्शन प्राप्त करेगा । विद्वान मुनि श्री ने आगम रत्नाकर का मन्थन कर सारांश रूप में अनमोल शिक्षा रत्नों का संचय किया है । जो वस्तुतः नवनीत की भांति तुष्टी-पुष्टी का निमित्त बनेगा । यह प्रयास अत्यंत उपयोगी, कल्याणकारी हितकारी सिद्ध होगा, ऐसा विश्वास है ।

आगम मनीषी श्रद्धेय मुनि श्री के हम सभी बहुत आभारी हैं । जिन्होंने श्रम कर जैनागम नवनीत तैयार कर अनुपम कार्य किया है । अनंत उपकारी प्रभू महावीर के चिंतन को आप श्री ने सहज युगानुकूल शैली में प्रस्तुत कर महत्वपूर्ण आदर्श उपस्थित किया है । इन कृतियों से जिन सिद्धांतो का विशेष प्रचार प्रसार हो सकेगा ऐसा विश्वास है । हमारी ओर से शत-शत वंदन। साथ ही साधुवाद।**तीन पत्रांश, दिल्ली-उदयपुर**

१३. उपदेशाचार्य श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा. :– आपने आगमों का अर्थ हिन्दी भाषा में किया है । संत मुनिराज आदि के लिये पठनीय मननीय है । मुनि श्री ने जो परिश्रम पूर्वक लेखन किया है वह अत्यंत ही सराहनीय है । –**दौंड–१९–९–९० ।**

१४. पं॰ रत्न श्री नरेशमुनिजी म.सा. :– आप ३२ सूत्रों का सारांश लिखने का बहुत ही सुन्दर सराहनीय एवं भगीरथ सफल प्रयास कर रहे हैं । यह समाज एवं संघ की बहुत बड़ी सेवा होगी । समय की पुकार

थी उसको आपने सुनी और कार्य रूप में परिणत कर रहे हैं । आप लिखें कि आपके इस महान यज्ञ में मेरा किस प्रकार का सहयोग काम आ सकता है । **–सादडी–सुमेरपुर–२६–४–९० ।**

१५. प्रवर्तक श्री कुन्दनऋषिजी म.सा. :– आपकी कुछ पुस्तकें छुटी छुटी आई, आपका परिश्रम स्तुत्य है । आप कि योग्यता के बारे में बहुत सुना है, प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुए हैं । **–२९–९–९५ ।**

१६. पं॰ मुनिश्री विमल मुनिजी, वीरेन्द्र मुनिजी :– मुनि श्री ने काफी महेनत करके शास्त्रों का अनुवाद कर सरल हिन्दी भाषा में बनाया जिससे हर कोई लाभ ले सके ।इसके लिये मुनि श्री बधाई के पात्र है । **–रेडहिल्स मद्रास–२७–१०–९४ ।**

१७. उप-प्रवर्तक श्री मेघराजजी म.सा. :– जैनागम नवनीत खण्ड पाँच देखा, बहुत सार मय लगा । अन्य पुस्तकें भी भेज देंगे तो साधु संतों के लिये उपयोगी रहेगी । **श्री हस्तीमल जी म.सा., रतलाम–९-६-१५ ।**

१८. प्रवर्तक श्रीरमेशमुनिजी म.सा. :– आपके द्वारा भेजी पुस्तकें मिली । मुनि प्रवर का श्रम श्लाघनीय है । **–इन्दौर–८–९–१३ ।**

१९. प्रखर वक्ता श्री रवीन्द्रमुनिजी शास्त्री :– आप द्वारा प्रेषित जैनागम नवनीत खण्ड प्राप्त हुए । एतदर्थ साधुवाद धन्यवाद । आप इस प्रकार आगमों का सार प्रदान कर ज्ञान वृद्धि में सहायक बन रहे हैं । इसी प्रकार जिन शासन की सेवा करते रहें यही शुभ भावनाओं के साथ । **लुधियाना–१०–१० ९४ ।**

२०. महामंत्री श्री सौभाग्यचन्द्रजी म.सा.'कुमुद':– संवत्सरी विचारणा संवाद पुस्तिका प्राप्त हुई । प्रस्तुत संवाद से विषय विस्तार के साथ स्पष्ट हुआ है तथा अनेक दृष्टि से विवेचन हो सका है । संवत्सरी के विषय में जिस तरह धारणाएं आम जनता में फैली हुई हैं, उसको इस संवाद से यथार्थवादी दृष्टिकोण प्राप्त होगा । आपने सुंदर और सराहनीय प्रयास किया है । ऐसा महामंत्री मुनि श्री का मंतव्य है ।–**लावा सरदार गढ ।**

२१. पं॰रत्न श्री गौतममुनिजी 'प्रथम' :– आपकी आगम सेवा साधु समाज को मार्गदर्शन देगी । समाज सदा आपके उपकार से उपकृत रहेगा । आपने जो शासन की सेवा की है वह सदा प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है । आपका नवनीत रूप साहित्य युगों युगों तक मार्ग

दर्शक बनेगा । समाज सदा आपका ऋणी रहेगा । आप जैसे आगम मर्मज्ञ मुनि प्रवर को पाकर संघ धन्य हो गया । आप श्री के द्वारा लिखित **मूर्तिपूजा एवं मुखवस्त्रिका निर्णय** नामक पुस्तिका बहुत उपयोगी एवं संघ रक्षक महसूस हुई । **उज्जैन-इन्दौर ।**

२२. पं॰रत्न श्री हीरामुनिजी म॰सा॰ :– ऐतिहासिक परिशिष्ट खण्ड पहला मिला । पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई । आगम मनीषी मुनी श्रीने आगमों के साथ ऐतिहासिक मक्खन भी जनता के लिये प्रसारित किया है । आप श्री के द्वारा प्रकाशित आगम नवनीत की पुस्तकें भी बहुत आदरणीय है । **ढोल ।**

२३. मधुर व्याख्यानी श्री रामचन्द्रजी म॰सा॰ :– आपके द्वारा भेजी गई पुस्तकें प्राप्त हुई। 'सूयगडांग सूत्र का सारांश एवं एकलविहार चर्या' पुस्तक पढकर के बहुत खुशी हुई है । प्रमाण आगम टीका चूर्णी के आधार पर बहुत ही अच्छे दिये है ।

जब कि कई संत सतीजी एकलविहार करने की भगवान की आज्ञा नहीं है ऐसी प्ररूपणा करते हैं किन्तु आपने बहुत से आगम प्रमाण देकर के समझाया । जिससे एकल विहार के बारे में श्रावक लोगों का और संत सतियों का भ्रम दूर हो जाता है । **बडगांव मावल-१९-७-९०।**

२४. पं॰ रत्न श्री अजितमुनिजी म॰सा॰ :– आप द्वारा प्रेषित जैनागम नवनीत खण्ड मिले । आगम ज्ञान के जिज्ञासुओं के लिये वास्तव में जैनागम नवनीत का प्रयास सुंदर है ।**-इन्दौर ११-१०-९४ ।**

२५. पू॰श्री नेमचन्दजी म॰सा॰ :– आपकी भेजी ऐतिहासिक परिशिष्ट खंड १ पुस्तक मिली । जो बहुत ही सुंदर है और शंका समाधान के लिये उपयोगी पुस्तक हैं । ३२ आगमों का दो सेट हमारे लिये (१)पभात (२) कालका, अवश्य भिजवावे।**-कालका-अम्बाला।**

२६. उपप्रवर्तक श्री रामकुमारजी म॰सा॰ :– जैनागम नवनीत खंड मिले एतदर्थ धन्यवाद । आप लोगों ने एक स्तुत्य प्रयास किया जो कि सभी ३२ आगमों को संक्षिप्त सार रूप और वह भी सरल हिन्दी भाषा में प्रकाशित करके इच्छुक प्रत्येक श्रावक संघ को भेजने के प्रयास रत हैं। जैनागम नवनीत के प्रणेता आगम मनीषी पंडित रत्न स्नेही साथी श्री तिलोक मुनिजी म॰सा॰ को बहुत बहुत बधाई देवें । तथा उनके संयमी

जीवन की मंगल कामना । हम और भी ऐसे साहित्य सृजन की उनसे आशा करते हैं । आने वाले समय में आगम मनीषी मुनिराज श्री का यह साहित्य अत्यधिक उपयोगी होगा । **-मुनि सतीश कुमार जी,नालागढ ।**

२७. उपा॰ श्री ज्ञानमुनिजी म॰सा॰ :– आपने आगम सेवा के महापथ पर जो चरण चिह्न स्थापित किये हैं वे सचमुच सराहनीय एवं अभिनंदनीय हैं । किन शब्दों में मैं आपका धन्यवाद करूँ समझ नहीं पा रहा हूँ । फिर से आपका मन के औदार्य के साथ धन्यवाद ।

आपकी इस आगम सेवा के लिये हृदय के कण कण से धन्यवाद। आपका बुद्ध शुद्ध प्रयास अभिवंदनीय एवं अभिनंदनीय है । सचमुच शास्त्रों का नवनीत ही निकाला गया है । आगम मनीषी श्री तिलोक मुनि जी का हार्दिक धन्यवाद ।

मूर्तिपूजा जैनागम विपरीत नामक पुस्तिका प्राप्त हुई । पढकर मन को अपार हर्ष हुआ । यह ठीक है कि आजकल खण्डन का युग नहीं है परन्तु जो व्यक्ति स्थानकवासी मान्यता की खण्डना(भर्त्सना) करे उसका खण्डन तो होना ही चाहिये । अपनी मान्यता का प्रसार करना जन-जन तक उसे पहुँचाना हमारा कर्त्तव्य बनता है । आप इस दिशा में पूर्णतया जागरूक है एतदर्थ धन्यवाद।**-लुधियाना-पंजाब-मण्डी गोविंदगढ**

२८. तपस्वीरत्न श्री मगनमुनिजी म॰सा॰ :– पुस्तकें मिली बहुत बहुत धन्यवाद । पुस्तकों की छपाई साफ सुथरी सुवाच्य एवं शास्त्रों से संबंधित मूलार्थ तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उठने वाले प्रश्नों का सटीक सशक्त समर्थ समाधान भी सुंदर ढंग से दिया गया है । **-वसंतलाल पूनमचन्द भंडारी, अहमदनगर- २९-११-९३ ।**

२९. उपप्रवर्तक श्री प्रेममुनिजी म॰सा॰ :– ३२ सूत्रों का सारांश रूप ३२ सूत्रों का लेखन कार्य आपने अति परिश्रम से किया है जो अति प्रशंसा के योग्य है ।

श्रावक के १२ व्रतों की १४ नियमों की पुस्तकें पढ़ी, बडी अच्छी लगी । प्रत्येक विषय का प्रतिपादन बहुत सुंदर ढंग से तथा स्व अनुभव से लिखा है । भावना तो यही रहती है कि आपके सभी सूत्रों को यथा शक्ति पढ लूँ । अभी थोड़े रूप में पढे हैं । मेरा यह भी आत्म विश्वास है कि आपके इन सूत्र सारांशों को समस्त साधु साध्वी पसंद

करेंगे । कारण यह कि ये शीघ्र समझ में आ जाते हैं । **गांव बडौदा-हरियाणा- १२-१०-९५ ।**

३०. श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. :– पुस्तक आगम सार की मिली । आज के साधारण से साधारण व्यक्ति के भी उपयोग की पुस्तक है । युग की आवश्यकता की पूर्ति इससे होगी ऐसी आशा है । **सुमन डोसी, देशनोक २९-८-९० ।**

३१. गादीपति श्री नरसिंहमुनिजी म.सा. :– पुस्तकों मल्या । सिद्धांत नु दोहन करी संक्षेप मां सुंदर अवलोकन कर्यु छे । साधु-साध्वीजीओ माटे अति उपयोगी पुस्तिकाओ छे । मोकलवा बदल धन्यवाद । **लाकडिया -कच्छ २४-१०-९१।**

३२. आगम आग्रही संत श्री केशव जी मुनिजी म.सा. :– जैनागम नवनीत आठ खण्ड अमो ने मली गयेल छे । तेनुं वांचन चालू छे । स्पष्टीकरण युक्त खूबज खुलाशावार लेखन छे ।ते लेखन मां आचार प्रियता, निडरता, निस्पक्षता, असंप्रदायिकता आदि विशेषता छे । जे वाँचता मात्र एक जैन आगमनुं सारांश ख्याल आवी शके छे ।**-हसमुख जैन, जामनगर-५-१०-९१ ।**

३३. बोटाद संप्र. के श्री अमीचन्दजी म.सा. :– पुस्तको मल्या । आपनी जैनागम नवनीत नी शुभ प्रवृति ने अनुमोदी प्रशंसा करवानु मन थइ जाय छे । आपे खरे खर आगम अमृत मोकल्युं छे । मुनिश्री त्रिलोकचन्द्र जी ना पुढषार्थ नी प्रशंसा कर्या विना रहेवातु नथी।

पंचम काल मां शास्त्र ढचि घणी ओछी होवा छतां घणा जिज्ञासु मुमुक्षु पण छे ते लाभ उठावसे । धन्यवाद । **-श्री नानचन्द्र-प्रमुख- मनहर लाल-करजण- १७-१०-९४ ।**

३४. विद्वान संत श्री भास्करमुनिजी म.सा. :– आप आगम श्रुत की अच्छी सेवा करते हैं एतदर्थ धन्यवाद । पूज्य श्री तिलोक मुनि जी ने अपने आगम ज्ञान का चतुर्विध संघ को अपूर्व लाभ दिया है अत: साधुवाद ।

आज के युग में जहाँ देखो वहाँ समय का अभाव है । छोटी जिंदगानी में आगम रत्नाकर में डुबकी लगाकर रत्नों पाना मुश्किल है। ऐसे समय में सूत्र बत्तीसी का संक्षेपीकरण की योजना अति अति समादरणीय, नीतांत आवश्यक है एवं स्वाध्यायशील साधु साध्वी श्रावक

श्राविका के लिये अति हितकर है । पूज्य मुनिराज श्री का पुढषार्थ उत्तमोत्तम है । जिन शासन पर महत् उपकार सदा बना रहेगा । पूज्य मुनिराज श्री को एवं प्रकाशन समिति के सभी कर्णधारों को,ऐसी योजना बनाने के स्वप्न द्रष्टाओं को हम हार्दिक अभिनंदन समर्पित करते हैं ।

गुजराती भाषा में इस बत्तीसी का अनुवाद यथाशीघ्र प्रारंभ करना परम आवश्यक है । अगर गुजराती भाषा में अनुवाद की योजना बनाई जाय तो वृहत् लीम्बडी सम्प्रदाय के कच्छ और सौराष्ट्र गुजरात के चातुर्मासिक बडे बडे क्षेत्रों के ज्ञान भंडारों के लिये आवश्यक है ताकि उन क्षेत्रों में विचरते हुए पूज्य संत सतीजीओं एवं स्वाध्य प्रेमी सुश्रावकों के लिये बहुत लाभप्रद सिद्ध होंगे । आप आगम श्रुत की अनुपम सेवा कर रहे हैं एतदर्थ पुन: धन्यवाद । **भावेश कुमार देढिया, गुंदाला-कच्छ ।**

३५. वाणीभूषण श्री गिरीशमुनिजी म.सा. :– आपने जैनागम नवनीत भेजे थे बहुत ही सुंदर हैं । आगम सार नवनीत बनाकर आपने जिनवाणी का एसेन्स जनता के सामने तैयार कर रख दिया है । उपकार कृत पुढषार्थ बदल कोटी कोटी धन्यवाद । **गांधीनगर ४-९-९४ । (राजकोट रोयलपार्क ७८ साधु-साध्वीजी का चौमासा करवाकर मेरे से सामुहिक आगम वाचना ली)**

३६. महासतीजी श्री रूक्षमणीबाई म.सा. :– हाल मां आपना छेद सूत्र नी पुस्तिकाओं थी बने टाइम वाचणी चाले छे खूब ज आनंद आवे छे । आपना दर्शन सत्संग नो क्यां लाभ मलसे । साध्वी पद्मिनी कुमारी ना भाव वंदन । **-गांधीनगर- १९-१-९२ ।**

३७. प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्रीजी म.सा. :– हिन्दी सारांश बहुत ही अच्छे लगे । आगम नवनीत प्रकाशन समिति का लक्ष्य है ३२ पुष्प यानी सभी सूत्रों का हिन्दी सारांश प्रकाशित करना । यह आपका बडा उपयोगी चिंतन है । जो लोग अर्धमागधी आगमों की भाषा नहीं समझते उनके लिये आगम का हार्द पकडने का आपने एक रास्ता खोल दिया । आपके सभी प्रकाशन कृपया हमें भिजवायें ।**रमेश जैन, दिल्ली-पश्चिम विहार २१-९-९० ।**

३८. साध्वी संयम प्रभाजी म.सा. :– आप द्वारा लिखित जैनागम नवनीत सूत्र पढे । हर शंका का समाधान अत्यंत सुंदर सटीक मिला ।

वास्तव में आज ऐसे ज्ञान की आवश्यकता है ।**जयमल सम्प्रदाय, दिल्ली**

३९. साध्वी श्री ज्ञानवती जी म॰सा॰ :– आगमों की पुस्तकें मिली, पढ़ी, बहुत अच्छी लगी साधुवाद ।आगम के ये संस्करण सचमुच बहुत ही उपयोगी है । जैनागमों का सारांश गागर में सागर वाली कहावत चरितार्थ करता है । **डा. सुशीलाजी महासती, बडी सादडी २९-१०-९४।**

४०. आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वरजी म॰सा॰ :– सारांश की अनेक पुस्तकें मिली । संक्षेप में बोध हो जाय इस तरह अच्छा प्रकाशन हुआ है संपूर्ण सेट भेजने का कष्ट करेंगे । **मद्रास ६-११-९० ।**

४१. आचार्य श्री विजय वारिषेणसूरीजी म॰सा॰ :– आपका प्रयत्न सराहनीय है । सभी प्रकाशन की एक एक प्रति अवश्य भेजते रहना वी.पी.पी. से । बाल जीवों लघु साधकों के ज्ञान वास्ते अनुवाद अच्छा हुआ है । **हिंगोली-महाराष्ट्र दि. २५-९-९० ।**

४२. दिगम्बर क्षुल्लक चित्तसागरजी :– ऐतिहासिक परिशिष्ट खण्ड १ पुष्प २१ पुस्तक मिली आचार्य श्री वासुदेव जी म.सा. को दी । पुस्तक पढ़ने पर आपके सभी प्रकाशन का स्वाध्याय करने का भाव हुआ है । पूरा आगमों का सेट भेजने की व्यवस्था करवाकर ज्ञानदान का सातिशय पुण्य उपार्जन कीजियेगा । **गांधीनगर २५-९-९३ ।**

४३. मुनिश्री जशकरणजी स्वामी :– मुनि श्री तिलोक चन्द जी म॰सा॰ ने बहुत महेनत कर सूत्रों को छोटे छोटे पुष्प में जैन समाज के सामने रखा। जैन धर्म के उपर बहुत बडा उपकार किया । सारा जैन समाज आपके उपकार का चिर ऋणी रहेगा । सरल सुबोध हिन्दी भाषा के ३२ आगम प्राप्त हो गये हैं । हमारे जैसे नासमझ लोगों को जिज्ञासा होने पर समाधान हेतु ये सुगम पुष्प उपलब्ध होने से बडी सुविधा-सहायता मिलती है । आगम मनीषी तिलोकमुनि जी ने अनुकरणीय आगम मन्थन किया है तथा ऐसा साहित्य प्रकाशित करके बहुत बडा उल्लेखनीय कार्य किया है। **सु श्री अनिता छाजेड,बोरावड २०-१२-९३ ।**

पाठकों के श्रद्धा पत्र

श्रावक-श्राविका विभाग :–

१. सुश्रावक ई. जितेन्द्र कोठारी :– आगमों पर श्री तिलोक मुनि जी द्वारा रचित सारांश बहुत ही उपयोगी है । इससे समाज में सभी को आगम ग्रंथों को समझने का बहुत ही सुनहरा अवसर आया है ।आगम मनीषी श्री तिलोक मुनि जी म॰सा॰ का उपकार जैन समाज कभी भी नहीं भुला सकता बल्कि समय पर आपके उपकार, आपके त्याग और आप द्वारा रचित आगम सारांश लेखन के बारे में प्रशंसा करना सूर्य के सामने दीपक दिखाना है । ये आगम सारांश जैन समाज के लिये **अमूल्य निधि** है ।

आगम सारांश की लेखनी इतनी रोचक व सुंदर है कि कोई भी थोडा पढ़ा लिखा श्रावक या श्राविका बहुत ही अच्छी तरह से पढ सकते हैं और उनका अर्थ भी समझ सकते हैं ।एक बार कोई भी पुष्प हाथ में ले लें तो जब तक उसको समाप्त नहीं कर देते, उस पुष्प को छोडा नहीं जाता । मैं कभी स्वप्न में सोचा करता था कि अपने शास्त्रों का कभी हिन्दी अनुवाद सारांश में हो सकेगा क्या ?

वास्तव में आगम मनीषी मुनिराज श्री ने उसे कर दिखाया। उनको मैं धन्यवाद और आभार कैसे प्रकट करूं, लेखनी भी कुंठित हो जाती है । फिर भी मुनि श्री के चरणों में मेरी हार्दिक बधाईयाँ, हार्दिक अभिनन्दन, भाव वंदन नमन ।

वास्तव में आगम मनीषी मुनिराज श्री महान है, महानतम है जो उन्होंने मुद्रण कार्य में लगे दोषों का आचार्य प्रवर के पास आलोचना युक्त प्रायश्चित ग्रहण कर लिया है जिसे अंतिम पुस्तक में प्रचारित भी कर दिया है । धन्य धन्य है श्री तिलोकचन्द जी म.सा. आप वास्तव में धन्य है । **देवली-टोंक २३-२-९३ (अनेकों सेट मंगाकर फ्री वितरण किये)**

२. सुश्रावक श्री प्रेमसुख सुवालाल छाजेड :– आपने जो ३२ आगमों का सारांश रूप में हिंदी अनुवाद किया। यह तो जैनों के ही लिये नहीं, सब धर्म के लोगों के लिये बहुत बडी देन है । उसका अध्ययन एक बार ही नहीं अनेक बार करने योग्य है । कभी कोई श्रावक आते हैं

तो इन्हें देखकर पढ़ने को लेके जाते हैं । इतना सरल और समझने सरखे हिन्दी भाषा में आगमों की लिखने की कला तो बहुत ही दुर्लभ है ।

इतने दिन तो ऐसा लगता था कि जैन आगम दुर्बोध है, समझना बहोत ही मुश्किल है । मगर आपके लिखे ३२ आगम पुष्प पढ कर किसी को भी ऐसा महसूस होगा कि समझाने की कला हो तो कठिन कुछ भी नहीं है । आपकी शुभ प्रेरणा से बच्चों और बहुओं को भी आगम पढने की अध्ययन करने की प्रेरणा मिली वह सबसे बड़ी खुशी की बात है । **पूना- महाराष्ट्र ।**

३. सुश्रवाक श्री अक्षयकुमारजी सामसुखा :– पूज्य श्री तिलोक मुनि जी म.सा. लिखित आगम सारांश पुस्तकें पूरी तो नहीं मनन कर पाया लेकिन भाग १६ तक पढने का अवसर मिला है । इस बारे में जितना भी गुणानुवाद करूँ बहुत कम है । इस तरह की आगमों के बारे में सरल और सुलभ जानकारी शायद ही कहीं मिले ।इस पत्र के साथ आगम कार्य के सुचारू से निर्बाध गति से चलते रहने की मंगल कामना करते हुए अल्प राशि का ड्राफ्ट भेज रहा हूँ । यहीं से सदा प्रातःकाल वंदना एवं स्मरण कर संतोष पा लेता हूं ।**जोधपुर, मुम्बई २६-१-९४ ।**

४. त्याग मूर्ति श्री जौहरीमलजी पारख :– पुस्तकें हमारे पास पहुँची, बहुत अधिक उपयोगी है । एक सेट पूर्ण और भिजवाएँ । क्योंकि इसे हम डिप्लोमा या बी.ए. के पाठ्यक्रम में रखने का सोच रहे हैं । प्रोफेसर लोगों को भेजना पडेगा । नई प्रजा सारांश में राजी है । विद्यार्थी नोट्स ही पढते हैं । हमे बी.ए. और एम.ए. के छात्रों को जैन पढाई कराने हेतु मान्यता मिलने वाली है ।

आपकी पुस्तकों को निर्णय कोर्स कमीटी की बैठक में लिया जावेगा । एक प्रोफेसर को बताई तो उसे बहुत ही पसंद आई है कि छोटे में अब आगम ज्ञान आ गया । अंग्रेजी में हो तो विदेशों में भी चल सकती है ऐसा उसका मत है । मेरा यह निश्चित मत है कि आपकी ये पुस्तकें सभी छात्रों के लिये उपयोगी सिद्ध होगी ।

जैनागम नवनीत के आठों भाग बी.ए. के कोर्स में मान्य कर लिया गया है । अन्य एम.ए. आदि के कोर्स में आगम की व्याख्याएँ टीकाएँ आदि मान्य किये गये हैं ।

आपकी पुस्तकें बहुत लोक मान्य हुई हैं मांग भी आ रही है और अनेक धार्मिक पत्रों में प्रशंसा छप रही है ।**रावटी-जोधपुर ।**

५. प्रधान श्री आर. के. जैन :– आपको बहुत बहुत धन्यवाद, शुक्रिया। आगमों का जो सार लिखा है वह सराहने योग्य कार्य है । इसकी जितनी प्रशंसा की जाय उतनी अच्छी बात है । इन आगम के भागों में जिसने भी सहयोग दिया वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं ।**जीन्द शहर १६-६-९४ ।**

६. श्रीमती वीना जैन सचिव :– आप ने ३२ शास्त्रों को आठ भागों में सारांश करके जैन समाज पर बहुत बडा उपकार किया । मैं तो इनकी स्वाध्याय करते करते तलीन हो जाती हूँ । एक सामायिक के बजाय दो सामायिक सहज में ही आ जाती है । **जीन्द शहर १६-११-९४ ।**

७. श्री संजय जैन कन्फेन्सरी :– आपकी भेजी पुस्तकें मिली बहुत खुशी हुई कि केवल ५० रू. में इतनी बहुमूल्य आठ पुस्तकें संपूर्ण शास्त्रों की मिल गई । पुस्तकें बहुत उपयोगी रही है । तथा बहुत अच्छी लगी हैं । **कुलवंत राय जैन, कांधला २२-१-९४ ।**

८. अध्यक्ष श्री छोटूलालजी जैन :– जैनागम नवनीत के आठों खंड मिले । पुस्तकों में जैन आगमों का सार अति रोचक शैली व सरल भाषा में दिया गया है । इससे सामान्य पढ़ा लिखा व्यक्ति भी आगमों की जानकारी ले सकता है । संक्षेप में गागर में सागर भर दिया गया है । एतदर्थ नवज्ञान गच्छ प्रमुख आगम मनीषी परम श्रद्धेय पूज्य श्री तिलोक मुनि जी म.सा. की सेवा में हम कृतज्ञता व्यक्त करते हुए साधुवाद ज्ञापित करते हैं । पुनः धन्यवाद ।**देवास १६-११-९४ ।**

९. श्री शांतिलाल जी सुराणा :– आगम सारांश की पुस्तकें मिली । कुछ पढ़ी भी हैं । तथा लगातार दो वर्षों से उन पुस्तकों के आधार पर महासतियां धार्मिक परीक्षा कोर्स पूरा कर रही है । अति संक्षेप में सार रूप तथा कई नई अवधारणाएँ पुस्तकों में अवगत हुई है । सभी के लिये श्रेष्ठ स्वाध्याय में ये पुस्तकें सहायक है ।

आगम मनीषी श्रुतधर महामुनि श्री तिलोक मुनि जी महाराज के तलस्पर्शी शास्त्रीय ज्ञान का नवनीत सभी को पुष्ट दृढ़ श्रद्धा संयुक्त बनाने में पूर्ण समर्थ है ।**इन्दौर दि. ३-१२-९० . १६-९-९४ ।**

१०. श्री दुलीचन्द जी जैन :– आपके प्रकाशन बहुत ही मूल्यवान एवं महत्वपूर्ण है । आगम ग्रंथों के प्रचार व प्रसार का आप जो कार्य कर रहे हैं वह अभिनंदनीय है । आपके द्वारा प्रकाशित आगम नवनीतमाला बहुत सुंदर है । सरल भाषा में सूत्रों की व्याख्या का वह प्रयास प्रसंशनीय है।

पुज्यनीय तिलोक मुनि जी के द्वारा सुंदर रूप से प्रस्तुत आगमों के सारांश से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ । विशेषत: आपकी व्याख्याएँ तथा निबंध बहुत सुंदर हैं । **मद्रास, १४–३–९३ ।**

११. श्री सागरमलजी साकरिया :– आगम नवनीत की पुस्तकें मिली सूत्र की भाषा सरल एवं सजीव है, हृदय में शीघ्र उतर जाती है एवं सामायिक में नियमित पढता हूँ । आपके इस प्रयास के लिये अन्तःकरण से आपका आभारी हूँ । मेरे परिचित व्यक्तियों में से अधिक से अधिक आगम में ग्राहक बनाने का प्रयत्न करूंगा । **बम्बई दि. ९–६–९०**
(२० से अधिक ग्राहक बम्बई में बनाय एवं सौ सेट के भेंट की राशि एक मूर्तिपूजक गुजराती महानुभाव से बम्बई से प्राप्त करी भिजवाई ।)

१२. श्री रतनलाल जी जैन :– आपके द्वारा तैयार किया सेट (आगम–सारांश) वरिष्ठ एवं अध्ययनशील स्वाध्यायियों के लिये अधिक उपयोगी है । गहराई से शास्त्र ज्ञान पाने की इच्छा रखने वालों के लिये (भी) सेट अधिक उपयोगी है । **श्री श्वे. स्था. जैन स्वाध्यायी संघ गुलाबपुरा २०–९–९४**

१३. सचिव ए.एल. मेहता श्री महावीर जैन वाचनालय :– पुस्तकें काफी अच्छी सरल भाषा में होने से समाज के व्यक्तियों को ढचिकर लगी है । आपका साहित्य वर्तमान समाज के नौजवानों के लिये काफी प्रेरणास्पद रहेगा । यह कार्य जैन समाज के लिये बहुत बडी सेवा है । आज के युग में इसकी परम आवश्यकता थी जिसकी आपने पूर्ति की है यह एक अमूल्य देन है । समाज के मार्गदर्शन हेतु ये पुस्तकें प्रकाशित कर आपने एक बहुत बडा पुण्य कार्य किया है । इनसे समाज को धर्म की गूढता की जानकारी मिलेगी । **झाबुआ–एम.पी. ७–८–९३ ।**

१४. प्रोफेसर ला. मो. भण्डारी :– पूज्य श्री १००८ श्री नव ज्ञान गच्छ प्रमुख श्री तिलोक मुनि जी महाराज साहेब द्वारा किया गया यह कार्य सदा स्मरणीय रहेगा । इनमें का प्रत्येक पुष्प अपनी सुरभि से पाठक को मिलने वाला एक वरदान है । पुस्तकें पढकर बहुत ही संतोष मिला ।

प्रत्येक पुस्तकें आगम सार–सार का सफल संकलन तो है ही । सामान्य से सामान्य पाठक भी इससे सुलभता से लाभान्वित हो सकता है । भावी पीढी युग युग तक इससे प्रवाहित ज्ञान धारा में निरंतर अपने ज्ञान की वृद्धि करती रहेगी ऐसी दृढ धारणा है । अब यही चाह है कि इन अमूल्य एवं अनुपम आगम पुष्पों का मराठी भाषा में अनुवाद किया जाय । **–लालचन्द भण्डारी बीड–महाराष्ट्र ५–३–९१ ।**

१५. श्री आनंदीलाल जी मेहता :– मैंने आपके द्वारा दिया हुआ पुष्प २१– ऐतिहासिक विस्तृत संवाद, का बहुत सारा भाग पढा । उसमें कई बातों की नई जानकारी भी मिली । सभी आगमों पर संक्षेप में सार भूत विषयों का उल्लेख करते हुए जो पुष्प आपने तैयार किये है वे सर्वत्र उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं ।

३२ सूत्रों का सारांश मंगवाने हेतु मैंने अनेक संस्थाओं को प्रेरित किया है । **–उदयपुर ७–१०–९३ ।**

१६. कविरत्न श्री जीतमल जी चन्द्रगौत्री :– चातुर्मास और सेखे काल में पधारने वाले संतसती मंडल से प्रार्थना करता रहता हूँ कि तिलोकमुनि जी ने अथक परिश्रम करके अल्प बुद्धि वालों के लिये अलग–अलग सूत्रों के विषयों समझने का सरलीकरण किया है ।

सामायिक आदि धर्म ध्यान के समय ये पुस्तकें अत्यंत उपयोगी हैं । ग्राहकी या अन्य कार्यों से फुरसत हुई कि इनका पठन शरू हो जाता है । **–बडौद ।**

१७. श्री पूनमचन्द जी बरडिया :– आपके ३२ पुष्प सभी मिल गये अध्ययन भी किया तथा साधु–साध्वी जी को जिन्हें जो पसंद आये वे उन्हें दे दिये हैं । ३२ आगम आपके लिखे हुए बहुत ही सुंदर सरल भाषा में ढचिकर है । आपने ज्ञान का भण्डार जनता के लिये सारांश में लिखकर बहुत बडा उपकार किया है । –**अहमदाबाद ११–९–९५ ।**

१८. श्री के. सी. जैन एडवोकेट :– आगम मनीषी तिलोक मुनि जी महाराज ने बहुत अच्छे ढंग से जैनागम नवनीत माला लिखकर आगम स्वाध्यायी बंधुओं के लिये बडा उपकार किया है । उनका यह प्रयास प्रशंसनीय और अभिनन्दनीय है । **–हनुमानगढ २–२–९५ ।**

१९. डॉ. कविन शाह :– आगम पुष्प मिले । सामायिक में उसका स्वाध्याय होता है । इनके बारे में हमारा मत है कि स्वाध्याय करने के लिये सभी पुष्प आवश्यक है । आगम साहित्य का सरलता से ज्ञान प्राप्त करने में ये सभी पुष्प उपयोगी है चिंतन और मनन करने लायक है ।

इनमें स्थानकवासी की विचारधारा प्रगट होती है मैं श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक) हूँ फिर भी बडी दिलचस्पी से अपूर्व आनंद मिलता है ।

पुस्तकों में जो आगम विषय है उसके बाद दिये गये समीक्षा के विचार बहुत महत्वपूर्ण है । कथा के बारे में तात्विक विचारों की अवगाहना परिशीलन करने से ही सत्य बोध ज्ञान होता है । समय-समय पर आगम पुष्पों का अध्ययन करता रहता हूँ और प्रवचनों में भी इन पुष्पों का उपयोग करता हूँ । **-बीलीमोरा (गुजरात) ६-५-९५ ।**

२०. श्री कांतीलाल जी जैन :– कुछ दिन पूर्व मारवाड फलौदी जाना हुआ वहां आगम बत्तीसी के सारांश देखने को मिले । कुछ अंश पढे । बहुत ही अच्छे लगे । प्रथम बार इतनी सरल सुबोध भाषा में वह भी सारांश रूप में आगम बत्तीसी देखी । जो प्रत्येक गृहस्थी व विशेष कर स्वाध्यायी बंधुओं के लिये तो बहुत ही उपयोगी लगी । बहुत बहुत हार्दिक बधाई ।

यदि आप यह आगम सारांश की बत्तीसी डाक द्वारा भेजें तो मैं भी इस ज्ञान गंगा से लाभान्वित हो सकूँ । **-कुरंदी-म.प्र. २९-७-९३ ।**

२१. श्री सागरमल जी समरथमलजी लोढ़ा :– आगम साहित्य के ये सारांश भाग जो कि सरल हिंदी भाषा में प्रकाशित हुए हैं वे मुझ अल्पज्ञ के लिये बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं । विशाल आगम ग्रंथों का पठन पाठन मेरे लिये अति दुढह था । परन्तु इन पुष्पों ने मेरी उस इच्छा को पूर्ण कर दिया जो कई समय से थी कि मैं भी संपूर्ण आगमों का ज्ञान प्राप्त करूँ । आपके हम बहुत बहुत आभारी है कि जिन्होंने इतना कठिन श्रम साध्य काम करके हम भव्य प्राणियों के लिये आगम नवनीत माला बनाई । **-महागढ-म.प्र. २८-१२-९३ ।**

२२. डॉ. सोहन लाल जी संचेती :– आगम सारांश की प्रतियां पढने को मिली । प्रयास प्रशंसनीय है, अनुमोदनीय है । ये पुस्तकें स्वाध्याय प्रेमियों के लिये बहुत ही उपयोगी एवं आवश्यक सिद्ध होंगी ।

सदस्य बनाने का प्रयास जारी है । पब्लिसिटी में ध्यान दिरावें तो सदस्य संख्या बढ़ सकती है । **-जोधपुर ।**

२३. श्री शांतीलाल जी मूथा :– आपकी संस्था से प्रकाशित पांचों (छोटी) पुस्तकें मिली । इस प्रकार का साहित्य लोकाशाह की तरह नई क्रांति लाने में सहयोगी बनेगा ऐसी पूर्ण आशा है ।

नोट : मूर्ति मुहपत्ति संबंधी संवाद की १०० पुस्तकें भंगवा कर स्थानक में वितरण की । **-पाली मारवाड़**

२४. श्री मीठ्ठालाल जी पोकरणा :– आपका प्रयास अत्यंत सफल रहा है । अल्प समय में आपने महान कार्य किया है । यह जैन समाज के लिये गर्व और गौरव की बात है ।

आगम मनीषी आगम विशेषज्ञ जैन संस्कृति के परम रक्षक एवं प्रबल प्रचारक पू. श्री तिलोकचन्द जी म.सा. ने जैन समाज के लिये महान उपकार का कार्य किया है । साधारण से साधारण शिक्षित भाई बहिन भी आगमों का हिन्दी अनुवाद पढकर जैन धर्म के गूढ महत्व के तत्वों को एवं सच्चाई को जान सकता है । आपने सभी के लिये यह सरल सुलभ बना दिया है । सामान्य जन जो केवल हिन्दी का ज्ञान रखता हो, वह भी पढकर बहुत कुछ विदित कर सकता है । बत्तीसवां भाग तो बहुत ज्यादा उपयोगी सरल और सुंदर है । दैनिक जीवन में सामायिक प्रतिक्रमण की दृष्टि से बडा ही उपयोगी सिद्ध होगा । **-सिकंदराबाद ३१-११-९४ ।**

२५.श्री जादव जी प्रेमजी गाला :– वर्धमान स्था. संघ डोंबीवली उपर मोकलेल पुस्तिका पुष्प २१ (संवाद) ऐतिहासिक परिशिष्ट खण्ड १ वांची । पुस्तिका घणी गमी । संपूर्ण सेट मोटी खाखर (कच्छ) मोकलसो एवं व्यक्ति माटे कीमत जणावसो । **-डोंबीवली ईस्ट २२-९-९३ ।**

२६. श्री रमणिक भाई शाह :– जैनागम नवनीत ना खंड मली गया बहु ज आनंद थयो । आगम नवनीत ग्रंथ एक अधिकृत ग्रंथ बनी रहे । प. पू. तिलोक मुनि जी ए खरेखर संगीन कार्य कर्युं छे ए माटे अमारा तरफथी धन्यवाद । **-मुंबई**

२७. प्रो. डॉ. मोहनलाल मेहता :– पुस्तकें मुझे मिल गई है । मुनि श्री का प्रयत्न सराहनीय है । पुस्तकें अत्यंत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है ।

इनमें जैनागमों का नवनीत समाविष्ट है । इस साहित्यिक उपलब्धि के लिये आगम-मनीषी जी का हार्दिक अभिनंदन । **-पूना २२-८-९४ ।**

२८. श्री लालचन्द जी नाहटा :– नव ज्ञान गच्छ प्रमुख आगम मनीषी शुद्ध जैन परंपरा के सजग संरक्षक पं. र. श्री तिलोकमुनि जी म.सा. का संपादित पुष्प-२१ में मूर्तिपूजा और मुखवस्त्रिका के विषय में आपने जिस प्रमाणों का संकलन कर प्रकाशित किया है उसके लिये आपको कोटि कोटि साधुवाद । इतनी हिम्मत आज शायद ही किसी साधु में हो मूर्तिपूजा के योजनाबद्ध और धुंआधार प्रचार के तूफान को रोकने में ऐसी पुस्तकों की अतीव आवश्यकता है । इस युग की महती आवश्यकता को आपने पूर्ण किया है । **- केकडी**

२९. श्री मगराज जी कोचर :– आपने जो आगम नवनीत माला का प्रकाशन प्रारंभ किया है वह वास्तव में स्तुत्य है, प्रसंशनीय है सराहनीय है । इस अनमोल प्रयास के लिये मेरा शत-शत अभिनन्दन । **-विजयवाडा**

३०. श्री संपतराज जी जैन :– आपके आगम सारांश की मैंने कुछ पुस्तकें पढी । आपके यहाँ का यह प्रयास वास्तव में अत्यंत प्रशंसनीय सराहनीय एवं उपयोगी है जिसकी मुझे अपार खुशी है । मुझे यह पूर्ण सेट किस तरह मिल सकता है कृपया उत्तर दें । आपका पता व्यावर के प्रोफेसर श्री संपतराज जी ढाबरिया से प्राप्त हो सका है । **हेडमास्टर (ब्यावर) २२-१०-९५**

३१. श्री पदमराज जी जैन :– हमने आगम का हिंदी रूपान्तरण पढा अच्छा सार गर्भित है । इससे स्वाध्याय अच्छा होता है । **-पाडी-मद्रास १४-१०-९४**

३२. सुश्रावक श्री पूनमचन्द जी नाहर :– आगम सारांश की ३२ ही पुस्तकें मिली । सभी का स्वाध्याय किया । संत सतियों को पसंद आने पर देता रहा । ३२वां पुष्प आवश्यक सूत्र के परिशिष्ट में आवश्यक प्रश्नोत्तर बहुत उपयोगी दिये गये हैं, कण्ठस्थ करने योग्य है । **-पुष्कर**

३३. श्री उदय जैन नागोरी :– आपके द्वारा आगम सार के रूप में जन जन के लिये ज्ञान के द्वार अनावृत किये जा रहे है यह आल्हाद एवं हर्ष का विषय है । **-बीकानेर सेठिया जैन ग्रंथालय**

३४. श्री सोहन राज जी कोठारी :– आगम मनीषी त्रिलोकमुनि जी ने जो नवनीत प्रस्तुत किया वह अत्यंत स्तुत्य है । पुस्तकें मैं गहनता से पढता हूँ । ये मेरे लिये अत्यंत उपयोगी है । हमारे विचार से ये पुस्तकें आगम वाणी के हार्द को समझने के लिये साधु-साध्वी जी एवं श्रावक आदि सब के लिये समान रूप से उपयोगी हो सकती है । **अध्यक्ष श्री श्वे. तेरापंथी सभा -बालोतरा**

३५. सुश्रावक श्री धर्मीचन्द जी माढ :– आपका साहित्य मैं एक दफा अध्ययन कर चूका हूँ । इस आगम सेट के लिये कुछ मुनि वृंद काफी इच्छुक है । मैं सेट का संग्रह नहीं करता हूँ साधु साध्वी वर्ग को अध्ययन हेतु देता रहता हूं आप तीन सेट और भेजें ताकि साधु वर्ग उसका लाभ ले सके । हिसाब ट्रस्ट से कर दिया जायेगा । **-दिल्ली**

३६. श्री किस्तूर चन्द जी सेठिया :– आगम सारांश की समस्त पुस्तकें प्राप्त हो गई हैं । एक बार सभी पुस्तकों का अध्ययन किया है अब वापस अध्ययन शरू करूंगा । पुस्तकों में निबंध और परिशिष्ट मैं बड़ी दिलचस्पी से पढ़ता हूँ ।

१४ गुणस्थान का स्वरूप मैंने पढ़ा । बहुत सरलभाषा में है और पहली बार मैं गुणस्थान के बारे में अच्छी तरह समझ पाया हूँ । तथा जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के सारांश से जम्बूद्वीप के बारे में बहुत कुछ सरलता से समझ पाया हूँ । **-मद्रास १४-९-९५**

३७. श्री गौतमचन्द जी कांकरिया :– आगम सारांश की समस्त पुस्तकें मिली । हमने इसका भरपूर उपयोग लिया है । ले रहे हैं । हमारे पड़ोसी भी बरोबर चाहकर पढ़ने ले जाते हैं । बहुत लोग मांग कर रहे हैं । एक सेट और भिजवाने की व्यवस्था करावें । **-मद्रास**

३८. श्री बी.एल. जैन :– स्वाध्यायी होने के नाते मैंने जैनागम नवनीत अर्द्धमूल्य में प्राप्त किया । इन पुस्तकों को मैं साधु महात्मा एवं अन्य श्रावकों को भी देता रहता हूँ । सभी को बहुत पसंद आई । स्थानक लाइब्रेरी हेतु एक सेट और आवश्यक है ।**-रतलाम २६-६-९५**

३९.श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन :– ध्यान स्वरूप पुस्तिका मिली । बहुत बहुत आभार। आप श्री ने ध्यान चिंतन अध्ययन के संप्रेक्षण में यह बहुत अनुमोदनीय उपयोगी स्तुत्य कार्य किया है । **वासद-खेड़ा**

४०. श्री बाबूलाल जैन :– आप गुणस्थान स्वरूप और कर्मग्रंथ भाग २–३ का सार संपादित कर मुमुक्षुओं को सहर्ष प्रदान कर रहे हैं आपके द्वारा ज्ञान दान का एक अनुकरणीय प्रशंसनीय कार्य हुआ है ।

आचार्य विनय चन्द्र ज्ञान भंडार, जयपुर २९–१२–९३ ।

४१. श्राविका सुश्री अनिता छाजेड़ :– आपने मेहरबानी कर हमारी कमी की पूर्ति कर दी है । आप जैसे उदार हृदयी धर्म प्रचारक बहुत ही कम मिलते है । गुणस्थानों का स्वरूप हमारे जैसे तत्वज्ञानार्थी के लिये बहुत उपयोगी है । **–बोरावड़ २२–१–९४**

४२. श्री लक्ष्मीचन्द जैन :– पुस्तकें बहुत उपयोगी है स्वाध्यायियों को विशेषकर । इतने अच्छे संपादन प्रकाशन के लिये आपको धन्यवाद –

श्री महावीर जैन वाचनालय, छोटी कसरावद ।

४३. श्री चंचलमल जी चोरडिया :– आगम सारांश सेट में अंतगड सूत्र का सारांश व्याख्यान सामग्री युक्त प्राप्त हुआ । यह पुस्तक स्वाध्यायियों के लिए अत्यंत उपयोगी है । वितरित करने हेतु १०० पुस्तकों की स्वाध्याय संघ जोधपुर में आवश्यकता है । **–जोधपुर २–३–९२।**

४४. प्रोफेसर–सागरमल जैन :– हमारे संस्थान की लाइब्रेरी में अनेक शोधार्थी एवं विद्यार्थी अध्ययन करने प्रति दिन आते हैं । दो सेट हेतु मनिआर्डर भेज रहे हैं । इसके अतिरिक्त जो भी श्री तिलोकमुनि जी का साहित्य हो उसे वी.पी.पी. से भेज दें । **हिन्दु युनिवर्सिटी जैन इन्स्टीट्यूट वाराणसी ५–७–९३**

४५. अध्यक्ष श्री चन्द्र कुमार संचेती :– आगम नवनीत माला का पुष्प २१ संवाद प्राप्त हुआ । धन्यवाद । वास्तव में पुस्तक ज्ञानवर्धक और उपयोगी है । **–ग्वालियर**

४६. सुश्रावक श्री मोतीलालजी सुराणा :– आगम सारांश पुष्प मिले पुस्तकें बड़ी ही उपयोगी है । बहुत बहुत धन्यवाद । **–इन्दौर ।**

४७. श्री राजेश जी जैन अध्यापक धार्मिक पाठशाला :– सारांश की पुस्तकें मिली पाठशाला के छात्रों को भी अच्छी लगी । बहुत बहुत धन्यवाद । **देवकर**

४८. श्री रामस्वरूप गर्ग संपादक :– उत्तराध्ययन सूत्र पर संक्षिप्त

पुस्तिका देखकर चित्त प्रसन्न हो गया । भावी पीढी को संस्कारित करने का तथा धर्म का बोध देने का यह तरीका सुंदर है । मैं पुस्तक के लेखक को इसके लिये हार्दिक बधाई देता हूँ । **–लाडनू १३–९–९० ।**

४९. श्री सुभाषचंद्र जी नाहर :– आगम नवनीत माला की पुस्तकें देखकर मन पुलकित हो उठा है । इस प्रकार के प्रकाशनों से आने वाली पीढी में धर्म के प्रति भावना जगेगी । नियमित प्रकाशन के प्रति हमारी तरफ से शुभ कामनाएँ स्वीकार करें । **–मद्रास**

५०. श्री पुखराजजी जैन :– आगम नवनीत प्रकाशन पूर्ण सफल चल रहा है । वैसे मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि अपने प्रकाशन की मांग निरंतर बढ़ती जाती रही है बाहर विदेशों में भी मांग हो रही है । तथा फण्ड भी स्वत: बढ़ रहा है । **–जोधपुर ।**

५१. श्री मानसिंह जी खारीवाल :– पुस्तकें मिली । इनका उपयोग स्वाध्याय के रूप में किया जायेगा । आप इस तरह ज्ञान दान का यह पुण्य कार्य कर रहे हैं । इसके लिये मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ । **– सहाडा ७–१०–९१**

५२. संयोजक अशोक सिंगी :– आपके द्वारा भेजी गई पुस्तकें मिली १०० बारह व्रत की एवं १००चौदह नियम की पुस्तकें और भिजवावें ।

श्री सुधर्म प्रचार मंडल जोधपुर की महाराष्ट्र शाखा येवला ।

५३. सुश्रावक श्री मोहनलाल जी भुरट :– आपके द्वारा अंतगड सारांश आदि पुस्तकें मिली । पढ़कर अत्यंत खुशी हुई । पुस्तकें पढ़ने से ऐसा लगता है अति सुंदर भाव से विद्वान पुढष द्वारा लिखी गई । अति सराहनीय है । ६० प्रतियाँ अंतगड सूत्र की भेजने की कृपा करावेंगे । ड्राफ्ट किस नाम से भेंजे ? लिखियेगा । **–बेंगलोर ।**

५४. श्री लालचन्द जी जैन 'विशारद' :– पांच सेट मिल गये है जढरत वालों को देते रहेंगे । दो सामायिक करता हूँ । एक सामयिक में भक्तामर आदि और दूसरी सामायिक में इन पुस्तकों का स्वाध्याय करता हूँ । परिश्रम करके शास्त्रों का सार आपने तैयार कर प्रचार कर दिया । अब आपको साधुओं और श्रावकों से प्रत्यक्ष संपर्क साध कर पुस्तकों में लिखी बातों को उनके हृदय में बैठाना चाहिये वरना पुस्तकों का सार पुस्तकों में ही न रही जाय । **–इस सूचना को कार्यान्वित किया जा रहा है । – रायपुर ।**

५५. श्री प्रद्योत दफ्तरी :– आपकी तरफ से आगम सारांश की पुस्तकें एवं रसीद प्राप्त हुई । साथ में पुष्प २१(संवाद) भी प्राप्त हुई । यह किताब बहुत सुंदर है । कई प्रश्नों का जवाब इसमें मिल जाता है काफी द्विधाओं का उत्तर मिलने से संतोष प्राप्त होता है । इस पुस्तक के लिये भी मैं आपका बहुत बहुत आभारी हूँ ।बतीस आगमों का सारांश प्रकट करने के लिये इनमें जुडे हुए सभी लोग धन्यवाद के पात्र है । यह बहुत अच्छा काम हुआ है ।**–बम्बई–बोरीवली वेस्ट ७–९–९३ ।**

५६. श्री ताराचन्दजी लोढा :– आपने विशाल आगम साहित्य की गूढ भाषा की गूढतम बातों को छोटी–छोटी पुस्तकों में छोटे और सरल वाक्यों एवं सरस भावों में लिखी है और जीवन में अपनाने योग्य बातें प्रकट की है । उसके लिये मानव मात्र आपका ऋणि रहेगा, साधुवाद । **–बालाघाट १०–९–९३ ।**

५७. जैन श्वे.तेरापंथी सभाभवन,बीकानेर :– जैनागम नवनीत खंड मिले अत: धन्यवाद । प्राप्त पुस्तकें मुनि श्री डूंगरमल जी को निवेदित कर दी है । मुनि श्री आगम मनीषी जी ने उपयोगी अच्छा संकलन बनाया है । हमारी ओर से इस कार्य के लिये बधाई और मंगल कामना। शेष पुस्तकें भी शीघ्र भेजेंगे ।**२७–११–९३ ।**

५८. श्री विमलकुमारजी नवलखा :– सजिल्द जैनागम नवनीत एवं छेद शास्त्र बहुत उत्तम रहा शंका समाधानों से परिपूर्ण ये आगम सारांश अंक साधु-साध्वीयों में भी लोकप्रिय होंगे । ऐसी मंगल कामना ।–**सूरत**

५९. श्री जसराज जी चोपडा :– आगम सारांश की पुस्तकें मिली । साहित्य बहुत सरस व अच्छा है । सीधी सरल भाषा में लिखा होने से सर्व ग्राह्य है ।**न्यायाधीश, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर ३०–१०–९५**

नोंध :– उपरोक्त साधु-साध्वी एवं श्रावक श्राविका के समस्त पत्र सारांश की पुस्तकें प्राप्त होने पर अथवा उनका अध्ययन करने पर स्वत: प्रेरणा से लिखे गये २० वर्ष पूर्व प्राप्त हुए थे। जो ३२ आगम सारांश की ३२ पुस्तकों की प्रशस्ति-अनुमोदना रूप है। इसके बाद आगे दिये जाने वाले श्रद्धा पत्र आगम मनीषी मुनिराज श्री के व्यक्तित्व के प्रति सदभावना तथा अभिवंदना और अनुमोदना प्रगट करने वाले हैं ।

जैनागम नवनीत एवं प्रश्नोत्तर सर्जक मुनिराज के प्रति श्रद्धापत्र

चरणानुयोग–द्रव्यानुयोग सम्पादकीय सहयोग :– सौभाग्य से इस श्रम साध्य महाकार्य में आगमज्ञ श्री तिलोक मुनिजी का अप्रत्यासित सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है ।

इनकी अनन्य श्रुत भक्ति और संयम साधना देखकर ऐसा कौन होगा जो प्रभावित न हो । श्रमण जीवन की वास्तविक श्रम निष्ठा आपकी रग–रग समाहित है । आपका चिंतन और आपके सुझाव मौलिक होते है ।**–मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'–सम्पादकीय से उद्दृत**

१. श्री जौहरीमल जी पारख (रावटी–जोधपुर) :–

पानीपत गया था । पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी ने आपके लिये सर्वत्र निभने का शुभ संदेश दिया है । आपके आगम ज्ञान की प्रशंसा करते हुए नहीं थकते थे ।

आपको वाचना देने हेतु बाहर से बुलावे तो आने ही वाले हैं अच्छा ही है । शुद्ध निर्जरा होती है क्योंकि आपके कोई निदान या लिप्सा या स्वार्थ आदि तो है नहीं । दि. ३–१०–९४

एकलविहार आपके लिये वरदान सिद्ध होगा । क्यों कि साथी आपको पीछे खेंचते हैं । ५–३–९५

पूज्य ज्ञान गच्छाधिपति श्री चम्पालालजी म.सा. से मेरी वार्ता हुई तो उन्होंने सारी परिषदा के समक्ष आपके आगम ज्ञान की एवं प्रखर बुद्धि की प्रशंसा की थी । आप तो निरभिमानी हुवे पूरे जीवन को आगम श्रुत सेवा में लगा दें, उत्कृष्ट कोटि का आभ्यंतर तप है । ज्ञान का सूर्य जहां भी विचरेगा, अज्ञान का अन्धेरा हटता रहेगा,धर्म की सही प्ररूपणा होगी । दि. ८–४–९५

कई लोगों का कहना है कि आपको रावटी स्थापन कर दो । हमारी भी यही कामना है । दि. १६–८–९५

राजा की पूजा स्वदेश में ही होती है । विद्वान सर्वत्र पूजा जाता है । ज्ञान दान हरेक के बस का रोग नहीं है । आप मानव भव को सफल कर रहे है । स्वाभाविक है कि कुछ लोग आपकी प्रगति की ईर्ष्या करते हैं । गलत प्रचार भी करते हैं । इसमें आपका कोई कसूर नहीं है । जिनके

भाग्य में लिखा होगा वे लाभ उठावेंगे । हम भी आपकी बाट देख रहे हैं । दि. १३-१-९६

२. श्र.सं. उपा. श्री कन्हैयालाल जी म. सा. 'कमल', पीह :–

(९-९-९०) परम पूज्य श्री तिलोक मुनि श्री कई विषयों पर आपसे विस्तृत विचार विनिमय करना आवश्यक है । आगामी चातुर्मास के बारे में भी आपके भावना के अनुरूप मुझे विचार करना है ।

आपके सहयोग की मुझे अपेक्षा है । मेरे से अधिक श्रम होता नहीं है यह आप जानते ही है । आपकी उदारता का लाभ मिलना आवश्यक है ।

(९-९-९०) परम पूज्य श्री गौतम मुनि जी म॰सा॰ ! अभी पूज्य श्री तिलोक मुनि जी महाराज के सानिध्य की अनिवार्य आवश्यकता है इसलिये आपके उदार सहयोग से ही यह संभव है ।

(जावला ११-१-१०) परम स्नेही श्रुत परिग्रही श्री तिलोक मुनि जी ! आपको इस ओर पधारना ही है । आपके सहयोग से ही शेष कार्य सम्पन्न होगा ।

(सूरसागर-दीपावली बाद) आगम सारांश कार्य से जब भी सर्वथा निवृत्त हो जाने पर मेरे अनुयोग के कार्य में सहयोगी बनें तो मुझे बहुत सहयोग मिलेगा । इसके लिये मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा ।

(सोजत ३-५-९२) आप तो श्रुत सेवा में संलग्न है । आपकी हार्दिक लगन असीम है । मैंने जोधपुर से सोजत और सोजत से जोधपुर विलचेअर का प्रयोग किया है, इसका आगमानुसार प्रायश्चित्त सूचित करें । वर्तमान शारीरिक स्थिति में तप रूप और स्वाध्याय रूप जो शक्य हो वह तप लिखें । पत्र का उत्तर सोहनलालजी संचेती जी के पते जोधपुर ही देवें ।

३. मैनेजर श्री अर्जुनसिंह जी(महावीर केन्द्र आबू पर्वत) :–

(२२-१०-९४) आगम नवनीत समापन पत्रिका मिली, अपार हर्ष हुआ । आप जैसे विराट व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी महाज्ञानी महापुढषों के दर्शन कर मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ । आप शुरु से ही इस जीवन में मान मर्यादा में व प्रतिष्ठा में उत्तरोत्तर वृद्धि करते रहे हैं । आप में कितनी ही मौलिकता एवं पवित्रता है । आपकी

सहिष्णुता बेजोड है । पूज्य गुढदेव ! आपने मेरा व्यसन छुडवाकर मेरे स्वास्थ्य का महान उपकार किया है । उसे मैं मृत्यु के अंतिम घडी तक भी भूल नहीं सकता । आपकी प्रेरणा सदैव मेरे पीछे रहनी चाहिये ।

(११-९-९५)पूज्य गुढदेव आपके दर्शनों की मुझे बड़ी अभिलाषा है । आपकी याद हर वक्त आती रहती है । आप वास्तव में सच्चे संत है । आप में जो महानता और बडप्पन है उसका वर्णन करना मेरी लेखनी की ताकत के बाहर है । मैं अपने जीवन में ऐसे महान संत को कभी भुला नहीं सकता । मैं वज्र संकल्प करता हूँ कि मैं सदैव आपके बताये हुए सुमार्ग पर ही चलूंगा ।

४. प्रवर्तक श्री महेन्द्र मुनि जी म॰सा॰'कमल', जयपुर :–

२६-१०-९५ आगम मर्मज्ञ श्री तिलोक मुनिजी म॰सा॰ ! सादर हार्दिक सुखशांति पृच्छा । आपके द्वारा अध्यापन कार्य सुचारु चल रहा है यह जानकर प्रमोद हुआ । यथावसर आपका सहयोग लेने के भाव है आपकी स्मृति होती रहती है ।

स्नेहमूर्ति विद्वान संत श्री तिलोकमुनिजी म॰सा॰ ! आपके द्वारा प्रेषित ध्वनिवर्धक यंत्र एवं विद्युत आदि के संबंध में व्यक्त किये विचार (लिखित) मिले । प्रसन्नता । आपका आगम अधिकार निश्चित रूप से अनुपम है । हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन । कुछ विशेष प्रश्न आदि यथाशीघ्र अंकित कर भिजवाऊँगा । समाधान भेजने का कष्ट करें ।

५. स्थविर पद विभूषित संतश्री प्रेममुनिजी म॰सा॰(साधुमार्गी संघ)

(पाली १-११-९४) सौजन्य शील, सौम्य, हृदयी, श्रुतधर, परम सहिष्णु श्रद्धेय आगम मनीषी पूज्य श्री तिलोकमुनि जी म॰सा॰ ! आपके जैसे सरल सौजन्य शील निरभिमानी आगम मनीषी को इतनी जटिलताओं का सामना करना पड़े यह कल्पनातीत होने के साथ आश्चर्य मिश्रित हार्दिक खेद का विषय है। कर्म सिद्धान्त की भवितव्यता के आगे हर व्यक्ति विवश है । लगता है यही विवशता आपके महान व्यक्तित्व की आभा को आच्छादित कर रही है । आपके धैर्य स्थैर्य सहिष्णुता को धन्य ! धन्य ! धन्य है ! आपकी कर्मठता एवं कर्तव्य परायणता का हार्दिक अभिनन्दन ।

अपने जीवन के मूल्यवान समय को श्रुत समर्पणता के माध्यम से

आगे बढ़ायें । हर परम्परा के साधु-साध्वी जो आपसे ज्ञान लेना चाहे उनके प्रति उदारता वर्तें । हम भी आपके प्रति कुछ कर सकें यह चिंतन अनवरत चलता है । (हर परंपरा के साधु साध्वी को ज्ञान दान चालू कर दिया गया है)

(मसूदा १५-९-९५) आपके समभाव और सहिष्णुता को धन्य है कि आप ढेर सारी प्रतिकूलताओं के बावजूद भी संयम मार्ग में अविचल भाव से समर्पित होकर चल रहे हैं । आपका यह महान जीवन अनेकों के लिये अनुकरणीय आदर्श रूप है ।

आप गुजरात में पहुंच कर जो आगम ज्ञान का आध्यात्म यज्ञ प्रज्वलित किये हुए है तथा अनेक भव्य मुमुक्षु आत्माओं के अंतरतम को आलोकित कर रहे हैं, यह जिनवाणी के प्रति विशुद्ध अनुराग स्वरूप है। विशिष्ट कर्म निर्जरा का हेतु है ।

आपके पास जीवन अनुभव की विशाल समृद्धि है ।भले ही आपका वर्तमान जीवन प्रतिकूलताओं के दौर से गुजर रहा हो, किन्तु आपने श्रुत सेवा के माध्यम से जो पुण्य प्रकर्षता और निर्जरा की सामग्री इकट्ठी की है उसके आधार पर आपका लोकोत्तर समुज्वल लगता है । मेरी शुभकामनायें सहानुभूति सदैव आपके साथ है । आपका आत्मीय भाव प्रवर्धमान रहे इसी शुभेच्छा के साथ ।

६.मधुर वक्ताश्री कानमुनि म.सा., खण्डवा(धर्मदास संप्रदाय) :-

(५-१०-९५) आपका श्रुत प्रेम और आपकी श्रुत सेवा सराहनीय है । आप सुख पूर्वक इधर पधारने की कृपा करें,ऐसी नम्रतम प्रार्थना है। हम आपका यथाशक्य लाभ लेने की भावना रखते हैं । कुछ माह पूर्व महासती जी की श्रुत वाचना के अनुसंधान में आपका स्मरण हुआ था और आपके सानिध्य में आगमों की कुछ वाचना हो तो अच्छा रहे, ऐसी विचारणा हुई थी । क्या आपका इधर आना संभव होगा ? आदि जिज्ञासा से आपसे संपर्क करने का पत्र व्यवहार द्वारा प्रयत्न भी किया था किंतु पत्र आप तक नहीं पहुँच पाये थे । आज ही आपके समाचार निश्रागत संत सतियों को भेज रहे हैं ।

७. वीरपुत्र पं.रत्न श्री घेवरचन्दजी म.सा.(ज्ञानगच्छ) :-

आपके भौतिक शरीर और संयम शरीर की सब तरह से सुखशाता

बनी रहे ऐसी शुभकामना है ।आपके पत्र पर से आपकी ज्ञान पिपासा का सहज पता लगता है कि वह कितनी उत्कृष्ट है । आपका पठन पाठन और ज्ञान-ध्यान निरंतर चालू रहता है यह प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है ।

प्रेषक-आलोकचन्द, खीचन १४-११-८६ ।

८. सुश्रावक श्री लालचन्दजी जैन 'विशारद' रायपुर खीचन :-

आप अपने कर्तव्य का पालन करते हुए कच्छ में विराजित संत व सतियों को शास्त्रों के पठन पाठन का लाभ देकर आगे ज्ञान वृद्धि करते हैं यह धर्म वृद्धि का कारण है । आपका ज्ञान अपार है । आपने ३२ आगमों का जो लेखा जोखा सारांश के रूप में किया है वह सभी संत सतियों व श्रावकों के लिये स्मरणीय रहेगा । कोई कोई बुराई करने वाले भी मिल जाते हैं उसका कुछ भी अन्य विचार नहीं लावें । अच्छे फलों में सडे फल भी आते हैं । हाथी के पीछे सौ कुत्ते भसते हों तो भी वह अपनी मस्ती में चलता है । आज समाज की यह हालात है कि अच्छों का साथ कम लोग देते हैं । बुरों का या अपनी प्रशंसा करने वालों का साथ देने वाले ज्यादा होते हैं । हमें कोई गालियाँ देता है और वे अवगुण अपने में नहीं है तो वे सारी गालियाँ देने वाले के पास वापिस जायेगी यह नियम है ।

९.श्र.सं. उपप्रवर्तक श्री प्रेममुनिजी म.सा. (गांव बडौत)

आप अभी कच्छ प्रदेश के साधु-साध्वी जी को सूत्रों की वाचना प्रदान कर रहे है यह ज्ञान दान का कार्य स्व पर के लिये महान कर्म निर्जरा का कारण है, हमें आपके इस परोपकार के कार्य से अति प्रसन्नता हो रही है । आप को आगम मनीषी होने पर भी कुछ विशेष परिस्थितियों में अकेला विचरण करना पड़ रहा, यह भी एक संयोग समझना चाहिये। तथापि आप अपने धर्म कार्यों में सदा जागृत रहकर प्रयत्नशील है यह बड़ी महत्व की बात है ।

सूत्रों की वाचना सुनने की ढचि तो मेरी भी रहती है । मैं आप जैसे ज्ञानवान चारित्रवान संतों के प्रति बहुत श्रद्धावान हूँ । आपका हमारा बहुत दूर का फासला है इस कारण मेरी ओर से बुलाने का साहस नहीं जुटा पा रहा हूँ । हाँ कभी संयोग होगा आपकी भावनानुसार आप का इधर आने का होगा तो अवश्य ही साथे रहेंगे । आपके संपर्क से

हमारे रत्नत्रय में अवश्य ही वृद्धि होगी । आपके जैसे आगम मर्मज्ञ साधु के साथ कम से कम एक साधु और साथ में रहना चाहिये ।

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप विचरण भी कर रहे हैं जिससे अनेक क्षेत्रों को धर्मलाभ मिल रहा है और साथ में आगमों के अध्यापन कार्य में भी आप प्रयत्नशील है। आपका प्रयास सफल हो ऐसी मैं सद्भावना रखता हूँ एवं आपके प्रति हृदय से स्नेह पूर्वक शुभमंगल कामना प्रेषित करता हूँ ।

१०. धर्मोपदेशक श्री धर्ममुनिजी म.सा. :–

गुरुदेव आपके पुरुषार्थ को धन्य है आपके आगम सारांश मिले हम धन्य धन्य हो गये हैं। मौका होगा भाग्य ने साथ दिया, समय अनुकूल रहा तो आपके चरणों में आगम का अध्ययन करने का भाव है ।

हमारे लिये कोई सेवा हो तो लिखना । श्री तिलोकमुनिजी ! आप विश्वास रखना हम आपको गुढतुल्य समझते हैं, बिना संकोच के लिखें और पंजाब आने का भाव रखें । आप श्री की सेवा करने की भावना रखता था मगर आप बहुत लम्बे चले गये । वह दिन धन्य होगा जिस दिन मुझे आपकी सेवा का मौका मिलेगा । आगम सारांश के सेट कुछ बाकी हो तो इधर संत सतियां जी म.सा. इच्छा करते हैं । कृपा करेंगे तो वितरण कर देंगे ।

आपको शाता हो आप श्री इधर पधारो । हरियाणा पंजाब स्पर्श करके पवित्र करें । हम अपना भी सौभाग्य समझेंगे, आप हमें भी सेवा का मौका देवें अति कृपा होगी । पाँच सेट प्राप्त हुए महति कृपा की ।

११. कच्छी श्रावक श्री विनोदकुंवरजी छेडा (बम्बई) :–

आपके द्वारा किये गये संशोधन तथा हमारे प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए । प्रत्येक प्रश्नों के उत्तर सचोट एवं विस्तार पूर्वक होने से हमें समाधान हुआ है । आपने जो परिश्रम किया वह उल्लेखनीय प्रशंसनीय है । जैनागम नवनीत के आठों खंड पढें हैं । स्था. जैन समाज पे आपका बहुत उपकार है । हम आपके ऋणी है । आपके संयम जीवन की एवं आगम ज्ञान की अनुमोदना ।

१२. सुश्रवाक श्री दिनेश भाई महेता (भुज) :–

आप से ज्ञान चर्चा का लाभ प्राप्त हुआ था उससे काफी जानकारी

प्राप्त हुई और प्रश्नों का संतोषपूर्ण समाधान हुआ था । लेकिन जब भी अवसर प्राप्त होगा तब और ज्ञान चर्चा करने की तमन्ना है । आप जैसे परमज्ञानी और साधु समाचारी के द्रढ पालक का आशीर्वाद मेरे जैसे श्रावक को भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिये सरलता प्रदान करता है । फिर से आपके परमज्ञानी आत्मा को भाव पूर्वक वंदना ।

१३. तत्त्व चिंतक मुनिश्री प्रकाशचन्द्रजी म.सा. (अजरामर संघ)

(८-९-९२) आपके आगम सारांश संपूर्ण प्रकाशित हो जाने बाद उनका गुजराती अनुवाद करने की पूरी भावना है ।

अहमदाबाद में चार दिन साथ में रहे थे वे दिन यादगार हो गये। अभी तक आपके ज्ञान और खोज से मैं जितना प्रभावित हुआ हूँ उतना अन्य कोई जैन संत से नहीं । आपके सानिध्य में रहने की तीव्र भावना है । कृपादृष्टि रखना ।

(२७-१०-९२) आगामी चातुर्मास हमारा भचाऊ कच्छ में ही है यदि आप पधारेंगे तो सुवर्ण सुरभि संयोग होगा । आपके पास से ज्ञान प्राप्त करने की जो हमारी तीव्र भावना है वह साकार होगी और गुजराती अनुवाद करने में साथ मिलेगा ।

आप जब से मिले तब से कोई दिन भी ऐसा नहीं होगा जो मैंने आपको याद न किया हो । हमारे सभी ज्ञान भंडारों में आपकी सारांश पुस्तकें रखनी है ।

(१५-१०-९२) चातुर्मास बाद गुजराती अनुवाद करने की शुभ शढआत कढँगा आपका आशीर्वाद अपेक्षित हैं ।

आपके साथ सत्संग करने का बहुत होंश है । चार दिन का सत्संग चिरस्मरणीय हो गया है ।

(३१-७-९४)विशेष आनंद इस बात से हुआ कि आपका सानिध्य हमको प्राप्त हो सकेगा । आगामी चातुर्मास हम ऐसे क्षेत्र में है कि सब अनुकूलता हो सकेगी । आपका अमूल्य सानिध्य मिलने के बाद सभी आगमों के सारांश का गुजराती अनुवाद का कार्य आगे बढ़ सकेगा ।

हम इस समय पांच संत चातुर्मास में हैं । दूसरें संतों को भी जानकारी देंगे । यदि कोई आगम अभ्यास के लिये साथ में रहेंगे तो अधिक आनंद आयेगा, वरना हमको तो आपके द्वारा आगम वाचना

लेने की पूर्ण भावना है ही । आपका सानिध्य प्राप्त कर आगम ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा है, शीघ्र पूर्ण हो ऐसी अपेक्षा रखता हूँ ।

(रापर १४-११-९४) सब की भावना ऐसी है कि आप कच्छ में पधारें और आपके ज्ञान का लाभ सभी को दें । हमारी तो तीव्र इच्छा है ही परन्तु श्री संघ के सभी भाइयों की भी ऐसी भावना है कि आप कच्छ में पधारें । शेष काल में तो लाभ मिलेगा ही और आपको अनुकूलता होगी तो प्रागपुर चौमासे में भी लाभ मिल सकेगा ।

आपको अनुकूलता हो तो अवश्य पधारिये । हमारे सभी का कच्छ में मिलन हो सकेगा और आपका उपकार कभी भी नहीं भूलेंगे ।

(१४-११-९४) रापर संघपति का पत्रांश-विनती के साथ लिखना है कि हमारे प्रकाशमुनि महाराज साहेब को आपके ज्ञान का लाभ लेने की तीव्र भावना है तो आप हमारे कच्छ भूमि में पधारे और सब को दर्शन का लाभ दें । नानू भाई का भावपूर्वक वंदन ।

(१३-३-९४)आपका पत्र प्राप्त हुआ । बहुत आनंद के साथ अत्यंत संतोष हुआ । कल्पवृक्ष फलने से जैसा हर्ष होता है ऐसा आनंद आपके आगमन से हो रहा है । आपका आगमन हमारा आनंद । बहुत वर्षों के बाद आपके पावन सानिध्य की भावना पूर्ण होगी ।

भूखे को भोजन मिलने से और तृषित को अमृतजल मिलने से जैसा आनंद होता है वैसा आनंद का हम आज अनुभव कर रहे हैं ।

१४. विद्वान संत श्री भास्कर मुनि जी म.सा.(आबूपर्वत)

(१-४-९५)आपका सौहार्द पूर्ण पत्र प्राप्त हुआ, पढ़कर बहुत प्रसन्नता । आप सुखशाता पूर्वक हमारे कच्छ में पधार गये हैं और हमारे सन्त सतियाँ जी आपके उत्कृष्ट ज्ञान सिंधु से यथाशक्ति लाभ उठा रहे हैं यह जानकर बड़ी खुशी हुई । जिनका महान पुण्योदय हो उनको आपकी सन्निधि प्राप्त हो सकती है । आपकी कच्छ यात्रा सफल व यशस्वी अवश्य बनेगी, यह हमें पूरा भरोसा है ।

मुनिप्रवर श्री प्रकाशमुनि व अन्यान्य संत सतियाँ जी का पूरा सौभाग्य है कि वे आपके द्वारा प्रदत्त शास्त्रीय धारणाओं से लाभान्वित हो रहे हैं । सस्नेह हार्दिक सुखशाता पृच्छा व यथाविधि वंदन ।

(५-५-९५) मुनि प्रवर श्री प्रकाशमुनि एवं विशाल साध्वी गण

आपके आगम ज्ञान से लाभान्वित हो रहे हैं, जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। इन लोगों का सौभाग्य है कि अनायास आपका जोग मिल गया है ।

आपके ज्ञान एवं चारित्र से पूरा समाज प्रभावित है । साधु-साध्वी आदि चतुर्विध संघ इस दृष्टि से आपके प्रति बहुत श्रद्धान्वित है ऐसा अनुभव उत्तरगुजरात व आबू की स्पर्शना के दौरान हमें हुआ है इतनी श्रद्धा के केन्द्र आप बने हुए हैं । आप शास्त्र रहस्य वेत्ता गीतार्थ संत है। हमारे स्थानक वासी समाज के प्रति अन्य लोगों के द्वारा कोई प्रहार होता हो तो उसका निवारण करना, उसके लिये कलम उठाना आपके जैसे आगम मनीषी संतो का कर्तव्य है ।

(२९-५-९५) आपके द्वारा ज्ञानामृत का लाभ प्रकाशमुनि जी व अन्यान्य सतियाँ जी उठा रहे हैं यह प्रसन्नता की बात है ।

(१४-८-९५ भचाऊ) परम आदरणीय जैन शास्त्र विशारद मुनि प्रवर श्री तिलोक मुनि जी म.सा. ! यहां ठाणा ११ सुखशांति पूर्वक विराजमान है आपको यथा विधि वन्दना एवं सुखशाता निवेदन किया है । आपके यहाँ आगमवाचना व स्वाध्याय का अच्छा क्रम चल रहा है जानकर प्रसन्नता हुई ।

१५. संयमनिष्ठा महासतीजी श्री अनिलाबाई म.सा.(भुज) :-

(२-४-९६) रापर, लाकडिया रोकाण दरम्यान मलेला शास्त्र वांचनी नो लाभ पुनः पुनः स्मरण पर आवता आत्म प्रसन्नता नी अनुभूति थई रही छे । खरेखर आपे उदारता पूर्वक अमने समय अने सहकार आप्यो छे ते भूली शकाय तेम नथी ।

आप अमारा पर महान उपकार करी जे ज्ञान दान आप्यु छे अे सदा चिस्मरणीय बनी रहेसे । आप श्री नुं चिंतन शास्त्र निष्ठा अने अन्य ने ज्ञान दान आपवानी लगन, खूब खूब प्रशंसनीय छे । समझाववानी सरल पद्धति ने कारणे फरी फरी लाभ लेवानो भाव थाय पण हवे तो ए दुर्लभ छे ।

संप्रदाय ना संत सतीजीओ आपश्री ना अगाध ज्ञान नो लाभ लई चारित्र मां पुष्टी करे, रत्नत्रय नी आराधना मां जोगवंत बने ए भावना आजपण अमारी रही ज छे ।

अमे अमारी रीते आपनी पासे थी लीधेली वाचनानुं पुरानवर्तन,

शक्य तेटलुं जीवन मां अवतरण करवा अवश्य कोशीश करशुं । आर्या अनिला जी ना पुनः वंदन । (मांडवी ७-५-९७) आपनी पासे थी लीधेली आगम वाचना अमारा जीवन मां घणी ज उपकारी बनी छे ।

आपना मार्ग दर्शन मुजब संयम जीवन दरम्यान लागेला दोषोंनुं आलोचन प्रतिक्रमण करी अत्यार सुधी अेटले के संयम जीवन ना २७ वर्षनी शुद्धि माटे अमे **बहुसो वि** ने न्याये छः महिनानुं उपवासनुं (१८० उपवास छूटा) प्रायश्चित्त लई लीधुं छे अने ते दिवस थी दररोज सांझे प्रतिक्रमण बाद दैवसिक प्रायश्चित्त करीए छीए ।

आपनी सूचना मुजब आंतर निरीक्षण करी जाणता अजाणता लागेला दोषोंनुं, आधाकर्मादिनुं प्रतिदिन पांच उपवासनुं प्रायश्चित्त लइये छीऐ । वली प्रायश्चित्त उतारवा माटे ना विकल्पो जणाववा कृपा करशो। आपनी तबियत साधना ने अनुरूप हशे । आगम वाचना चालू हशे । सौराष्ट्र मां तो घणाज जिज्ञासु मली जाय । आपनी ज्ञान पिपासा अने ज्ञान दान देवा नी भावना घणी ज उत्तम छे । अमें बधा ज ठाणा घणीवार याद करीने हार्दिक अनुमोदना करीअे छीअे ।

१६. परम विदुषी महासती श्री झरणाबाई म.सा.(कच्छ) :–

आगम मर्मज्ञ पू. श्री तिलोकमुनिजी । हार्दिक वंदन।।। सुखशाता पृच्छा । धारणा अने व्याख्यानादिनी बुक आपे जे मोकली छे तेमां आपनुं मेलवेलुं ज्ञान अने तेनी पाछल करेलो जब्बर पुढषार्थ प्रत्यक्ष जणाय छे। तमारो ज्ञान नो वारसो अवश्य चालशे । अमारी पाछल कीमती समय नो भोग आपे जे आप्यो छे ते भूली नहीं शकीए । आपना सद्गुणो ने याद करीए छीए ।

१७. परम विदुषी महासती श्री प्रफुल्लाबाई म.सा.(खंभात संप्रदाय)

(विरमगाम ५-३-९६) गुणवंत गुणना भंडार, आगमना ऊँडा अभ्यासी, अप्रमत्त, जिनशासन नी जब्बर प्रभावना माटे ज्ञान नुं दान देनार मुनिश्री तिलोकमुनि जी महाराज साहेब... आप पण महावीर ना मार्ग मां मस्त हशो अने स्वभाव मां स्वस्थ हशो ।

पूज्य गुढदेव आपे खरेखर आगमोंनी खूबिओनुं चाबियोंनुं अगाध ज्ञान मेलव्युं छे.... । साथे-साथे आपवानी भावना पण आपनी तीव्रतम छे । आथी आपनुं जीवन ज खूब प्रशंसनीय अने वखाणवा लायक छे...

आपने(कच्छ गुजरात) खूब-खूब सुखकारी रहे अने आप जिनशासन नी खूब-खूब प्रभावना करो, तेवी शक्ति मले, तेवी अंतर नी भावना....

१८. श्रमण संघीय विदुषी अनुभव वृद्ध महासतीजी :–

आपका पत्र एवं एक पत्र की प्रतिलिपि मिली । जो कुछ भी आपके साथ हुआ, घटा पढ़कर अफसोस हुआ । लगता है समय ऐसा आया है जहां अच्छों का साथ देने वालों का दुष्काल पड़ता जा रहा है। भला जहाँ कुए में ही भांग पडी है वहाँ भला किससे क्या आशा की जा सकती है । चाहे भले कितने ही पदवी धरों के आगे पुकार गई, परिणाम आप देख ही चुके होंगे । गलत करने वालों को सही दंड मिलना और सही व्यक्ति को प्रोत्साहन मिलना यह बात तो आप भूल जाइये । यहाँ तो अंधेरी नगरी चौपट राजा वाली कहावत चरितार्थ हो रही है । कहने का आध्यात्म क्षेत्र है परन्तु यहां योग्यता एवं गुणों की नहीं, प्रतिष्ठा की पूजा है, कीमत है । बारह वर्ष के लिये आपने जो अध्यापन का निर्णय लिया है वह प्रशंसनीय है । भाग्यशाली हैं वे जो आपसे आगम ज्ञान ग्रहण कर रहे हैं ।

१९. मेनेजर श्री अर्जुनसिंहजी (श्री वर्धमान महावीर केन्द्र-आबूपर्वत)

(दिनांक २७-६-९६) आपने अपने सज्जनता, नम्रता, उदारता, शिष्टता तथा अपनी मधुर वाणी से मेरे हृदय पटल पर जो छाप छोडी वह मेरे जीवन की अंतिम घडी तक भुला नहीं सकता । आपने यहाँ आबू पर आगम लिखने में अथक परिश्रम किया । आपने अपने अदम्य साहस एवं पुढषार्थ से जो अच्छे कार्य किये हैं वे भूलने पर भी भुलाये नहीं जाते।

आप वास्तव में सूर्य समान तेजस्वी, चंद्र समान शीतल, भारण्ड पक्षी समान अप्रमत्त, गुणों के सागर, विद्या के भणडार, एवं सच्चे संत है । आप जैसे महान संतो पर भी लोग जूठा दाग लगाते हैं उनकी गति नहीं होगी। मैं आपके लिये हमेशा स्वस्थ यशस्वी तथा दीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूँ । आपके पास तो सत्य शक्ति का अखूट खजाना है। सांच को आंच नहीं। सत्य की हमेशा विजय होती है ।

आप तो सुमेढ पर्वत की तरह चट्टान बन कर अन्यायों का छाती ठोककर मुकामला करें और संकटों का सामना करते रहें ।

आगम मनीषी मुनिराज श्री के

स्वरचित काव्य

धर्म क्रिया की शुद्ध पालना :–

हृदय धारो रे, २, थे भली सीख मन मांहि विचारो रे ॥टेर॥
धर्म क्रिया की रीति नीति, ने शुद्ध पालो (समझो) रे ॥टेर॥
दर्शन वंदन सेवा करवा, स्थानक मांहि आवो रे ।
पाँच अभिगम पूरा करना, ध्यान लगावो रे ॥१॥
घर मांहि मुनिराज पधारे, जो मालुम पड जावे रे ।
आदर देणो विनती करनी, हर्ष भाव मन लाणो रे ॥२॥
जो जाणो मुनिराज आवतां, सचित्त ने सरकावो रे ।
दान देणो और दोष लगाणो, लाभ घटाणो रे ॥३॥
साधु से सम्बन्ध तुम्हारा, साधपणे का जाणो रे ।
मोह थकी थे झूठ कपट कर, मत हरसाणो रे ॥४॥
घर बैठा जो लाभ थे च्हावो, दोष संयम का जाणो रे ।
निर्मोही बन सच्चाई से व्रत को पालो रे ॥५॥
सामायिक तो करनी है पर, क्यों करनी या जाणो रे ।
दोय घडी रो साधपणो है, ध्यान लगाणो रे ॥६॥
रोग मिटे धन पुत्र बढे यों, आशा नही लगाणी रे ।
पाप रूके और कर्म खपे यों, समझों बणाणी रे ॥७॥
बिना प्रयोजन बिना जतन के, एक कदम नहीं चलणो रे ।
चंचलता को छोड त्याग को, पार लगाणो रे ॥८॥
भाषा को बहु ध्यान राखणो, या फिर मौन पचखणी रे ।
वांचन श्रवण या सुमरण मांहि, समय बिताणो रे ॥९॥
धर्म कथा से आनन्द लेवो, विकथा में मत झांको रे ।
क्रोध हँसी और बिना विचारे, कुछ मत भाखो रे ॥१०॥

ऐहिक चाह और सामायिक व्रत, ३६ आँक पिछाणो रे ।
ओम ओम और अंबे शारद, समझे बिन यो ध्याणो रे ॥११॥
स्तवन स्तुति बोल वांचने, होवो थे मस्ताना रे ।
अर्थ कांई और सामायिक में, किम कल्पाणो रे ॥१२॥
सामायिक में उपकरणों को, बडे यत्न से धारो रे ।
पटका झटका करो मती, और ममत्व निवारो रे ॥१३॥
खाज आवे तो देखे बिन ही, हाथ चलणो रे ।
ओठो लेणो नींद काढणी, दोष न जाणो रे ॥१४॥
शरीर की जो बाधा हुवे तो, कहाँ कैसे थे जावो रे ।
खडा खडा थे कफ थूको रे, ध्यान लगावो रे ॥१५॥
सामायिक रा नियम दोष ने, कभी कभी तो जोवो रे ।
दोष टाल कर नियम पालणो, लक्ष्य बनाओ रे ॥१६॥
तपस्या करने आरंभ ठावो, और मान बढावो रे ।
आडंबर कर स्थानकवासी, नाम लजावो रे ॥१७॥
धोवण का तो नियम धारो, धोवण ने नहीं परखो रे ।
शक्ति सारू नियम होवे, क्यों दोष लगावो रे ॥१८॥
ज्ञान करीने क्रिया पालो, सूत्र को फरमाणो रे ।
लाभ पावो फिर पूरो देखो, जीवन हो सफलाणो रे ॥१९॥
जिज्ञासा होवे जो कुछ भी, निर्णय तो कर लेणो रे ।
संत समागम ऐवा अवसर, तिहुँ लोके नहीं रेणो रे ॥२०॥

समकित की समझ :–

सुणो वो समकित ने फरसे, सुणो वो समकित ने फरसे ।
जिनवाणी सुणवा मां जिणरो, हिवडो अति हरषे ॥टेर॥
सुणो वो समकित नहीं फरसे, सुणो वो समकित नहीं फरसे ।
ज्ञान बिना आंधा ज्यूं चाली, कुमारग पडसे ॥टेर॥
समकित की कुछ बात कहूँ, रख आगम का आधार ।
श्रवण करी जो हृदय धारे, तो होवे भव पार ॥

समकित परिभाषा–

जीवादि नव तत्वों ने जो, ज्ञान करी समझे ।
देव गुढ शुद्ध धर्म शास्त्र जो, इण ने भी सरधे ॥१॥
परमारथ रो परिचय करके समद्रष्टि सेवे ।
कुदर्शन समकित वमियोंनी, संग में नहीं रेवे ॥२॥

समकित अतिचार–

संका कंखा, वितिगिच्छा अरू, परमत परशंसे ।
परिचय पण तेणो करसी वो, समकित अतिचरसे ॥३॥

समकित लक्षण :

शत्रु मित्र पर समभावी हो, सदा वैराग्य वधसे ।
आरंभ परिग्रह कम करके जो, अनुकम्पा करसे ॥४॥
जिनवाणी ने सांची सरधे, ये पंच गुण धरसे ।
समकित ने वो उज्जवल करके, मुक्ति मार्ग फरसे ॥५॥

सन्मार्ग–

अरिहंत देव ने सुगुढ सुसाधु, दया धर्म भाखे (माने) ।
कुगुढ कुदेव कुमार्ग माँहिं, किंचित नहीं झाँके ॥६॥

उन्मार्ग–

एक गुढ जो पकडी बैसे, सुगुढ नहीं जाँचे ।
पक्षग्रह में पड फिर वो, निज आतम ने वंचे ॥७॥

गुढ परिचय–

पंच महाव्रत समिति गुप्ति, इणने शुद्ध फरसे ।
गुढ कहावण लायक वोही, भवसागर तिरसे ॥८॥

गुढ आमना–

गुढ आमना आगम मांहि, कहीं नहीं चाले ।
समकित धारे स्वेच्छा थी, ज्यों व्रत बारा धारे ॥९॥
परिग्रह नी पोषक या जाणो, बडा बडा रांचे ।
थारा–मारा गांव–घरों ने, इधर–उधर खांचे ॥१०॥

चर्यापरिषह :

चर्या परिषह जीते साधु, भगवंत इम भाखे ।
अंतिम शिक्षा मांहि देखो, उतराध्ययन साखे ॥११॥
गाम नगर पुर पाटण विचरे, घर घर माहिं फिरे ।
ममता तज एकाकी रेवे, सो ही तारे तिरे ॥१२॥

धर्मगुढ धर्माचार्य :

धर्मगुढ अढ धर्माचारज, उपकारी जो होवे ।
गृहस्थ साधु और अरिहंतादिक, ज्ञान प्रथम देवे ॥१३॥
परदेशी राजा ने केशि, ज्ञान प्रथम देवे ।
आनंदादि श्रावक पहले, वीर प्रभु सेवे ॥१४॥
सतसप्त चेला अंबड श्रावक, ने आश्रय रेवे ।
इत्यादि वे अपने अपने, धर्म गुढ केवे ॥१५॥

सीख :

शुद्ध समझ हृदय में राखी, उपकार सदा मानें ।
संयम गुण ना धारी जो हों, सुगुढ उन्हें जाणें ॥१६॥
जीवन में कई मुनि श्रावक का, ज्ञान उपकार रेवे ।
तो न्यारा–न्यारा गुढ छोड, भवी सुगुढ सदा सेवे ॥१७॥

परिणाम :

इम ज्ञान ग्रही ने तत्व विमासी, सीख हिये धरसे ।
तिहुं लोके वो नहीं भटकेगा, भवदधि ने तिरसे ॥१८॥ इति ॥

श्रावक के बारह व्रत की ढाल

सुनो सुनो रे सजन चित लाई । व्रत धारयां थी सुख पाई रे ॥टेर॥
जो जिनवाणी सुन पाते । वें व्रत या महाव्रत धरते[१] रे ॥१॥
थे जाणों आगम सुनकर, ज्याँमें वर्णन है भिन्न भिन्न कर रे ॥२॥
सुनने का ज्ञान फल जानो । फिर लो कुछ प्रत्याख्यानो[२] रे ॥३॥
थे इतना मत रहो सेंठा[३] । नहीं मन को राखो ढेठा रे ॥४॥
व्याख्यान सुणों चित लाई । वह तो है निरर्थक नाही[४] रे ॥५॥
सुनता हुआ वर्ष अनेकों । पण व्रत १२ न विवेकारे ॥६॥
व्रतधारी कोई होसी । खाली को केणा रहेसी रे ॥७॥
व्रत की ढचि जो ही थावे । तो समकित द्रढ रह जावे रे[५] ॥८॥
थे जाणो सुणो बहु बातां । संसार से तृप्ति न लाता रे ॥९॥
रहो जग से उदासी भाई । ज्यों चूरी चोर[६] पद पाई रे । ॥१०॥
व्रत धरणो कठिन जो लगियो ।हिय ज्ञान शुद्ध नहीं जगियो रे ॥११॥
भगवंत भाखे भवी भालो । यो सरल मार्ग थे चालो रे । ॥१२॥
जो युद्ध त्याग नहीं सकते । वे भी तो अणुव्रत धरते[७] रे ॥१३॥
छती शक्ति नींद उडावो । जाणु सेठ[८] जिम नहीं थावो रे ॥१४॥
१. व्रत पहलो देखो सज्जनो । जाणी आकुटी त्रस नहीं हणनो रे ॥१५॥
अतिचार ध्यान रखो पूरा । अटके तो करो आगारा रे । ॥१६॥
२. पाँचो ही झूठ थे छोडो । आगार रख्याँ रेवे थोडो रे । ॥१७॥
जिम राज दंडे लोक भंडे । त्याग्याँ से कर्म नहीं बंधे रे । ॥१८॥
३. तीजो भी पाँच प्रकारो । चोरी तजणो दिल धारो रे । ॥१९॥
इण आदत पेठ गमाणो । बेउ लोक थाय दुखियाणो रे । ॥२०॥
दाबी रहे न आग लपेटी । छानी राख भले तूँ सेंठी रे । ॥२१॥
इन लक्षण समकित भी जावे । जो पाप में गृद्धि थावे रे । ॥२२॥
कोणिक की देखो भक्ति[९] । पण गयो नरक वो षष्टी रे । ॥२३॥
४. चौथा व्रत करो मर्यादा । थे सदा नहीं रहो राता रे । ॥२४॥
संतोष करी पर तजणी । फिर पंचायत नहीं करणी रे । ॥२५॥

५. नव बोल करो मर्यादा । या समुचय लो थे वादा रे । ॥२६॥
तृष्णा के रोक लगावो । तो नरकायु नहीं बंधावो[१०] रे । ॥२७॥
यों व्रत ले पार पडावो । दस पाँच[११] भवे मुक्त थावो रे ॥२८॥
६. छहों दिशि मर्यादा धारो । आगे आश्रव परिहारो रे । ॥२९॥
करण जोग अनुसारे[१२] । क्रिया आवेली लारे रे ॥३०॥
७. छब्बीस मर्यादा धारो । पन्द्रह को दूर निवारो रे । ॥३१॥
धारो जैसा ही जीवन, पण शक्ति करो मती गोपन रे । ॥३२॥
समझी सोची लो वादो । फोगट में कर्म क्यों बांधो रे । ॥३३॥
८. आठमो व्रत चार प्रकारो । यामें रखो सदा विचारो रे । ॥३४॥
उपरांत त्याग ये धरणा । अगलों में कम नहीं करना[१३] रे ॥३५॥
छूटें लाचारी मन से । उन्हें त्यागी नहीं प्रसंशे[१४] रे । ॥३६॥
यों मर्म सुबुद्धि समझणो । पीछे इणने भी तजणो रे । ॥३७॥
९. पेलो शिक्षा व्रत है छोटो । पूरे दिन में देवो घंटो रे । ॥३८॥
चोबीस में होवे एक अपणो[१५], तो भमतां होंवे बचणो रे ॥३९॥
जो दिल में लेवे धारी, तो फुरसत होवे बिचारी[१६] रे । ॥४०॥
विधिवत सामायिक धारो, बत्तीस ही दोष निवारो रे ॥४१॥
१०. दसवें चौदह (२५) नित धारो, मनोरथ तीन चितारो रे । ॥४२॥
संसार की सबही बाताँ, फिर भी होवे अनुपम लाभो रे । ॥४३॥
इण में चित जेनो रेवे, वो कर्मों ने कमती लेवे रे । ॥४४॥
११. तीजी विश्रांति पौषध[१७], आत्मा की है या औषध रे ॥४५॥
यो व्रत धरणो है अकरो, समझे तो लागे सखरो रे । ॥४६॥
'पडिपुण्ण' शब्द भले देखो, पर भगवती[१८] भी थे पेखो रे ॥४७॥
छ छ पौषध व्रत धारी, पक्खी पौषध आहार विहारी रे ॥४८॥
इण में तप कम होवे मानों, पर असल बात पहिचानो रे ॥४९॥
यों सभी मर्म ने जाणो, पर मति करो खेंचा ताणो रे ॥५०॥
शक्ति होवे जिम धारो, उतनो ही फल होवे लारो रे ॥५१॥
पौषध का दोष अठारों, अढ पाँच तजो अतिचारो रे । ॥५२॥

१२. जहाँ बैठ के भोजन करणा, नवकार मुनि सुमरणना रे ॥५३॥
संयोग मिले खुश थाओ, रखी विवेक शुद्ध बहराओ रे ॥५४॥
यो व्रत तो लागे सखरो, पण ध्यान राखणो अकरो रे ॥५५॥
सचित्त रख पास विराजो, तो भले आवो मुनिराजो रे ॥५६॥
व्रतधार विवेक भी रखणा, तो भाव सफल फिर करणा रे ॥५७॥
इम ज्ञान करी जो धारो, व्रत १२ होय निस्तारो रे ॥५८॥

समकित :

समकित सेंठी तुम करलो, और व्रत बारह को धरलो रे ॥५९॥
कुदेव कुगुढ का निवारण, सुदेव सुगुढ करो धारण रे ॥६०॥
रूढि से सुगुढ भी निवारे, और एक गुढ सेंठा धारे रे ॥६१॥
या शुद्ध नहीं है समझण, मूल पाठों का करलो[१९] दर्शन रे ॥६२॥
उपकारी गृहस्थ भी होवे, सुसाहुणो ही गुढ रेवे रे ॥६३॥
तत्वों की बात पहिचानों, करो ३२ सूत्र परमाणो रे ॥६४॥
मती करो कोई खेंचा ताणी, सूत्र देख होवे हलकाणी रे ॥६५॥
मोक्ष मार्ग नाम को अध्ययन, देखो थे उत्तराध्ययन रे ॥६६॥
शुद्ध भाव धरी जो समझसे, वो समकित व्रत शुद्ध करसे रे ॥६७॥

ज्ञान :

एक सीख और भी धारो, सूत्र ज्ञान धरो कुछ सारो रे ॥६८॥
चौथे आरे भी देखो नंदन, मेंडक[२०] एक बार गयो बन रे ॥६९॥
ज्ञान महिमा कहियन जावे, श्रावक[२१] भी देव डिगावे रे ॥७०॥

प्रेरणा :

आलस को दूर भगावो, जल्दी से कदम बढावो रे ॥७१॥
हिंमत हो तो घर त्यागो, या व्रत १२ से लागो रे ॥७२॥
व्रत धार करो शुद्ध पालन, एक बार होवे आराधन रे ॥७३॥
या सीख सुबुद्धि धर लेलो, शास्वत सुख करसी हेलो रे ॥७४॥
'त्रिलोक' कहे उपर जाओ, बणी शुद्ध पाछा नहीं आवो रे ॥७५॥

ooooo

टिप्पण : (१) देखें उपासक दशा, अंतगढ एवं सुखविपाक सूत्र(२) सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य संजमे ।(३) मगसेलिया पथ्थर के समान मत बनो ।(४) उदक रहे नहीं छाब में, तो पिण होवे साफ ।(५) पाँचवाँ गुणस्थान रहेगा तो समकित रहेगी ही । तथा पूर्व भव से लाई गई समकित भी व्रत धारण करने से रह सकती है । अन्यथा नष्ट हो जाती है ।(६) चावल की चूरि चोरने वाले सेठ का द्रष्टांत ।(७) चेडा राजा और वढणनागनतुआ।

(८) जाणू जाणू शेठ कहे, ने चोर गया है दूर ।
सेठाणी कहे सेठ ने, थारे जाण पणे में धूड ॥

(९) कोणिक भगवान का परम भक्त था परन्तु लोभ पाप की अति से छट्ठी नरक में गया ।(१०) महापरिग्रही नारकायु बंध का कारण है । सीमा कर देने वाला महापरिग्रही नहीं होता है ।(११) व्रत का आराधक होने पर उत्कृष्ट १५ भव से जीव मुक्ति प्राप्त करता है । (१२) छट्ठे व्रत में करण-योग के पाठ भेद मिलते हैं ।(१३) एक से आठ व्रतों में **उपरांत त्याग, उपरांत त्याग** ऐसा धारण किया जाता है और नवमें आदि में इतनी सामायिक, पौषध से कम नहीं करना ऐसा नियम किया जाता है। (१४) इन व्रतों मे श्रावक जो भी सावद्य कार्यों की छूटें आगार, या मर्यादा रखता है, वह उसकी लाचारी है। यह एक दिन उन्हें संपूर्ण त्यागने का मनोरथ रखता है। इन छूटों की साधु को प्रशंसा करना या मंडन, प्रेरणा करना नहीं कल्पता है । यथा- स्नान करना चाहिए खेती करना चाहिए आदि-आदि ।(१५) २४ चोर की कथा । उसमें एक सेठ का भूतपूर्व नौकर था ।(१६) जोधपुर के मुसाहिब और गरीब की घटना यथा-

काम छताँ ही काम का, बिना काम बेकाम ।
जोधपुर के मुसाहिबाँ, क्यों नहीं सुमरो राम ॥

(१७) ठाणांग ठाणा ४ में चार विश्रांति कही है ।(१८) भगवती श. १२ उ. १ पुष्कली आदि छ छ प्रति पूर्ण पौषध व्रतधारी श्रावकों ने खाते-पीते पक्खी का पौषध किया ।

[भजन- सान निराली प्रकाशगुढ की]

प्रकाशगुढ की, शान निराली है दोस्तों,
झुक झुक प्रणाम, इनको करलो, मिल के दोस्तों ॥टेर॥

समर्थ गुढ ने सत्ता सोंपी, च पक गुढवर को,
पर अपनी कला करामत से, मिली प्रकाशगुढवर को;
खूब चमकाया ज्ञानगच्छ, मिल के दोस्तों। झुक झुक.....१

पर खोटी जिद्द एक आदत, बहुत बुरी ने,
हैरान किया समर्थ च पक गुढ, और क चन गुढणी (को)ने,
त्राहि त्राहि माम पुकारा, श्रावक लोगो ने। झुक झुक.....२

नित नई धारणा, समाचारी बनाते,
ड़ ख रखकर, साध्वी दीक्षा रोक लगाते,
कहाँ जाकर पुकार करें हम, मिल के दोस्तों। झुक झुक.....३

चि ता मग्न सच्चे श्रावक, लगे प्रयत्न को,
तिलोकमुनि याद आते, पहोंचे राजकोट को,
निवेदन कर दी बीतक सारी, मिल के दोस्तों। झुक झुक.....४

तिलोकमुनि ज्ञान गच्छ से, बहुत मुक्त थे,
फिर भी दिल से गच्छ के वे तो, पूरे भक्त थे,
ईसारे में ये तो समझे, मिल के दोस्तों। झुक झुक.....५

अपनी सूझ-बूझ शक्ति, सारी लगा दी,
कठोर लेखनी की तीक्ष्ण, तलवार चला दी,
दवा कड़वे कड़वे कुनेन की, घोट दी,
प्रकाश, ब शी, ज्ञान, नेमि; पूर्ण को पिलादी,
गौतम मालू टीकम अब तो, रोवे दोस्तों। झुक झुक.....६

खोटा नशा, जिद्द का ताव, उतर जायेगा,
अथवा खोटी जिद्द से, गच्छ का प्राण जायेगा,
समर्थ देव(गुढ)का जाप करलो, मिल के दोस्तों।
झुक झुक प्रणाम इनको करलो, मिलके दोस्तों ७

संथारा-दीक्षा निमित्तक पत्र

आगम निबंधमाला भाग-१ में आगम मनीषी श्री का स्वास्थ्य सुधार और प्रायश्चित्तकरण का स्पष्टीकरण एवं संथारा तारीख कवर पृष्ठ-४ पर पढकर मुंबई (कल्याण)से **आचार्य श्री विजय पूर्णचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य श्री मुक्तिश्रमणविजयजी म.सा.**की पत्र द्वारा जिज्ञासा आने पर उसका समाधान प्रेषित किया गया, उनके पत्रांश इस प्रकार है-

जिज्ञासा :- जैनागम नवनीत, आगम निबंधमाला भाग-१ पुस्तक मिली है । परिचय वृत्तमांथी बे बात वांचतां आश्चर्य थयुं। निवृत्ति संलेखना तारीख अने संथारा तारीख । आ तारीख नक्की करवा पाछलनुं रहस्य शुं ? ते जणाववामां वांधो न होय तो जिज्ञासा पूर्ण करशो जी । उत्तर प्राप्त होने पर आया पहोंचपत्र-

समाधान की पहुँच :- तमारो पत्र समयसर मली गयो हतो । जीवन ना प्रत्येक पडाव पर तमे जे सावधानी सावचेतीपूर्वक आगल वधी रह्या छो ते एक आदर्श कही शकाय छे । शरीरनुं भेदज्ञान थया पछी आ सहज शक्य बने छे । तमे पहेलीवार आ रीते विस्तृतमां बधी विगत जणावी तेथी खूब आनंद थयो । मारा मननी उत्कंठा-जिज्ञासा संतोषाई गई । संथारा दीक्षा समये आवी पडनारी मानसिक विडंबनाओथी समाधि क्यांय पण खंडित न बने ते ज खूब महत्वनुं छे। तमाढ मनोबल दृढ ज नहि सुदृढ छे, एटले वांधो नहि आवे। आगम विषयक अढलक साहित्य तमारी कलमें लखायुं छे अे आनंदनी वात छे... । तमारी शुभ भावनानी अनुमोदना ।

-दः मुक्तिश्रमण विजय ।

प्रश्न-अपना भावि दीक्षा-संथारे का इस तरह प्रकाशन क्यों ?

उत्तर- मेरे इस प्रकाशन का अंतर्मन का भाव और उद्देश्य यही है कि प्रत्येक साधक हमेशा तीसरा मनोरथ भावपूर्वक रोज करे और मन में संथारे का निश्चित करता जावे तो उसे एक दिन अपने आयुष्य का अनुभव जरूर हो सकता है ।॥ **इति शुभम् सर्व साधकानाम् ॥**

अपनी बात

(स्वास्थ्य सुधार एवं प्रायश्चित्त)

आगम मनीषी मुनिराज श्री के विचित्र कर्मोदय से २०११ के ५ जनवरी को अचानक औपद्रविक पेट में तीव्र वेदना होने से एवं ६ महिनों में कोई उपचार नहीं लगने से तथा १५ किलो वजन घट जाने से, जिससे संयम के आवश्यक कार्य हेतु चलना आदि भी दु:शक्य हो जाने से १२ जुलाई २०११ को श्रावक जीवन स्वीकार करना पडा । पुन: ५ जनवरी २०१३ को १६ घंटे तक विचित्र उल्टीयें एवं दस्ते होकर उपद्रविक रोग पूर्ण शांत हो गया। दो महिने में कमजोरी भी कवर हो गई । धीरे-धीरे २०१४ जनवरी तक स्वास्थ्य एवं वजन पूर्ववत् हो जाने से एवं पूरी हिंमत आ जाने से आगम संबंधी प्रकाशन का कार्य जो अवशेष था उसे पूरा करते हुए अब आगे २०१६के जनवरी से प्रायश्चित्त रूप में (प्रायश्चित्त पूर्ण स्वस्थ होने पर ही किया जा सकता है इसलिये) एक वर्ष की निवृत्ति युक्त संलेखना तथा फरवरी २०१७में दीक्षा तथा संथारा ग्रहण कर आत्मशुद्धि एवं साधना आराधना का प्रावधान रखा है । संलेखना के एक वर्ष के काल में चार खंध पालन, बाहर गाँव जाने का त्याग, प्राय: विगय त्याग या आयंबिल उपवास आदि, मोबाइल त्याग आदि नियम स्वीकार । अंत में जिन संतों के पास जिस क्षेत्र में दीक्षा लेना होगा वहाँ वाहन द्वारा पहुँच कर पाँच उपवास के साथ दीक्षा संथारा ग्रहण किया जायेगा ।

व्याधि :- पेट में कालजे की थोडी सी जगह में हाईपावर अे.सी.डी.टी, सांस और हार्ट (धडकन) ये तीन रोग एक साथ थे, असह्य वेदना सप्टेम्बर-२०११ तक अर्थात् ९ महिना रही थी ।

निवेदक :

डी.एल.रामानुज, मो.९८९८० ३७९९६

जैनागम नवनीत एवं प्रश्नोत्तर सर्जक

आगम मनीषी श्री तिलोकचंदजी का परिचय

जन्म : १९-१२-४६

दीक्षा ग्रहण : १९-०४-६७

गच्छ त्याग : २२-११-८५

श्रावक जीवन स्वीकार : १२-०७-२०११

निवृत्ति-संलेखना : फरवरी २०१६ से

दीक्षा-संथारा : १९ फरवरी २०१७

दीक्षागुरु : श्रमण श्रेष्ठ पूज्यश्री समर्थमलजी म.सा. ।

निश्रागुरु : तपस्वीराज पूज्यश्री चम्पालालजी म.सा. (प्रथम शिष्य) ।

आगमज्ञान विकास सानिध्य : श्रुतधर पूज्यश्री प्रकाशचंद्रजी म.सा. ।

लेखन, संपादन, प्रकाशन कला विकास सानिध्य : पूज्यश्री कन्हैयालालजी म.सा. 'कमल' आबुपर्वत ।

बारह वर्षी अध्यापन प्रावधान की सफलता में उपकारक : (१) तत्त्वचिंतक सफल वक्ता मुनिश्री प्रकाशचंद्रजी म.सा.(अजरामर संध) (२) वाणीभूषण पूज्यश्री गिरीशचंद्रजी म.सा.(गोंडल संप्रदाय) ।

गुजराती भाषा में ३२ आगमों के विवेचन का संपादन-संचालन लाभ प्रदाता : तप सम्राट पूज्यश्री रतिलालजी म.सा. ।

आगम सेवा : चारों छेद सूत्रों का हिन्दी विवेचन लेखन (आगम प्रकाशन समिति ब्यावर से प्रकाशित) । ३२ आगमों का सारांश लेखन । चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग के ५ खंडो में संपादन सहयोग । गुणस्थानस्वरूप,ध्यान स्वरूप, १४ नियम,१२ व्रत का सरल समझाइस युक्त लेखन संपादन ।

गुजरात तथा अन्य जैन स्थानकवासी समुदायों के संत सतीजी को आगमज्ञान प्रदान । ३२ आगम के प्रश्नोत्तर लेखन संपादन (हिन्दी) । आगम सारांश का गुजराती में भाषांतर-संपादन एवं आगम प्रश्नोत्तर गुजराती मेंभाषांतर संपादन । जैनागम निबंधमाला भाग १ से ५ एवं जैन आगम परिचय हिन्दी और गुजराती में लेखन-संपादन ।

- लालचन्द जैन 'विशारद'